३८१३

श्री

विविधपूजासंग्रह.

भाग बीजो.

एमां

नवपदजीनी म्होटी पूजा वगेरे जूदी जूदी
उत्तम तेर पूजाओनो संग्रह करी, तेने
यथामति संशोधन करीने नवपदजी
ना मंमळआदिक चित्रोसहित.

श्रीमोहमयीपत्तनमध्यें

श्रावक. भीमसिंह माणकें

निर्णयसागर मुद्रायंत्रमां मुद्रित कराव्यो छे.

संवत् १९४५ सने १८८९.

अथ पूजानुक्रमणिका

॥ अथ ॥

॥ श्रीबृहन्नवपद पूजा प्रारंभः ॥



तत्र

॥ प्रथम अरिहंतपद पूजा प्रारभ्यते ॥

॥ दोहा ॥

॥ परम मंत्र प्रणमी करी, तास धरी उर ध्यान ॥
अरिहंतपद पूजा करो, निज निज शक्ति प्रमाण ॥ १ ॥

॥ काव्यं ॥ उपजातिवृत्तम् ॥ उप्पन्नसन्नाणमहो म याणं, सप्पाडिहेरासण संठियाणं ॥ सद्देसणा णंदिय सज्जणाणं, णमो णमो होउ सया जिणाणं ॥ १ ॥

॥ भुजंगप्रयातवृत्तम् ॥ नमोऽनंतसंतप्रमोदप्रदान, प्रधानाय भव्यात्मने भास्वताय ॥ थया जेहना ध्यानथी सौख्यभाजा, सदा सिद्धचक्राय श्रीपाल राजा ॥ १ ॥ कस्या कर्म दुर्मर्म चकचूर जेणें, भलां भव्य! नवपद ध्यानेन तेणें ॥ करी पूजना भव्य! भावें त्रिकालें, सदा वासियो आतमा तेण कालें ॥ ॥ २ ॥ जिके तीर्थंकर कर्म उदयें करीने, दिये देशना भव्यने हित धरीने ॥ सदा आठ महा पाडिहा

रें समेता, सुरेंद्रों नरेंद्रों स्तव्या ब्रह्मपुत्ता ॥ ३ ॥ कर्यां घातियां कर्म चारे अलग्गां, नवोपग्रही चार जे छे विलग्गां ॥ जगत् पंच कल्याणकें सौख्य पामे, नमो तेह तीर्थंकरा मोक्ष कामें ॥ ४ ॥

॥ ढाल ॥ देशी उल्लालानी ॥ तीर्थपति अरिहा नमुं, धर्म धुरंधर धीरो जी ॥ देशना अमृत वरसता, निजवीरज वड वीरो जी ॥ १ ॥ उल्लालो ॥ वर अखय निर्मल ज्ञानभासन, सर्वभाव प्रकाशता ॥ निजशुद्ध श्रद्धा आत्म भावें, चरण थिरता वासता ॥ जिन नाम कर्म प्रभाव अतिशय, प्रातिहारज शोभता ॥ जगजंतु करुणावंत भगवंत, भविक जनने थोभता ॥ २ ॥

॥ पूजा ॥ ढाल ॥ श्रीपालना रासनी देशी ॥ त्रीजे भव वर थानक तप करी, जेणें बांध्युं जिननाम ॥ चउसठ इंद्रें पूजित जे जिन, कीजें तास प्रणाम रे ॥ भविका! सिद्धचक्रपद वंदो, जिम चिरकालें नंदो रे ॥ भ० ॥ उपशम रसनो कंदो रे ॥ भ० ॥ रत्नत्रयीनो वृंदो रे ॥ भ० ॥ सेवे सुर नर इंदो रे ॥ भ० ॥ ॥ सि० ॥ १ ॥ ए आंकणी ॥ जेहने होय कल्याणक दिवसें, नरकें पण अजवालुं ॥ सकल अधिकगुण अतिशयधारी, ते जिन नमि अघ टालुं रे ॥ भ० ॥

॥ सि० ॥ २ ॥ जे तिहुनाण समग्ग उप्पन्ना, नाग करम क्षीण जाणी ॥ लेइ दीक्षा शिक्षा दिये जगने, ते नमियें जिन नाणी रे ॥ न० ॥ सि० ॥ ३ ॥ महागोप महा माहण कहियें, निर्यामक सथ्थवाह ॥ उपमा एहवी जेहने छाजे, ते जिन नमियें उत्साह रे ॥ न० ॥ ॥ सि० ॥ ४ ॥ आठ प्रातिहारज जसु छाजे, पैंतीस गुणयुत वाणी ॥ जे प्रतिबोध करे जगजनने, ते जिन नमियें प्राणी रे ॥ न० ॥ सि० ॥ ५ ॥

॥ ढाल ॥ अरिहंत पद ध्यातां थकां, दव्वहगुण पज्जाय रे ॥ भेद छेद करी आतमा, अरिहंत रूपी थाय रे ॥ १ ॥ वीर जिनेसर उपदिशे, सांभलजो चित्त लाई रे ॥ आतमध्यानें आतमा, ऋद्धि मिले सवि आई रे ॥ २ ॥ वी० ॥ ॥ अथ काव्यं ॥ द्रुतविलंबितवृत्तं ॥ विमल केवलभासनभास्करं, जगतिजंतुमहोदय कारणं ॥ जिनवरं बहुमानजलौघतः, शुचिमनाः स्नपयामि विशुद्धये ॥ १ ॥ अथ मंत्रः ॥ ॐह्रींश्रीं अर्हं परमात्मनेऽनंतानंतज्ञानशक्तये जन्मजरामृत्युनिवारणाय श्रीमदर्हते पंचामृतं, चंदनं, पुष्पं, धूपं, दीपं, अक्षतान्, नैवेद्यं, फलं, वस्त्रं, वासं यजामहे स्वाहा ॥ इति प्रथमश्री अरिहंतपदपूजा ॥ १ ॥

॥ अथ द्वितीय सिद्धपद पूजा प्रारंभः ॥

॥ दोहा ॥

॥ दूजी पूजा सिद्धकी, कीजें दिल खुसियाल ॥
अशुभ करम दूरें टले, फले मनोरथ माल ॥ १ ॥

॥ इंद्रवज्रावृत्तम् ॥ सिद्धाणमाणंद रमालयाणं, णमो णमोऽणंतचउक्कयाणं ॥ समग्ग कम्मक्खयकारयाणं, जम्मंजरा डुक्खनिवारयाणं ॥ १ ॥

भुजंगप्रयातवृत्तम् ॥ निजाभादिकर्माष्टकें क्षय करीने. जराजन्म मरणादि दूरें हरीने ॥ स्थिता सर्व लोकाग्र भागें विशुद्धा, चिदानंदरूपा स्वरूपें प्रसिद्धा ॥ १ ॥ निजानंदबोधादि युक्त प्रदेशा, निराबाधनानिर्वृता जे अलेशा ॥ निराकार साकार भावें महंता, भजो ते प्रमोदें सदा सिद्धसंता ॥ २ ॥ करी आठ कर्म क्षयें पार पाम्या, जरा जन्म मरणादि भय जेण वाम्या ॥ निरावरण जे आत्मरूपें प्रसिद्धा, थया पार पामी सदा सिद्ध बुद्धा ॥ ३ ॥ त्रिभागोनदेहावगाहात्मदेशा, रह्या ज्ञानमयजातवर्णादिलेशा ॥ सदानंद सौख्याश्रिता ज्योतिरूपा, अनाबाध अपुनर्भवादिस्वरूपा ॥ ४ ॥

॥ ढाल ॥ देशी भलाभलानी ॥ सकल करममल क्षय करी, पूरण शुद्ध स्वरूपो जी ॥ अव्याबाध प्रभु

तामयी, आतम संपतिभूपो जी ॥ १ ॥ उलालो ॥ जेह रूप आतम सहज संपति, शक्ति व्यक्तिपणे करी ॥ स्वद्रव्यक्षेत्र स्वकालभावें, गुण अनंता आदरी ॥ स्व स्वभाव गुणपर्याय परिणति, सिद्धिसाधन परभणी ॥ मुनिराज मानसहंस समवड, नमो सिद्धमहागुणी॥ ३॥

॥ पूजा ॥ ढाल ॥ श्रीपालना रासनी देशी ॥ समयपएसंतर अणफरसी, चरम तिभाग विशेष ॥ अवगाहन लही जे शिव पहोता, सिद्ध नमो ते अशेष रे ॥ भ० ॥ सि० ॥ ६ ॥ पूर्व प्रयोगनें गतिपरिणामें, बंधन छेद असंग ॥ समय एक ऊरधगति जेहनी, ते सिद्ध प्रणमो रंग रे ॥ भ० ॥ सि० ॥ ७ ॥ निर्मल सिद्ध शिलानी ऊपर, जोयण एक लोगंत ॥ सादि अनंत तिहां स्थिति जेहनी, ते सिद्ध प्रणमो संत रे ॥ भ० ॥ सि० ॥ ८ ॥ जाणे पण न सके कही पुरगुण, प्राकृत तिम गुण जास ॥ उपमा विण नाणी भवमांहे, ते सिद्ध दीयो उल्लास रे ॥ भ० ॥ सि० ॥ ॥ ए ॥ ज्योतिशुं ज्योति मिली जस अनुपम, विरमी सकल उपाधि ॥ आतमराम रमापति समरो, ते सिद्ध सहज समाधि रे ॥ भ० ॥ सि० ॥ १० ॥

॥ ढाल ॥ रूपातीत स्वभाव जे, केवल दंसणनाणी

रे ॥ ते ध्याता निज आतमा, होय सिद्ध गुण खाणी ॥ वी० ॥ ३ ॥ काव्यं ॥ वि मल० ॥ मंत्रः ॥ ॐ ह्रीं अ० ॥ प० ॥ ॥ सिद्धाय० ॥ पंचा० ॥ इति सिद्ध पदपूजा समाप्ता ॥ २ ॥

॥ अथ तृतीय आचार्यपद पूजा प्रारंभः ॥

॥ दोहा ॥ आचारिज पदतणी, पूजा करो विशेष ॥ मोह तिमिर दूरें हरे, सूजे भाव अशेष ॥ १ ॥

॥ काव्यं ॥ इंद्रवज्रावृत्तम् ॥ सूरीणदूरीकयकुग्गहाणं, णमो णमो सूरसमप्पहाणं ॥ सद्देसणादाण समायराणं, अखंमछत्तीसगुणायराणं ॥ १ ॥

॥ भुजंगप्रयातवृत्तम् ॥ नमुं सूरिराजा सदा तत्त्व ताजा, जिनेंद्रागममें प्रौढ साम्राज्यभाजा ॥ षडवर्गवर्गित गुणें शोभमाना, पंचाचारनें पालवे सावधाना ॥ ॥ १ ॥ जिके पंच आचार पाले सुनावें, अनित्यादि सद्भावना नित्य भावे ॥ जिनेंद्रागमें ज्ञानदानें सुरत्ना, बहु भव्यमें जे रहे अप्रमत्ता ॥ २ ॥ छतीसेगुणें दीप्यमाना गणेशा, सदा शासनाधारभूता सुलेशा ॥ बहुभव्यलोका सुमार्गे नयंता, हुओ सूरिमुख्या सदा तेजवंता ॥ ३ ॥ भविप्राणिने देशना देश कालें, सदा अप्रमत्ता यथा सूत्र आले ॥ जिके शासनाधार दिग्दंतिकल्पा, जगत्ते चिरंजीवजो शुद्धजल्पा ॥ ४ ॥

॥ ढाल ॥ उलालानी देशी ॥ आचारिज मुनिपति गुणी, गुणछत्रीशी धामो जी ॥ चिदानंदरस स्वादता, परजावें निःकामो जी ॥ १ ॥ उलालो ॥ निःकाम निर्मल शुद्ध चिद्घन, साध्यनिज निरधारथी ॥ निज ज्ञान दर्शन चरण वीरज, साधनाव्यापारथी ॥ जीव बोधक तत्त्वशोधक, सयलगुण संपति धरा ॥ संवरसमाधी गतउपाधी, डुविध तपगुण आग र ॥२॥

॥ पूजा ढाल ॥ श्रीपालना रासनी देशी ॥ पंच आचार जे सूधा पाले, मारग जांखे साचो ॥ ते आचारिज नमियें तेहशुं, प्रेम करीने जाचो रे ॥ जवि०॥ ॥ सि० ॥ ११ ॥ वर छत्रीश गुणें करी सोहे, युगप्रधान जग मोहे ॥ जग बोहे न रहे खिण कोहे, सूरि नमुं ते जोहे रे ॥ ज० ॥ सि० ॥ १२ ॥ नित अप्रमत्त धर्म उवएसे, नहिं विकथा न कषाय ॥ जेहने ते आचारिज नमियें, अकलुष अमल अमाय रे ॥ ज० ॥सि०॥१३॥ जे दिये सारण वारण चोयण, पडिचोयण वली जनने ॥ पटधारी गछ थंज आचारिज, ते मान्या मुनि मनने रे ॥ज०॥सि० ॥ १४ ॥ अछमियें जिन सूरज केवल, चंदें जे जगदीवो ॥ जुवनपदारथ गटन पटु ते, आचारय चिरंजीवो रे ॥ज०॥सि०॥१५॥

॥ ढाल ॥ ध्यांता आचारिज जला, महामंत्र शुन ध्यानी रे ॥ पंच प्रस्थानें आतमा, आचारिज होय प्राणी रे ॥ वी० ॥ ४ ॥ काव्यं ॥ विमल के०॥ मंत्रः ॥ ॐ ह्रीं अर्हं पर०॥आचार्या०॥ पंचा० ॥यजा० ॥ स्वा० ॥ इति तृतीय आचार्यपद पूजा समाप्ता ॥ ३॥

॥ अथ चतुर्थ उपाध्याय पद पूजा प्रारंभः ॥

॥ दोहा ॥ गुण अनेक जग जेहना, सुंदरशोभित गात्र ॥ नवयाया पद अरचियें, अनुभवरसनो पात्र ॥ १ ॥

॥ काव्यं॥इंद्रवज्रावृत्तम्, सुत्तब विछारणतप्पराणं ॥ णमो णमो वायगकुंजराणं ॥ गणस्स संधारण सायराणं, सव्वप्पणावज्जिय मच्छराणं ॥ १ ॥

॥ भुजंगप्रयातवृत्तम् ॥ महासूत्रसिद्धांत शुद्ध करीने, पढावे सुशिष्या अनुग्रह धरीने ॥ करे पूजना लोक मध्यें त्वदीया, स्फुरंतीदृशी जास शक्ति स्वकीया ॥१॥ गण सारशुद्धं सुहर्षे करंता, मुनिवर्गमध्यें प्रमादो हरंता ॥ पचीशे गुणें युक्तदेहा सुधुर्या, सदा वंदीयें ते उपाध्याय पूर्या ॥ २ ॥ नहीं सूरि पण सूरिगुणने सुहाया, नमुं वाचका त्यक्तमदमोहमाया ॥ वलि द्वादशांगादि सूत्रार्थ दानें, जिके सावधानें निरुद्धाभिमानें ॥ ३ ॥ धरे पंचने वर्गवर्गित गुणौघा, प्रवादि द्वि

पोछेदने तुल्यसिंघा ॥ गुणी गछसंधारणे स्तंजनूता, उपाध्याय ते वंदियें चित् प्रजूता ॥ ४ ॥

॥ ढाल ॥ उलालानी देशी ॥ खंतिजुआ मुनि जुआ, अज्जव मद्दव जुत्ता जी ॥ सच्चं सोयं अकिंचणा, तव संजम गुणरत्ता जी ॥ १ ॥ उलालो ॥ जे रम्या ब्रह्म सुगुत्ति गुत्ता, समिति समिता श्रुतधरा ॥ स्याद्वादवादें तत्त्ववादक, आत्मपर विजंजनकरा ॥ नवजीरु साधंन धीरशासन, वहन धोरी मुनिवरा ॥ सिद्धांत वायण दान समरथ, नमो पाठक पदधरा ॥ २ ॥

॥ पूजा ॥ ढाल ॥ श्रीपालना रासनी देशी ॥ द्वादश अंग सज्जाय करे जे, पारग धारग तास ॥ सूत्र अर्थ विस्तार रसिक ते, नमो उवज्ञाय उल्लास रे ॥ ॥ ज० ॥ सि० ॥ १६ ॥ अर्थ सूत्रने दान विजागें, आचारिज उवज्ञाय ॥ जव त्रण्यें जे लहे शिवसंपद, नमियें ते सुपसाय रे ॥ ज० ॥ सि० ॥ १७ ॥ मूरख शिष्य निपाई जे प्रजु, पहाणने पल्लव आणे ॥ ते उवज्ञाय सकलजन पूजित, सूत्र अरथ सवि जाणे रे ॥ ज० ॥ सि० ॥ १७ ॥ राज कुमर सरिखा गणचिंतक, आचारिज पद योग ॥ जे उवज्ञाय सदा ते नमतां, नांवे जवजय सोग रे ॥ ज० ॥ सि० ॥ १ए ॥ बाव

ना चंदन रस समंवयणें, अहिततताप सवि टा ॥ ते उवझाय नमीजें जे वली, जिन शासन अजु ले रे ॥ ज० सि० ॥ १० ॥

॥ ढाल ॥ तपसज्झायें रत सदा, द्वादश अंगनो ध्याता रे ॥ उपाध्याय ते आतमा, जगबंधव जग भ्राता रे ॥ वी० ॥ ५ ॥ काव्यं ॥ विमल० ॥ मंत्र ॥ ॐह्रींअर्हं परमा०॥उप० याया० पंचा० यजा० ॥४॥

॥ अथ पंचम मुनिपद पूजा प्रारंभः ॥

॥दोहा॥ मोक्ष मारग साधन भणी, सावधान थया जेह ॥ ते मुनिवरपद वंदतां, निर्मल थाये देह ॥१॥

॥ काव्यं ॥ इंद्रवज्रावृत्तम् ॥ साहूण संसाहिअ संजमाणं, नमो नमो सुद्ध दयादमाणं ॥ तिगुत्तिगुत्ता णसमाहियाणं, मुणीणमाणंदपयट्ठियाणं ॥ १ ॥

॥ भुजंगप्रयातवृत्तम् ॥ जिके दर्शनज्ञान चारित्र रत्नें,करी मोक्ष साधे प्रधान प्रयत्नें ॥ सुमत्ती गुपत्ती धरे सावधाना, शुभाचार पाले हरे मोहमाना ॥ १॥ त्रि वर्जे विकथा प्रमदादिदोषा,जितेंद्रियपणे जे महाज्ञान कोशा ॥ शुभध्यान ध्यावे गणोंघें समिद्धा, नमो ते स दा सर्व साधु प्रसिद्धा ॥२॥ करे सेवना सूरिवायग गणी नी, करुं वर्णना तेहनी शी मुणिनी ॥ समेता सदा पं

चसमितें त्रिगुप्ता, त्रिगुप्तें नही काम जोगेषु लिप्ता ॥ ॥३॥ वली बाह्य अभ्यंतर ग्रंथि टाली, होये मुक्तिनें योग्य चारित्र पाली ॥ शुभाष्टांग योगें रमे चित्त वाली, नमुं साधने तेह निज पाप टाली ॥ ४ ॥

॥ ढाल ॥ उलालानी देशी ॥ सकल विषय विष वारनें, निःकामी निःसंगी जी ॥ भवदवताप समावता, आतमसाधन रंगी जी ॥ १ ॥ उलालो ॥ जे रम्या शुद्ध स्वरूप रमणें, देह निर्मम निर्मदा ॥ काउस्सग्ग मुद्रा धीर आसन, ध्यान अभ्यासी सदा ॥ तप तेज दीपे कर्म झीपे, नैव छीपे परभणी ॥ मुनिराज करुणासिंधु त्रिभुवन, बंधु प्रणमुं हित भणी ॥२॥

॥ पूजा ॥ ढाल ॥ श्रीपालना रासनी देशी ॥

॥ जिम तरु फूलें भमरो बेसे, पीडा तस न उपावे ॥ लइ रसने आतम संतोषे, तिम मुनि गोचरी आवे रे ॥ भ० ॥ सि० ॥ २१ ॥ पंचेंद्रीने कषाय निरुंधे, षट कायक प्रतिपाल ॥ संयम सतर प्रकार आराधे, वंदूं तेह दयाल रे ॥ भ० ॥ सि० ॥ २२ ॥ अढार सहस शीलांगना धोरी, अचल आचार चरित्र ॥ मुनि महंत जयणायुत वांदी, कीजें जनम पवित्र रे ॥ भ० ॥ सि० ॥ २३ ॥ नवविध ब्रह्मगुपति

जे पाळे, बारसविह तप सूरा ॥ एहवा मुनि नमियें जो प्रगटे, पूरवपुण्य अंकूरा रे ॥ न० ॥ सि० ॥ २४ ॥ सोनानी परें परीक्षा दीसे, दिन दिन चढते वाने ॥ संजमतप करता मुनि नमियें, देश काल अनुमानें रे ॥ न० ॥ सि० ॥ २५ ॥

॥ ढाल ॥ अप्रमत्त जे नित रहे, नवि हरखे नवि साचे रे ॥ साधु सुधा ते आतमा, शुं मूंडे शुं लोचे रे ॥वी०॥८॥ काव्यं ॥विमल०॥ मंत्रः॥ ॐ ह्रीं अर्हं पर मा०॥ साधुभ्यो०॥ पंचा० १०॥ इति मुनिपद पूजा ॥

॥ अथ षष्ठ सम्यक्त्व दर्शन पद पूजा प्रारंभः ॥

॥दोहा॥ जिनवर भाषित शुद्धनय, तत्त्वतणी परतीत ॥ ते सम्यक दरसन सदा, आदरियें शुभरीत ॥१॥

॥ काव्यं ॥ इंद्रवज्रावृत्तम् ॥ जिणुत्ततत्ते रुइ लक्खणस्स, नमो नमो निम्मलदंसणस्स ॥ मिच्छत्तनासाइसमुग्गमस्स, मूलस्स सद्धम्ममहादुमस्स ॥ १ ॥

॥भुजंगप्रयातवृत्तम्॥ अनंतानुबंधी कषायादिप्रकारें, महामोह मिथ्यात्वने भेद वारे ॥ इगध्यादि भेदें करी वर्णवीजें, सडसठि भेदें वली जे भणीजें ॥ १ ॥ जिनेंद्रोक्ततत्त्वार्थ श्रद्धानरूपो, गुणासर्वमध्ये प्रवर्त्ते अनूपो ॥ विना जेणनाणं चरित्रं न शुद्धं; सुहं दंसणं तं

नमामो विशुद्धं ॥ २ ॥ विपर्यासहो वासना रूप मिथ्या, टले जे अनादि अछे जे कुपथ्या ॥ जिनोक्तें होइ सहजथी शुद्धध्यानं, कहियें दर्शनं तह परमं निधानं ॥ ३ ॥ विना जेहथी ज्ञानमज्ञान पं, चरित्रं विचित्रं नवारण्यकूपं ॥ प्रकृति सातने उपशमे क्षय ते होवे, तिहां आपरूपें सदा आप जोवे ॥ ४ ॥

॥ ढाल ॥ उलालानी देशी ॥ सम्यग्दर्शन गुण नमो, तत्त्व प्रतीत स्वरूपो जी ॥ जसु निरधार स्वन्नाव छे, चेतनगुण जे अरूपो जी ॥ १ ॥ उलालो ॥ जे अनुप श्रद्धा धर्म प्रगटे, सयल परईहा टले ॥ निज शुद्धसत्ता नाव प्रगटे, अनुनव करुणा उबले ॥ बहु मान परिणति वस्तुतत्त्वें, अहव तसु कारण पणे ॥ निज साध्यदृष्टें सर्व करणी, तत्त्वता संपति गणे ॥२॥

॥ पूजा ॥ ढाल ॥ श्रीपालना रासनी देशी ॥ शुद्ध देव गुरुधर्म परीक्षा,सद्दहणा परिणाम ॥ जेह पामीजें तेह नमीजें, सम्यक्दर्शन नाम रे ॥ न० ॥ सि० ॥ ॥ २६ ॥ मलउपशम क्षय उपशम क्षयथी, जे होय त्रिविध अनंग ॥ सम्यक्दर्शन तेह नमीजें, जिनधर्मैं दृढरंग रे ॥ न० ॥ ॥ सि० ॥ २७ ॥ पंच वार उपश मिय लहीजें, क्षय उपशमिय असंख ॥ एक वार क्षा

यिक ते समकित, दर्शन नमियें असंख रे ॥ न० ॥
॥ सि०॥ २८ ॥ जे विण नाण प्रमाण न होवे, चारि
त्रतरु नवि फलियो ॥ सुख निर्वाण न जे विण लही
यें, समकित दर्शन बलियो रे ॥ न० ॥ सि० ॥ २९॥
सडसठ बोलें जे अलंकरीउं, ज्ञान चारित्रनुं मूल ॥
समकित दर्शन ते नित प्रणमुं, शिव पंथनुं अनुकूल
रे ॥ न० ॥ सि० ॥ ३० ॥

॥ ढाल ॥ समसंवेगादिक गुणा, क्षय उपशम जे
आवे रे ॥ दर्शन तेहिज आतमा, शुं होय नाम ध
राये रे ॥ वीर० ॥७॥ का०॥ विम० ॥ मंत्रः॥ ॐह्रीं
अर्हं पर०॥ सम्यक् दर्शनाय० ॥ पंचा०॥ इति ॥६॥

॥ अथ सप्तम सम्यक् ज्ञानपद पूजा प्रारंभः ॥

॥दोहा॥ सप्तमपद श्रीज्ञाननो, सिद्धचक्र तपमांहे॥
आराधीजें शुभमनें, दिनदिन अधिक उत्साहें ॥ १ ॥

॥ काव्यं ॥ इंद्रवज्रावृत्तम् ॥ अन्नाणसंमोहतमोह
रस्स, नमो नमो नाणदिवायरस्स ॥ पंचप्पयारस्सुव
गारगस्स, सत्ताण सव्वछपयासगस्स ॥ १ ॥

॥ भुजंगप्रयातवृत्तम् ॥ हुवे जेहथी सर्व अज्ञान
रोधो, जिनाधीश्वर प्रोक्त अर्थावबोधो ॥ मतीआदि
पंचप्रकार प्रसिद्धो, जगद्भासने सर्व देवाविरुद्धो ॥

यदीय प्रनावें सुनक्षं अनक्षं, सुपेयं अपेयं सुकृत्यं अकृत्यं ॥ जिणें जाणीयें लोक मध्यें सुनाणं, सदा ते विशुद्धं तदेव प्रमाणं ॥ २ ॥ होये जेहथी ज्ञान शुद्ध प्रबोधें, यथा वर्ण नासे विचित्रावबोधें ॥ तेणें जाणियें वस्तु षट् इव्य नावा, न हुवे वितथा (वांद) निजेछा स्वनावा ॥ ३ ॥ होइ पंचमत्यादि सुज्ञाननेदें, गुरु पासथी योग्यता तेह वेदे ॥ वली ज्ञेय हेया उपादेय रूपें, लहे चित्तमां जेम ध्याने प्रदीपें ॥ ४ ॥

॥ ढाल ॥ उलालानी देशी ॥ नव्य! नमो गुण ज्ञानने, स्वपर प्रकाशक नावें जी ॥ परजय धर्मानंतता, नेदानेद स्वनावें जी ॥ १ ॥ उलालो ॥ जे मुख्य परिणति सकल ज्ञायक, बोध नाव विलछना ॥ मतिआदि पंच प्रकार निर्मल, सिद्ध साधन लछना ॥ स्याद्वादसंगी तत्त्वरंगी, प्रथम नेदानेदता ॥ सविकल्प ने अविकल्प वस्तु, सकल संशय छेदता ॥ २ ॥

॥ पूजा ॥ ढाल ॥ श्रीपालना रासनी देशी ॥ नक्ष अनक्ष न जे विण लहियें, पेय अपेय विचार ॥ कृत्य अकृत्य न जे विण लहियें, ज्ञान ते सकल आधार रे ॥ नं० ॥ सि० ॥ ३१ ॥ प्रथम ज्ञान ने पछी अहिंसा, श्रीसिद्धांतें नांख्युं ॥ ज्ञानने वंदो ज्ञान म निंदो,

ज्ञानीयें शिवराज वंचाव्युं रे ॥ ज० ॥ ॥ सि० ॥ ३२ ॥ सकल क्रियानुं मूल ते श्रद्धा, तेहनुं मूल जे कहियें । तेह ज्ञान नित नित वंदीजें, ते विण कहो किम रहि यें रे ॥ ज० ॥ सि० ॥ ३३ ॥ पांच ज्ञानमांहि जेह सदागम, स्वपर प्रकाशक तेह । दीपक परें त्रिभुवन उपगारी, वलि जिम रवि शशी मेह रे ॥ ज० ॥ सि० ॥ ॥ ३४ ॥ लोक ऊर्ध्व अध तिर्यग ज्योतिष, वैमानि कने सिद्धि ॥ लोक अलोक प्रगट सवि जेहथी, ते ज्ञानें मुज शुद्धि रे ॥ ज० ॥ सि० ॥ ३५ ॥

॥ ढाल ॥ ज्ञानावर्णि जे कर्म छे, क्षय उपशमतसु थाय रे ॥ तो हुवे एहिज आतमा, ज्ञानअबोधता जाय रे ॥ वी० ॥ ७ ॥ काव्यं ॥ विमल० ॥ ॐ ह्रीं अर्हं परमा०॥ सम्यक् ज्ञानाय० पंचा० य० इति॥ ७॥

॥ अथाष्टम चारित्र पदपूजा प्रारंभः ॥

॥ दोहा ॥ अष्टम पद चारित्रने, पूजो धरी उमेद ॥ पूजत अनुभव रस मिले, पातक होय उछेद ॥ १ ॥

॥ काव्यं ॥ इंद्रवज्रावृत्तम् ॥ आराहिआखंडिअस क्किअस्स, नमो नमो संजम वीरिअस्स ॥ सब्भावणा संगविवज्जिअस्स, निव्वाणदाणा इसमुज्ज यस्स ॥ १ ॥

॥ भुजंगप्रयातवृत्तम् ॥ फले जेह संपूर्णथी तंत्त

कालं, गुणाणांपि सर्वात्मनावें विशालं ॥ जिणें आद ऱ्यो जे प्रयत्नें करीने, दियो लोकने जे अनुग्रह धरीने ॥ १ ॥ हुवे जेहथी रंक लोकोपि पूज्यो, गुण श्रेणि थी दीपतो जेम सूर्जो ॥ स्वकीये सुलेदें करी जे वि चित्रं, जयः ते सदा लोकमध्यें चरित्रं ॥ २ ॥ वली ज्ञानफल चरण धरियें सुरंगें, निराशंसभा द्वारबाध प्रसंगें ॥ नवांजोधि संतारणे यानतुल्यं, धरुं तेह चा रित्र अप्राप्तमूल्यं ॥ ३ ॥ होये जास महिमाथकी रंक राजा.वली द्वादशांगी लणी.होय ताजा॥वली पाप रूपोपि निःपाप थावे,थई सिद्ध ते कर्मने पार जावे ॥४॥

॥ ढाल ॥ उलालानी देशी ॥ चारित्रगुण वली वली नमो, तत्त्वरमण जसु मूलो जी ॥ पररमणीय पणुं टले, सकलसिद्धि अनुकूलो जी ॥ १ ॥ उलालो ॥ प्रतिकूल आश्रव त्याग संयम, तत्त्वथिरता दममइ ॥ शुचि परम खंती मुनि दशमपद, पंच संवर उपचइ ॥ सामायिकादिक लेद धर्मे,यथाख्यातें पूर्णता ॥ अकषा य अकलुष अमल उज्ज्वल,काम कश्मल चूर्णता ॥२॥

॥पूजा ॥ ढाल ॥ श्रीपालना रासनी देशी ॥ देश विरति नें सरव विरति जे, गृही यति ने अजिराम ॥ ते चारित्र जगत जयवंतुं, कीजें तास प्रणाम रे ॥

॥ ज० ॥ सि० ॥ ३६ ॥ तृणपरें जे षट खंम सुख ठंमी, चक्रवर्त्ति पण वरीयो ॥ ते चारित्र अखय सुख कारण, ते में मनमांहे धरीयो रे ॥ ज० ॥ सि० ॥ ॥ ३७ ॥ हुआ रंक पण जेह आदरी, पूजित इंद नरिंदें ॥ अशरण शरण चरण ते वंदूं, पूखुं ज्ञान आनंदें रे ॥ ज० ॥ सि० ॥ ३८ ॥ बार मास पर्यायें जेहनें, अनुत्तर सुख अतिक्रमियें ॥ शुक्ल शुक्ल अभिजात्य ते उपरि, ते चारित्रनें नमियें रे ॥ ज० ॥ सि० ॥ ॥ ३९ ॥ चय ते आठ करमनो संचय, रिक्त करे जे तेह ॥ चारित्र नाम निरुत्तें जाख्युं, ते वंदूं गुणगेह रे ॥ ज० ॥ ४० ॥

॥ ढाल ॥ जाण चारित्र ते आतमा, निज स्वजावमां रमतो रे ॥ लेश्या शुद्ध अलंकस्यो, मोहवनें नवि जमतो रे ॥ वी० ॥ ९ ॥ काव्यं ॥ विमल० ॥ मंत्रः ॥ ॐ ह्रीँ अर्हं परमा० ॥ चारित्रा० पं० ॥ य० ॥ इति ॥

॥ अथ नवम तपपद पूजा प्रारंजः ॥

॥ दोहा ॥ कर्म काष्ठप्रति जालवा, परतिख अगनि समान ॥ तपपद पूजो जवि सदा, निर्मल धरियें ध्यान ॥ १ ॥

॥ काव्यं ॥ इंद्रवज्रावृत्तम् ॥ कम्मद्दुमुम्मूलण कुंजरस्स, नमो नमो तिव्वतवोजरस्स ॥ अणेगलद्धीणनिबंधणस्स, दुसज्झअत्थाणय साहणस्स ॥ १ ॥

॥ मालिनीवृत्तम् ॥ इय नव पय सिद्धं, लद्धि विज्जा समिद्धं ॥ पयडियसुरवग्गं, ह्रींतिरेहासमग्गं ॥ दिसिवइ सुरसारं, खोणि पीढावयारं ॥ तिजय विजय चक्कं, सिद्धचक्कं नमामि ॥ १ ॥

॥ भुजंगप्रयातवृत्तम् ॥ विधें जे कर्यो आतमा वंज्ञ वाले, घणा कालनो कर्मराशि प्रजाले ॥ अनेकासुलद्धि लहे यत्प्रभावें, क्षमायुक्त ए साधु महानंद पावे ॥ ॥ १ ॥ वली बाह्य अभ्यंतरें भेद भिन्नं, जिनेंद्रागमें वर्णव्युं जे अछिन्नं ॥ अनासं स्वभावें तिलोकें सुनंद्यं, नमुं ते प्रमोदें तपःपदमनिद्यं ॥ २ ॥ इति जिनवर वंद्यं भक्तितोयस्तुवंति, परमपदनिधानं मानसे संस्मरंति ॥ परभवइह वा श्रीपालवन्मानवानां, प्रभवति किल तेषां चारुकल्याणलक्ष्मीः ॥ ३ ॥ त्रिकालिक पणे कर्म कषाय टाले, निकाचित पणे बांधियां तेह बाले ॥ कह्युं तेह तप बाह्य अंतर दु भेदें, क्षमायुक्त निर्हेतु दुर्ध्यान छेदे ॥ ४ ॥ होये जास महिमाथकी लब्धि सिद्धि, अवांछकपणे कर्म आवरणशुद्धि ॥ तपो तेह तप जे महानंद हेतें, होये सिद्धि सीमंतिनी जिम संकेतें ॥ ५ ॥ इस्या नवपद ध्यानने जेह ध्यावे, सदानंद चिद्रूपता तेह पावे ॥ वली ज्ञान विम

त्नादि गुणरत्नधामा, नमुं ते सदा सिद्धचक्र प्रधाना ॥ ८॥

॥ मालिनीवृत्तम् ॥ इम नवपद ध्यावे, पर्म आनंद पावे, नवजव शिव जावे, देव नरजव पावे ॥ ज्ञान विमल गुण गावे, सिद्धचक्र प्रजावें, सवि दुरित समावे, विश्व जयकार पावे ॥ १ ॥

॥ ढाल ॥ उलालानी देशी ॥ इबारोधन तप नमो, बाह्य अभिंतर नेदें जी ॥ आतमसत्ता एकता, पर परिणति उबेदे जी ॥ १ ॥ उलालो ॥ उबेद कर्म अनादि संतति, जेह सिद्धपणुं वरे ॥ योगसंग निद्दा हार टाली, नाव अक्रियता करे ॥ अंतर मुहूरत तत्त्व साधे, सर्व संवरता करी ॥ निज आत्मसत्ता प्रगट नावें, करो तप गुण आदरी ॥ २ ॥

॥ ढाल ॥ इम नवपद गुणमंफलं, चउ निरेकेप प्रमाणें जी ॥ सात नयें जे आदरे, सम्यग्ज्ञानें जाणे जी ॥ ३ ॥ उलालो ॥ निर्धारसेंती गुणे गुणणों, करे जे बहु मान ए ॥ तसु करण ईहा तत्त्व रमणें, थाय निर्मल ध्यान ए ॥ इम शुद्धसत्ता नल्यो चेतन, सकल सिद्धी अनुसरे ॥ अक्षय अनंत महंत चिद्घन, परम आनंदता वरे ॥ ४ ॥

॥ कलश ॥ इय सयल सुखकर गुणपुरंदर, सिद्ध

चक्र पदावली ॥ सवि लब्धि विद्यासिद्धिमंदर, नविक पूजो मन रली ॥ उवज्झायवर श्रीराजसागर, ज्ञान धर्म सुराजता ॥ गुरु दीपचंद सुचरण सेवक, देवचंद सुशोनता ॥ १ ॥ इति कलश ॥

॥ पूजा ॥ ढाल ॥ श्रीपालना रासनी देशी ॥ जाणंतां त्रिहुं ज्ञानें संयुत, ते नवमुगति जिणंद ॥ जेह आदरे कर्म खपेवा, ते तप शिवतरु कंद रे ॥ न० ॥ ॥ सि० ॥ ४१ ॥ कर्म निकाचित पण खय जाई, क्षमा सहित जे करता ॥ ते तप नमियें जेह दीपावे, जिन शासन उजमंता रे ॥ न० ॥ सि०॥४२॥ आमोसही पमुहा बहु लब्धि, होवे जास प्रनावें ॥ अष्ट महासिद्धि नव निधि प्रगटे, नमियें ते तप नावें रे ॥ न०॥ सि० ॥ ४३ ॥ फल शिवसुख महोटुं सुर नरवर, संपति जे हनुं फूल ॥ ते तप सुरतरु सरिखुं वंदूं, शम मकरंद अमूल रे ॥ न० ॥ सि० ॥ ४४ ॥ सर्व मंगल मांहि पहेलुं मंगल, वरणवियुं जे ग्रंथें ॥ ते तप पद त्रिकरण नित नमीयें, वर सहाय शिव पंथें रे ॥ न० ॥ ॥ सि०॥४५॥ इम नवपद थुणतो तिहां लीनो, हुउ तन्मय श्रीपाल ॥ सुजस विलास छे चोथे खंमें, एह इग्यारमी ढाल रे ॥ न० ॥ सि० ॥ ४६ ॥

॥ ढाल ॥ इछारोधें संवरी, परिणति समता योगें रे ॥ तप ते एहिज आतमा, वर्ते निजगुण जोगें रे ॥ ॥ वी० ॥ १० ॥ आगम नोआगम तणो, जाव ते जाणो साचो रे ॥ आतम जावें थिर हुवो, परजावें मत राचो रे ॥ वी० ॥ ११ ॥ अष्ट सकल समृद्धिनी, घटमांहि ऋद्धि दाखी रे ॥ तिम नवपद ऋद्धि जाण जो. आतमराम छे साखी रे ॥ वी० ॥ १२ ॥ योग असंख्य छे जिन कह्या, नव पद मुख्य ते जाणों रे ॥ एह तणे अवलंबनें, आतम ध्यान प्रमाणो रे ॥ ॥ वी० ॥ १३ ॥ ढाल बारमी ए हवी, चोथे खंमें पूरी रे ॥ वाणी वाचक जस तणी, कोइ नयें न अधूरी रे ॥ वी० ॥ १४ ॥

॥ काव्यं ॥ विमल०॥१॥ मंत्रः ॥ ॐह्रीं अर्हं परमा० ॥ पंचा० ॥ तपसे० ॥ यजा० ॥ स्वाहा ॥ ए ॥

॥ स्नात्र करतां जगतगुरु शरीरें, सकल देवें विमल कलश नीरें ॥ आपणा कर्ममल दूर कीधा, तेणें ते विबुध ग्रंथें प्रसिद्धा ॥ १ ॥ हर्ष धरि अप्सरावृंद आवे, स्नात्र करि एम आशीष पावे ॥ जिहां लगें सुर गिरि जंबुदीवो, अम तणा नाथ देवाधिदेवो ॥ २ ॥

॥ इति बृहन्नव पद पूजा संपूर्णा ॥

॥ अथ ॥

॥ श्रीदेवचंदजीकृत स्नात्रपूजा प्रारंभः ॥



॥ पांखडी गाथा ॥ ढाल पहेली ॥

॥ दोहा ॥ चउत्तीसे अतिसय जुउ, वचनातिसय जुत्त॥ सो परमेसर देखि भवि, सिंघासण संपत्त ॥ १॥ ॥ ढाल ॥ सिंघासण बेठा जग भाण, देखी भविक जन गुणमणिखाण ॥ जे दीठे तुझ निरमल नाण, लहियें परम महोदय ठाण ॥ कुसुमांजलि मेलो आदिजिणंदा; तोरां चरणकमल सेवे चोसठइंदा ॥ कु० ॥ १ ॥ चोवीश वैरागी, चोवीश सोभागी, चोवीश जिणंदा ॥ कु० ॥ एम कही प्रभुना चरणे पूजा करीएं॥गाथा॥ जो निय गुण पज्जव रम्यो, तसु अनुभव एगंत ॥ सुह पुग्गल आरोपतां, जो तसु रंग भिरत्त ॥ २ ॥ ढाल ॥ जो निज आतमगुण आणंदी, पुग्गल संगें जेह अफंदी ॥ जे परमेसर निजपद लीन, पूजो प्रणमो भव्य अदीन ॥ कुसुमांजलि मेलो शांति जिणंदा॥ तो० ॥ कु० ॥ २ ॥ एम कही प्रभुना जानुयें पूजा करीयें॥ गाथा ॥ निम्मल नाणपयास करं, निम्मल गुण संपन्न ॥ निम्मल ध

म्मोवएसकर, सो परमप्पा धन्न ॥३॥ ढाल ॥ लोकालो क प्रकाशक नाणी, नविजन तारण जेहनी वाणी ॥ प रमानंद तणी नीसाणी, तसु नगतें मुफ मति ठहरा णी ॥ कुसुमांजलि मेलो नेम जिणंदा ॥तो०॥कु०॥३॥ एम कही प्रनुना बे हाथें पूजा करीयें ॥ गाथा ॥ जे सिद्धा सिद्धंति जे, सिद्धंसंति अणंतं ॥ जसु आलं बन ठविय मण, सो सेवो अरिहंत ॥४॥ ढाल ॥ शिव सुख कारण जेह त्रिकालें, सम परिणामें जगत निहा ले ॥ उत्तम साधन मार्ग देखाडे, इंद्रादिक जसु चर ण पखाले ॥ कुसुमांजलि मेलो पास जिणंदा ॥तो०॥ ॥ ४ ॥ कु० ॥ एम कही प्रनुना खंनाएं पूजा करीयें ॥गाथा॥ समदिठी देस जय, साहु साहुणी सार ॥ आ चारिज उवफाय मुणि, जो निम्मल आधार ॥५॥ढाल॥ चउविह संघे जे मन धार्युं, मोक्षतणुं कारण निरधा र्युं ॥ विविह कुसुमवर जाति गहेवी, तसु चरणे प्रणंमं त ठवेवी ॥५॥ कुसुमांजलि मेलो वीरजिणंदा ॥तो०॥ए म कही प्रनुनें मस्तकें पूजा करीएं ॥इति पांखडीगाथा ॥

॥ वस्तुछंद ॥ सयल जिनवर सयल जिनवर, नमि य मनरंग ॥ कल्याणक विहि संठविय, करि सुधम्म सुप वित्त सुंदर ॥ सय इगसित्तरि तित्थंकर, इग समय वि

हरंति महीयल ॥ चवण समय इगवीस जिणं, जम्म-
समय इगवीस ॥ नत्तिय नावें पूजीया, करो संघ
सुजगीस ॥ १ ॥

॥ ढाल बीजी ॥ एक दिन अचिरा हुलरावती ॥ए देशी॥

॥ नव त्रीजे समकित गुण रम्या, जिन नक्ति प्रमुख
गुण परिणम्या ॥ तजि इंडियसुख आशंसना, करी स्था
नक वीशनी सेवना ॥ १ ॥ अति राग प्रशस्त प्रनाव
ता, मन नावना एहवी नावता ॥ सवि जीव करूं शा
सन रसी, इसी नाव दया मन उल्लसी ॥ २ ॥ लही
परिणाम एहवुं नलुं, निपजावी जिनपद निर्मलुं ॥
आयुबंध विचें एक नव करी, श्रद्धा संवेग ते थिर
धरी ॥ ३ ॥ त्यांथी चविय लहे नर नव उदार, नरतें
तेम ऐरवतेंज सार ॥ महाविदेहें विजयें वर प्रधान,
मध्यखंमें अवतरे जिन निधान ॥ ४ ॥

॥ अथ सुपनानी ढाल त्रीजी ॥

॥ पुण्यें सुपनह देखे, मनमांहे हरष विशेषे॥गजवर
उज्ज्वल सुंदर, निर्मल वृषन मनोहर ॥ १ ॥ निर्नय
केसरी सिंह, लक्ष्मी अतिहि अबीह ॥ अनुपम फूलनी
माल, निर्मल शशि सुकुमाल ॥ २ ॥ तेज तरणी अति
दीपे, इंद्रध्वजा जग जींपे ॥ पूरण कलश पमूर, पद्मसरो

वर पूर ॥ ३ ॥ अगियारमे रयणायर, देखें माताजी गुण सायर ॥ बारमे चुगन विमान, तेरमे अनुपम रत्ननिधान ॥ ४ ॥ अग्निशिखा निरधूम, देखे माताजी अनुपम ॥ हरखी रायने नापे, राजा अरथ प्रकाशे ॥ ५ ॥ जगपति जिनवर सुखकर, होशे पुत्र मनोहर ॥ इंद्रादिक जसु नमशे, सकल मनोरथ फलशे ॥ ६ ॥

॥ वस्तु ॥ पुण्य उदय पुण्य उदय उपना जिननाह, माता तव रयणी समे, देखी सुपन हरखंत जागीय. सुपन कही निज कंतने ॥ सुपन अरथ सांजलो सोजागीय, त्रिजुवन तिलक महागुणी, होशे पुत्र निधान. इंद्रादिक जसु पय नमी, करशे सिद्ध विधान ॥ १ ॥

॥ ढाल चोथी ॥ चंद्रावलानी देशीमां ॥

॥ सोहमपति आसन कंपीयो ए, दे अवधि मन आणंदीयो ए ॥ निज आतम निर्मल करण काज, जव जल तारण प्रगटयुं जहाज ॥ १ ॥ जवअडवी पारग सहे वाह, केवल नाणाश्यं गुण अगाह ॥ शिव साधन गुण अंकूरो जेह, कारण उलटयो आषाढी मेह ॥ २ ॥ हरखें विकसी तव रोमराय, वलयादिकमां निज तनु न माय ॥ सिंहासनथी उठयो सुरिंद, प्रणमंतो जिन आनंद कंद ॥ ३ ॥ सग अड पय साहमो आवी तब, करि.

अंजलीय प्रणमीय मञ्च ॥ मुखे नांखे ए कुण आज सार, तिय लोय पहु दीगे उदार ॥ ४ ॥ रे रे निसुणो सुर लोय देव, विषयानलतापित तुम सवेव ॥ तसु शांति करण जलधर समान, मिथ्या विष चूरण गरुडवान ॥ ५ ॥ ते देव सकल तारण समञ्च, प्रगट्यो तसु प्रणामी हुवो सनाथ ॥ एम जंपी शक्रस्तव करेवि, तव देव देवी हरखें सुणेवि ॥ ६ ॥ गावे तव रंभा गीत गान, सुरलोक हवो मंगल निधान ॥ नरक्षेत्रें आरिज वंश गाम, जिनराज वधे सुर हरख धाम ॥ ७ ॥ पिता माता घरे उच्छव अशेष, जिन शासन मंगल अति विशेष ॥ सुरपति देवादिक हरख संग, संयम अर्थी जनने उमंग ॥ ८ ॥ शुभवेला लगने तीर्थनाथ, जनम्या इंद्रादिक हरख साथ ॥ सुख पाम्या त्रिभुवन सर्वजीव, वधाई वधाई थइ अतीव ॥ ९ ॥

॥ ढाल पांचमी ॥ श्रीशांतिजिननो कलश कहिशुं, प्रेमसागरपूर ॥ ए देशी ॥

॥ श्रीतीर्थपतिनुं कलश मज्जन, गाइयें सुखकार ॥ नरखित्तमंमण दुहविहंमण, भविक मन आधार ॥ तिहां रांव राणा हर्ष उच्छव, थयो जग जयकार ॥ दिशिकुमरी अवधि विशेष जाणी, लह्यो हर्ष अपार

॥ १ ॥ निय अमर अमरी संग कुमरी, गावती गुण छंद ॥ जिन जननी पासें आवि पहोती, गहगहती आणंद ॥ हे माय! तें जिनराज जायो, सुचि वधायो रम्म ॥ अम जम्म निम्म करण कारण. करीश सूई कम्म ॥ २ ॥ तिहां नूमि शोधन दीप दर्पण, वा वींजण धार ॥ तिहां करिय कदली गेह जिनवर, न ननि मज्जनकार ॥ वरराख ी जिन पाणि बांधि, दि एम आशीष ॥ जुग को कोडी चिरंजीवो, धर्म दायक ईश ॥ ३ ॥

॥ ढाल छठी ॥ एकवीशानी ॥ जग नायकजी, त्रिनु वन जन हितकार ए ॥ परमातमजी, चि दानंद घन सार ए ॥ ए देशी ॥

॥ ढाल ॥ जिन रयणी जी, दश दिशि उज्ज्वलता धरे॥ शुंन लगनें जी, ज्योतिषचक्र ते संचरे ॥ जिनजनम्या जी, जेणे अवसर माता घरें॥ तेणे अवसरजी, इंद्रासनें पण थरहरे ॥ त्रुटक ॥ थरहरे आसन इंद्र चिंते, को ण अवसर ए बन्यो ॥ जिन जन्म उत्सव काल जा णी, अतिहि आनंद ऊपन्यो ॥ निज सिद्धि संपति हे तु जिनवर, जाणि नक्तें ऊमह्यो ॥ विकसंत वदन प्र मोद वधते, देवनायक गहगह्यो ॥ १ ॥ ढाल ॥ तव

सुरपति जी, घंटानाद कराव ए ॥ सुरलोकें जी, घोषणा एह देवराव ए ॥ नरक्षेत्रें जी, जिनवर जन्म हुउं अ छे ॥ तसु भक्तें जी, सुरपति मंदरगिरि गछे ॥ त्रुटक ॥ गछेति मंदिर शिखर ऊपर, भुवन जीवन जिन तणो ॥ जिन जन्म उत्सव करण कारण, आवजो सवि सुरगणो ॥ तुम शुद्ध समकित थाशे निर्मल, देवाधिदेव निहालतां ॥ आपणां पातक सर्व जाशे, नाथ चरण पखालतां ॥ २ ॥ ढाल ॥ एम सांभली जी, सुरवर कोडि बहु मिली ॥ जिनवंदन जी, मंदिर गिरि साह्मां चली ॥ सोहमपति जी, जिन जननी घर आविया ॥ जिन माताजी, वंदी स्वामी वधाविया ॥ ॥ त्रुटक ॥ वधाविया जिन हर्ष बहुलें, धन्य हुं कृत पुण्य ए ॥ त्रैलोक्यनायक देव दीठो, मुझ समो कुण अन्य ए ॥ हे जगत जननी पुत्र तुमचो, मेरु मज्जन व रं करी ॥ उछंग तुमचे वलिय थापिश, आतमा पुण्यें भरी ॥ ३ ॥ ढाल ॥ सुरनायक जी, जिन निज कर क मलें ठव्या ॥ पंच रूपें जी, अतिसय महिमाएं स्तव्या ॥ नाटक विधि जी, तव बत्रीश आगल वहे ॥ सुरको डि जी, जिनदर्शनने ऊमहे ॥ त्रुटक ॥ सुर कोडि कोडी ना चती वली, नाथ शुचि गुण गावती ॥ अप्सरी कोडी

हाथ जोडी, हाव जाव देखावती ॥ जयो जयो तुं जिन राज जगगुरु, एम दे आशीष ए ॥ अम्ह त्राण शरण आधार जीवन, एक तुं जगदीश ए ॥ ४ ॥ ढाल ॥ सुरगिरिवर जी, पांडुक वनमें चिहुं दिशें ॥ गिरि शिल पर जी, सिंघासण सासय वसे ॥ तिहां आणी जी. शक्रें जिन खोले ग्रह्या ॥ चोसठे जी, तिहां सुरपति आवी रह्या ॥ त्रुटक ॥ आविय सुरपति सर्व जगतें, कलश श्रेणि बणाव ए ॥ सिद्धार्थ पमुहा तीर्थ औषधि, सर्व वस्तु अणाव ए ॥ अचुअपति तिहां हुकम कीनो, देव कोडाकोडिने ॥ जिन मज्जनारथ नीर लावो, सके सुर कर जोडिने ॥ ५ ॥

॥ ढाल सातमी ॥ शांतिने कारणें इंद्र कलशा जरे ॥ ए देशी ॥

॥ आत्मसाधन रसी देवकोडी हसी, उल्लसीने धसी खीर सागरदिशी ॥ पद्मद्रह आदि द्रह गंगपमुहा नई, तीर्थजल अमल लेवा जणी ते गई ॥ १ ॥ जाति अड कलश करि सहस अठोत्तरा, छत्र चामर सिंघासण शुजतरा ॥ उपगरण पुष्फ चंगेरी पमुहा सवे, आगमें जासिया तेम आणी ठवे ॥ २ ॥ तीर्थजल जरिय कर कलस करि देवता, गावता जावता धर्म उन्नतिरता ॥ ति-

रिय नर अमरने हर्ष उपजावता, धंन्य अम्ह शक्ति शुं चि नक्ति इम नावता ॥ ३ ॥ समकितबीज निज आ तम आरोपता, कलसपाणीमिशें नक्तिजल सींचता । मेरुसिहरोवरि सर्व आव्या वही, शक्र उत्संग जिन देखी मन गहगही ॥ ४ ॥

॥ वस्तु ॥ हंहो देवा हंहो देवा, अणाइ कालो अदि ठपुव्वो, तिलोय तारणो तिलोय बंधु, मिच्छत्तमोह वि ढंसणो ॥ अणाइ तिण्हा विणासंणो, देवाहिदेवो दिठ बोहिय कामेहिं ॥ ५ ॥

॥ ढाल तेत्रीज ॥ एम पन्नणत वण नवण जोईसरा, देव वेमाणिया नत्ति धम्मायरा ॥ केवि कप्पठिया केवि मित्ताणुगा, केवि वर रमणिवयणेण अइ उच्छगा ॥ ६ ॥

॥ वस्तु ॥ तच्च अच्चुय तच्च अच्चुय इंद आदेश ॥ कर जोडि सवि देवगण, लेय कलस आदेश पामिय ॥ अदन्नुत रूप सरूप जुअ, कवण एह पुच्छंत सामिय ॥ इंद कहे जग तारणो, पारग अम परमेस ॥ नायक दायक धम्मनिहि, करियें तसु अभिसेस ॥ १ ॥

॥ ढाल आठमी ॥ तीर्थकमलदल उदक
नरीने पुस्कर सागर आवे ॥ ए देशी ॥

॥ पूरणकलश शुचि उदकनी धारा, जिनवर अं

गें नामे ॥ आतम निरमल भाव करंतां, वधते शुभ परि णामें ॥ १ ॥ अच्युतादिक सुरपतिमज्जन, लोकपाल लो कंत ॥ सामानिय इंद्राणी पमुहा, एम अभिषेक क रंत ॥ २ ॥ गाहा ॥ तव ईसाण सुरिंदो, सक्कं पभणे इ करइ सुपसाउ ॥ तुम्ह अंके महनाहो, खिणमित्तं अ म्ह अप्पेह ॥ ३ ॥ ता सक्किंदो पभणइ, साहमीय व च्छंमि बहु लाहो ॥ आणा एवं तेणं, गिण्हह उच्छ यबालो ॥ ४ ॥ एम कही सर्वे स्नात्रीया कलश ढाले, अने मुखथी नीचे प्रमाणें कहे.

ढाल तेहीज ॥ सोहम सुरपति वृषभ रूप करी, न्हवण करे प्रभुअंग ॥ करिय विलेपण पुष्फ माल ठवि, वर आभरण अभंग ॥ ५ ॥ तव सुर वर बहु जय जय रव करि, नाचे धरि आणंद ॥ मो क्ष मार्ग सारथपति पाम्यो, भांजशुं हवे भवफंद ॥ ६ ॥ कोडि बतीसे सोवन उवारी, वाजंते वर ना दें ॥ सुरपति संघ अमर श्रीप्रभुने, जननीने सुप्रसादें ॥ ७ ॥ आणी थापी एम पयंपे, अम निस्तरिया आ ज ॥ पुत्र तुमारो धणिय हमारो, तारण तरण जि हाज ॥ ८ ॥ मात जतन करी राखजो एहने, तुम सुत अम आधार ॥ सुरपति भगति सहित नंदीसर,

करे जिनजक्ति उदार ॥ ए ॥ नियं निय कप्प गया सवि निर्जर, कहेतां प्रजु गुणसार ॥ दीक्षा केवल ज्ञान कल्याणक, इछा चित्त मजार ॥ १० ॥ खर तरगछ जिन आणारंगी, राजसागर उवजाय ॥ ज्ञान धर्म दीपचंद सुपाठक, सुगुरुतणे सुपसाय ॥ ११ ॥ देवचंद जिन जक्तें गायो, जन्म महोत्सव छंद ॥ बोध बीज. अंकूरो उलस्यो, संघ सकल आनंद ॥ १२ ॥

॥ कलश ॥ राग वेलावल ॥ इम पूजा जगतें करो, आतम हितकाज ॥ तजिय विजाव निज जावमें, रमता शिवराज ॥ इम० ॥ १ ॥ काल अनंतें जे हुआ, हो शे जेह जिणंद ॥ संपय सीमंधर प्रजु, केवल नाण दिणंद ॥ इम० ॥ २ ॥ जन्म महोत्सव एणि परें, श्राव क रुचिवंत ॥ विरचे जिन प्रतिमा तणुं, अनुमोदन खंत ॥ इम० ॥ ३ ॥ देवचंद जिन पूजना, करतां जव पार ॥ जिनपडिमा जिनसारखी, कही सूत्र मजार इम० ॥ ४ ॥ इति पंमित श्रीदेवचंदजी कृत स्नात्र पूजा ॥ समाप्त ॥

॥ अथ पंमित श्रीदेवचंद्रजी कृत अष्ट प्रकारी पूजा लिख्यते ॥



तत्र

प्रथम जलपूजा

॥ दोहा ॥ गंगामागध क्षीरनिधि, उपधमंथितसार ॥ कुसुमें वासित शुचिजलें ॥ करो जिन स्नात्र उदार ॥ १ ॥ ढाल ॥ मणिकनकादिक अडविध करी, जरी कलश सफार ॥ शुन्न रुचि जे जिवनर नमे, तसु नही दुरित प्रचार ॥ मेरुशिखर जिम सुरवर जिनवर न्हवण अमान, करता वरता निज गुण समकित वृद्धि निधान ॥ २ ॥ छंद ॥ हर्ष जरी अप्सरावृंद आवे, स्नात्र करी एम आशीष जावे ॥ जिहां लगे सुरगिरि जंबुदीवो, अमतणा नाथजीवो तुं जीवो ॥ ३ ॥

॥ विमल केवल जासनजास्करं, जगति जंतुमहोदयकारणं ॥ जिनवरं बहुमानजलौघतः, शुचि मनः स्नपयामि विशुद्धये ॥ १ ॥ ॐह्रीं परम परमात्मने अनंतानंतज्ञानशक्तये जन्मजरामृत्युनिवारणाय श्रीमज्जिनेंद्राय जलं यजामहे स्वाहा॥ १ ॥इति जलपूजा ॥

॥ अथ द्वितीयचंदनपूजा ॥

॥ दोहा ॥ बावना चंदन कुंकुमा, मृगमद ने घ
नसार ॥ जिनतनु लेपे तसु टले, मोह संताप विकार
॥ १ ॥ ढाल ॥ सकलसंताप निवारण, तारण सद्दु
नविचित्त ॥ परम अनीहा अर्हा, तनु चरचो नवि
नित्त ॥ निज रूपें उपयोगी, धारी जिनगुण गेह ॥ ना
वचंदन सुह नावथी, टाले दुरित अछेह ॥ २ ॥ चा
ल ॥ जिन तनु चरचतां सकल नाकी, कहे कुमद
उष्णता आज थाकी ॥ सकल अनिमेषता आज म्हां
की, नव्यता अम्ह तणी आज पाकी ॥ ३ ॥

॥ सकलमोहतमिस्रविनाशनं, परमशीतलनावयुतं
जिनम् ॥ विनयकुंकुमदर्शनचंदनैः, सहजतत्त्वविकाश
कृतेऽर्चये ॥ २ ॥ ॐ ह्रीं परमपरमात्मने अनंतानंत
ज्ञानशक्तये जन्मजरामृत्युनिवारणाय श्रीमज्जिनेंद्राय
चंदनं यजामहे स्वाहा ॥ २ ॥ इति चंदनपूजा ॥

॥ अथ तृतीय पुष्पपूजा ॥

॥ दोहा ॥ शतपत्री वरमोगरा, चंपक जाइ गुला
ब ॥ केतकि दमणो वोलसिरी, पूजो जिन नरि छाब
॥१॥ढालं ॥ अमल अखंमित विकसित, शुनसुमनी घ
णी जाति॥लाखीणो टोमर ठवो, अंगी रची बहु नांति॥

गुणकुसुमें निज आतमा, मंडित करवा नव्य ॥ गुणरागी जडत्यागी, पुष्प चढावो नव्य ॥ २ ॥ चाल ॥ जगधणी पूजतां विविधफूलें, सुरवर ते गणें कण अमूलें ॥ खांति धरि मानवा जिनने पूजे, तसु तणां पाप संताप धूजे ॥ ३ ॥

॥ विकचनिर्मलशुद्धमनोरमै, विशदचेतनभावसमुद्भवैः ॥ सुपरिणामप्रसूनघनैर्नवैः, परमतत्त्वमयं हि यजाम्यहम् ॥ ३ ॥ ॐ ह्रीं परमपरमात्मने अनंतानंतज्ञानशक्तये जन्मजरामृत्युनिवारणाय श्रीमज्जिनेंद्राय पुष्पं यजामहे स्वाहा ॥ ३ ॥ इति पुष्पपूजा ॥

॥ अथ चतुर्थ धूपपूजा ॥

॥ दोहा ॥ कृष्णागरमृगमद तगर, अंबर तुरुक लोबान ॥ मेलि सुगंध घनसार घण, करो जिननें धुपधाण ॥ १ ॥ ढाल ॥ धूपघटी जिम महमहे, तिम दहे पातकवृन्द ॥ अरति अनादिनी जावे, पावे मन आणंद ॥ जे जिन पूजे धूपें, भव कूपें फिरि तेह ॥ नावे पावे ध्रुवघर, आवे सुख अछेह ॥ २ ॥ चाल ॥ जिनघर वासतां धूपपूरें, मिथ्यात्वदुर्गंधता जाइ दूरे ॥ धूप जिम सहज ऊर्ध्वग स्वभावे, कारका उच्चगति भाव पावे ॥ ३ ॥

॥ सकलकर्ममहेंधनदाहनं, विमलसंवरभावसुधूप

नम् ॥ अशुन्नपुजलसंगविवर्जितं, जिनपतेः पुरतोऽस्तु सुहर्षितः॥४॥ ॐ ह्रीं परमपरमात्मने अनंतानंतज्ञानशक्तये जन्मजरामृत्युनिवारणाय श्रीमज्जिनेंद्राय धूपं यजामहे स्वाहा ॥ ४ ॥ इति धूपपूजा ॥

॥ अथ पंचमदीपकपूजाप्रारंन्नः ॥

॥दोहा॥ मणिमय रजत ताम्रप्रमुख, पात्र करी घृतपूर॥ वर्त्ती सूत्र कौसुंनी, करो प्रदीप सनूर ॥१॥ ॥ ढाल ॥ मंगलदीप वधावो गावो,जिन गुणगीत ॥दीपतणी जिम आलिका मालिका;मंगलनीत ॥ दीपतणी शुन्न ज्योती द्योती,जिनमुखचंद ॥ निरखी हरखो नविजना जिम लहो पूर्णानंद ॥ २ ॥ चाल ॥ जिनगृहे दीपमाला प्रकासे,तेहथी तिमिर अज्ञान नासे ॥ निजघटे ज्ञानज्योति विकासे, तेहथी जगतना नाव नासे ॥३॥

॥ नविकनिर्मलबोधविकाशकं, जिनगृहे शुन्नदीपकदीपनम् ॥ सुगुणरागविशुद्धिसमन्वितं, दधतु नावविकाशकृते जनाः ॥ ५ ॥ ॐ ह्रीं परमपरमात्मने अनंतानंतज्ञानशक्तये जन्मजरामृत्युनिवारणाय श्रीमज्जिनेंद्राय दीपं यजामहे स्वाहा॥ ५ ॥ इति दीपपूजा ॥

॥ अथ षष्ठाक्षत पूजा ॥

॥ दोहा ॥अक्षत अक्षत पूरशुं,जे जिन आगें सार ॥

स्वस्तिक रचतां विस्तरे, निजगुण नर विस्तार ॥१॥ ॥ ढाल ॥ उज्ज्वल अमल अखंडित, मंडित अक्षतनं ग ॥ पुंजत्रय करो स्वस्तिक, आस्तिक नावें रंग ॥ निज सत्ताने सन्मुख, उनमुख नावें जेह ॥ ज्ञानादिक गुण गावे, नावे स्वस्तिक एह ॥ २ ॥ चाल ॥ स्वस्तिक पूर तां जिनप आगें, स्वस्ति श्रीजइ कल्याण जागे ॥ ज न्मजरामरणादि अशुन नागे, नियत शिवशर्म रहे तासु आगें ॥ ३ ॥

॥ सकलमंगलकेलिनिकेतनं, परममंगलनावमयं जि नम् ॥ श्रयत नव्यजना इति दर्शयत्, दधतु नाथ पु रोऽक्षतस्वस्तिकम् ॥ ६ ॥ ॐ ह्रीं परमपरमात्मने अन तानंतज्ञानशक्तये जन्मजरामृत्युनिवारणाय श्रीमज्जि नेंद्राय अक्षतान् यजामहे स्वाहा ॥ ६ ॥ इति अक्षतपूजा

॥ अथ सप्तम नैवेद्यपूजा ॥

॥ दोहा ॥ सरस शुची मकवान नर, शालदालि घृतपूर ॥ धरे नैवेद्य जिन आगलें, क्षुधादोष तसु दूर ॥ १ ॥ ढाल ॥ लपनश्री वरघेवर, मृडुतर मोती चूर ॥ सिंहकेसरिया सेवैया, दलिया मोदकपूर ॥ सा कर डाख सिंगोडा, नक्तव्यंजन घृत सद्य ॥ करो नैवे द्य जिन आगलें, जिम मिले सुख अनवद्य ॥ २ ॥

चाल ॥ ढोवतां भोज्यपर भाव त्यागें, भविजना नि· जगुण भोज्यं मांगे ॥ अम्ह भणी अम्हतणो मरूप भोज्य, आपजो तातजी जगतपूज्य ॥ ३ ॥

सकलपुद्गलसंगविवर्जनं, सहजचेतनभावविलास कम् ॥ सरसभोजनभव्यनिवेदनात्, परमनिर्वृतिभाव महं स्पृहे ॥ ४ ॥ ॐ ह्रीँ परमपरमात्मने अनंतानं तज्ञानशक्तये जन्मजरामृत्युनिवारणाय श्रीमज्जिनेंद्रा य·नैवेद्यं यजामहे स्वाहा ॥ ७ ॥ इति नैवेद्यपूजा· ॥

॥ अथाष्टमफलपूजा ॥

॥ दोहा ॥ पक्क बिजोरुं जिन करे, ठवतां शिवपद देइ ॥ सरस मधुर शुभ फल घणां, इह जिन भेट करे· इ ॥ १ ॥ ढाल ॥ श्रीफल कदली सुरंगा, नारंगी आंबां सार ॥ जंबीर अंजीर दाडिम, करणा षटबीज सफा र ॥ मधुर सुस्वादिक उत्तम, लोके आनंदित जेह ॥ व रणं गंधादिकें रमणीक, ·बहुफल ढोवे तेह ॥ २ ॥ ॥ चाल ॥ फलभरें पूजतां जगतस्वामी, मनुजगति वेलि होय सफल पामी॥सकल मुनि ध्येयगत भेद रंगें, ध्यावतां फलसमापति प्रसंगें ॥ ३ ॥

॥ कटुककर्मविपाकविनाशनं, सरसपक्कफलव्रजढौकन म् ॥ विहितमोक्षफलस्य प्रभोः पुरः, कुरुत सिद्धिफलाय

महाजंनाः ॥ ८ ॥ ॐ ह्रीँ परमपरमात्मने अनंतानंतज्ञानशक्तये जन्मजरामृत्युनिवारणाय श्रीमज्जिनेंद्राय फलं यजामहे स्वाहा ॥ ८ ॥ इति फलपूजा ॥

॥ अथ अर्घपूजा ॥

॥ दोहा ॥ इम अडविध जिनपूजना, विरचे जे थिरचित्त ॥ मानवभव सफलो करे, वाधे समकित वित्त ॥ १ ॥ ढाल ॥ अगणित गुणमणि आगर, नागरु वंदित पाय ॥ श्रुतधारी उपगारी, ज्ञानसागर उवझाय ॥ तासु चरणकज सेवक, मधुकर परें लयलीन ॥ श्रीजिनपूजा गाइ, जिनवाणी रसपीन ॥ २ ॥ चाल ॥ संवत गुण युग अचल इंदु, हर्षभरि गाइयो श्री जिनेंदु ॥ तासु फल सुकृतथी सकल प्राणी, लहे ज्ञान उद्योत घन शिवनिशानी ॥ ३ ॥

॥इति जिनवरवृंदं भक्तितः पूजयंति, परमसुखनिधानं देवचंद्रं स्तुवंति ॥ प्रतिदिवसमनंतं तत्त्वमुद्भासयंति. परमसहजरूपं मोक्षसौख्यं श्रयंति ॥ ए ॥ ॐ ह्रीँ परमपरमात्मने अनंतानंतज्ञानशक्तये जन्मजरामृत्युनिवारणाय श्रीमज्जिनेंद्राय अर्घ्यं यजामहे स्वाहा ॥८॥

॥ अथ वस्त्र पूजा ॥

॥शक्रो यथा जिनपतेः सुरशैलचूला, सिंहासनोपरि

गतः स्नपनावसाने ॥ दध्यक्षतैः कुसुमचंदनगंधधूपैः, कृत्वार्चनं तु विदधाति सुवस्त्रपूजाम् ॥ १ ॥ इति ॥

॥ तद्वत् श्रावकवर्ग एष विधिनालंकारवस्त्रादिकां, पूजां तीर्थकृतां करोति सततं शक्त्यातिजक्त्यादृतः ॥ नीरागस्य निरंजनस्य विजितारातेस्त्रिलोकीपतेः,स्वस्या न्यस्य जनस्य निर्वृतिकृते क्लेशक्षयाकांक्षया ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं परमपरमात्मने अनंतानंतज्ञानशक्तये जन्म जरामृत्युनिवारणाय श्रीमज्जिनेंद्राय वस्त्रं यजामहे स्वाहा ॥ इति वस्त्रपूजा ॥

॥ अथ लूण उतारण ॥

॥ लूण उतारो जिनवर अंगें, निर्मल जलधारा म नरंगें ॥ लू० ॥ १ ॥ जिम जिम तडतड लूणज फूटे, तिम तिम अशुज करम बंध त्रूटे ॥ लू० ॥ २ ॥ नयन सलूणां श्रीजिनजीनां, अनुपम रूप दयारस जीनां ॥ लू० ॥ ३ ॥ रूप सलूणुं जिनजिनुं दीसे, लाज्युं लूण ते जलमां पेसे ॥ लू० ॥ ४ ॥ त्रण प्रद क्षिण देइ जलधारा, जलण खेपवियें लूण उदारा ॥ ॥ लू० ॥ ५ ॥ जे जिन ऊपर डुमणो प्राणी, ते एम थाजो लूण ज्युं पाणी ॥ लू० ॥ ६ ॥ अगर कृष्णा

गरु कुंदरु सुगंधें, धूप करीजें विविध प्रबंधें ॥ लू० ॥ ॥ ७ ॥ इति लूण उतारणं ॥

॥ अथ आरती ॥

॥ विविध रत्न मणि जडित रचावो, थाल विशाल अनोपम लावो ॥ आरति उतारी प्रभुजीने आगें, भावना भावि शिव सुख मागे ॥ आ० ॥ १ ॥ सात चौद ने एकविश भेवा, त्रण त्रण वार प्रदक्षिण देवा ॥ आ० ॥ २ ॥ जिम जिम जलधारा देइ जंपे, तिम तिम दोहग थरहर कंपे ॥ आ० ॥ ३ ॥ बहुभव संचित पाव पणासे, द्रव्य पूजाथी भाव उल्लासे ॥ आ० ॥ ४ ॥ चौद भुवनमां जिनजीने तोले, कोई नहीं आरती इम बोले ॥ आ० ॥ ५ ॥ इति आरती ॥

॥ अथ मंगल दीपक ॥

॥ दीवो रे दीवो मंगलिक दीवो, भुवनप्रकाशक जिन चिरंजीवो ॥ दी० ॥ १ ॥ चंद सूरज प्रभु तुम मुख केरां, लुंछण करतां दे नित फेरा ॥ दी० ॥ २ ॥ जिन तुक आगल सुरनी अमरी, मंगलदीप करी दिये भमरी ॥ दी० ॥ ३ ॥ जिम जिम धूपघटी प्रगटावे, तिम तिम भवनां डुरित दकावे ॥ दी० ॥ ४ ॥ नीर अक्षत कुसुमंजलि चंदन, धूप दीप फल नैवेद्य वंद

न ॥ दी० ॥ ५ ॥ इणि परें अष्ट प्रकारी कीजें, पूजा स्नात्र महोत्सव नणीजें ॥ दी०॥६॥ इ० मं० दी० ॥

॥ अथ आरति ॥

॥ आरति कीजें पासकुमरकी, जनम मरण नय हर जिनवरकी ॥ आ० ॥ नयरि वणारसि जनम क हावे, वामा माता प्रनु हुलरावे ॥ आ० ॥ १ ॥ यौवनवन फल नोगि जणावे, नारि प्रनावति नृप परणावे ॥ काय निरोग नोग विलसावे, पुरिसादाणी बिरुद धरावे ॥ आ० ॥ २ ॥ ज्ञान विलोकी कमठ हरावे, गहन दहनथी फणि निकसावे ॥ सेवक मुख नवकार सुणावे, धरण राय पदवी निपजावे ॥ आ० ॥३॥ क्रोधि कमठ हठ तप लय लावे, जिन दर्शनसें सुर गति पावे ॥ नोग संयोग वियोग बनावे, संयम श्री आतम परणावे ॥ आ० ॥ ४ ॥ ध्यान लेहेरियां काउसग्ग नावे, स्वामीकूं वडालय तव गवे ॥ मेघमाली जलधर वरसावे, जब नासा नर नर जल लावे ॥ आ० ॥ ५ ॥ तब धरणींद्रासन कंपावे, पदमावति सार्थें तिहां आवे॥नाथ उरधशिर फणिकुं ढलावे, जइ अपराधी देव मरावे ॥ आ० ॥ ६ ॥ सांइ शरण लहि समंकित पावे, फणिपति नाटकविधि विरचावे॥ प्रनु

चरणे नमि गेह सिधावे,जगदीसर घनघाति हरावे ॥
॥ आ० ॥ ७ ॥ साकारें केवल डुग पावे, धर्म कही
जिननाम खपावे ॥ भूतल विचरी मोक्ष सिधावे, अ
गुरु लघू गुण प्रभु निपजावे ॥ आ० ॥ ८ ॥ आरत
गतकी आरति गावे,श्रोता वक्ता रति उपजावे ॥ मन
मोहन प्रभु पास कहावे, श्रीजिनवीर ते शीस नमा
वे ॥ आ० ॥ ए ॥ इति आरति ॥

॥ अथ श्रीजिननव अंग पूजनम् ॥

॥ दोहा ॥ जल भरि संपुट पत्रमां, जुगलिक नर पू
जंत ॥ ऋषभचरण अंगूठडो, दायक भवजल अंत ॥
॥१॥जानुबलें काउसग्ग रह्या,विचरया देश विदेश ॥ ख
डां खडां केवल लह्युं, पूजो जानु नरेश ॥ २ ॥ लो
कांतिक वचनें करी, वरस्या वरसी दान ॥ करकंर्मे
प्रभु पूजना, पूजो भवि बहु मान ॥ ३ ॥ मान गयो
दोय अंशथी, देखी वीर्य अनंत ॥ भुजाबलें भवजल
तरया, पूजो खंध महंत ॥ सिद्धशिला गुण उज्ज्व
ली, लोकांतें भगवंत ॥ वसिया तिण कारण भ
वि, शिरशीखा पूजंत ॥ ५ ॥ तीर्थंकरपद पुण्यथी, त्रि
भुवन जन सेवंत ॥ त्रिभुवनतिलक समा प्रभु, भाल
तिलक जयवंत ॥ ६ ॥ शोल पोहोर प्रभुदेशना, कंठ

विवर वरतूल ॥ मधुरध्वनि सुरनर सुणे, तिण गले तिलक अमूल ॥ ७ ॥ हृदय कमल उपशम बलें, बाल्या राग ने रोष ॥ हीम दहे बनखंमने, हृदय तिलक संतोष ॥ ८ ॥ रत्नत्रयी गुण उज्ज्वली, सकल सुगुण विशराम ॥ नाभिकमलनी पूजना, करतां अविचल धाम ॥ ए ॥ उपदेशक नव तत्त्वना, तिणं नव अंग जिणंद ॥ पूजो बहु विध रागथी, कहे शुभवीर मुणिंद ॥ १० ॥ इति श्रीजिननवअंगपूजनं समाप्तम् ॥

॥ अथ श्री देवचंदजीकृत स्नात्रपूजाविधिप्रारंभः ॥

॥ प्रथम निसिही पूर्वक श्रीदेरासरमध्यें आवी अंग शुद्ध करी, नवीन वस्त्र पहेरी, स्वनाले तिलक करी, बाजोठनी स्थापना करी, ते उपर बाजोठ मांमी, स्नात्र पीठउपर थालनी स्थापना करवी, ते उपर तंडुलनी ढगली करवी, तेनी उपर रूपा नाणुं तथा नाली येर धरीने पछी स्नात्रीयायें पोताने हाथे मौलीसूत्र बांधवुं, तथा बीजा कलश प्रमुखं स्थानकें मौलीसूत्र बंधन करी, कलशाने धूप दइ, दूध, दधि, घृत, जल तथा शर्करा, ए पंचामृतथी कलश भरी राखवा, पछी मुखकोशं बांधी मूल नायकजी आगल आवी नमस्कार करी अने धूपधाणुं हाथमां लइ धूप उखेववो,

ते समयें मुखथी धूपावलीनी गाथा कहेवी, ते आ प्रमाणेः—

॥ असुरिंदसुरिंदाणं, किन्नरगंधव्वचंदसूराणं ॥ विज्ञाहरासुराणं, मज्झोगसिद्धाण सिद्धाणं ॥ १ ॥ मुनिय परमठ विठर, गीयठ विविह तव सोसियंगाणं ॥ सिद्धवहूनिप्परकं, तियाण जोगीसराणं च ॥ ॥ २ ॥ जंपूयाय जगवउ, तित्थयरा राग रोस तम्म रहिया ॥ विणयपणएण तेसिं, सुमुहुउ मे इमे धूउ ॥ ॥ ३ ॥ तिबंकरपडिमाणं, कंचण मणि रयण विद्दुममयाणं ॥ तिहुयण विजूसगाणं, सासय सुरनर कयाणं च ॥ ४ ॥ सिद्धाण सूरि पाठग, साहूणं जाण जोग निरयाणं ॥ सुयदेवयमाईणं, सुमुहुउ मे इमे धूउ ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ ए गाथाउ कह्या पढी प्रथम अक्षतने धोइ तेउने केशर तथा चंदन लगाडवुं, तथा पुष्पोने पण जलथी शुद्ध करी राखवां, तदनंतर ते अक्षत तथा फूलनी कुसुमांजलि हाथमां लइ, उना थइने "नमो अरिहंताणं, नमोऽर्हत्सिद्ध०" ॥ एम पाठ कहेवो, अने पढी बे श्लोक पठन करवा, ते आ प्रमाणेः—

" श्रीमत्पुण्यं पवित्रं कृतविपुलफलं मंगलं लक्ष्म

लक्ष्म्याः, कुस्मारिष्टोपसर्गग्रहगतिविकृतिस्वप्नमुत्पात घाति ॥ संकेतं कौतुकानां सकलसुखमुखं पर्व सर्वो त्सवानां, स्नात्रं पात्रं गुणानां·गुरुगरिम गुरोर्वैञ्चितः यैर्न दृष्टम् ॥१॥अशेषजवनांतराश्रितसमाजखेदक्कमो, न चापि रमणीयतामतिशयीन तस्यापरः ॥ प्रदेश इह मानतो निखिललोकसाधारणः, सुमेरुरिति ता पितः स्नानपीठभावं गतः ॥ २ ॥

• एम कह्या पछी स्नात्रपीठ संमुख कुसुमांजलि अर्पण करवी, तदनंतर स्नापनपीठ पखाली लूंछीने कुंकुमनुं स्वस्तिक करवुं; धूप उखेववो; अने सर्व स्नात्रीयाउना हाथने धूपावली आपवी; पछी कपूर लगाडवो; अने एक नवकार कहीने स्नात्र पीठ उपर प्रतिमाजीनी स्थापना करवी. ते प्रतिमा प्रायें पंच तीर्थिक, अर्धपरिकर संयुक्त स्थापवी. तेना मुख आ गल अक्षतोनी ढगली करवी. अने तेनी उपर पंचा मृतनो एक कलश मूकवो. पछी हाथमां कुसुमांजलि लइने "मुक्तालंकार० ॥" ए गाथा जणी कुसुमां जलि अर्पण करीने, प्रतिमाजीनां निर्माल्य उतारी प्रक्षालन करवुं. पछी अंगलूहणाथी प्रमार्जीने धूप उखेववो; अने केशर, चंदन कपूर तथा कस्तूरी घसी

ते पवित्र ज्ञाजनमां जरीने ते जाजन प्रतिमाजी आ गल धरवुं. वली कुसुमांजलि हाथमां लइ उना थइ "इबं नमो अरिहंताणं ॥ नमोऽर्हत्सि०॥" क हीने स्नात्र पूजानी पहेली पांखडी कहेवी. एम अ नुक्रमे पांच पांखडी कही, कुसुमांजलि पूर्ण करीने हाथमां चामर लइने तेने जगवंतनी उप ढोलतो ॥ वस्तु ॥ "सयल जिनवर. मांमीने यावत् वधाइ वधा इ श्रइ अतीव" सुधानो पाठ कहे, ते पूर्ण थया पछी चैत्य वंदन करवुं. शक्रस्तव कही "जयवीयराय" सुधी जणवुं. पछी हाथ धोइ धूप कर्पूरादिक हाथने लगाड वां. त्यार केडें जे पूर्वे कलशोने धोइ धूप आपी कंनें मोलीसूत्र बांधी उपर स्वस्तिक करयुं, तेउमां पंचामृत जरी, अक्षतोना ढगलाउ उपर धारण करी, तेनी उपर अंग लूहणां ढांकी धूप उखेवी, तेउमांना मात्र बेज कलशोने आसपास जलधारा देइने राख्या होय. पछी स्नात्रीयाना हाथमां स्वस्तिको करी सर्वे जणोयें श्रे णिबद्ध उना रहेवुं, अने प्रत्येक स्नात्रीयायें खमास मण देइ, पंचांग नमस्कार करवो. पछी प्रत्येक स्नात्री यायें पोताना बे हाथमां कलशो लेवा, ते कलशधारकं स्नात्रीयायें पोताना बन्ने हाथने विषे रहेला कलशने

उत्तरासंग वस्त्रवडे ढांकी राखवा, अने पोतें उत्ना छ· तां मुखथी "श्रीतीर्थपतिनो कलश मज्जन०" इहां थी मांमीने संपूर्ण पूजा नणवी. त्यार पछी,·प्रतिमा जी उपर कलशो ढोली, पखाल करी अंग लूहणाथी मज्जन करी, केसर चंदनथी अर्चन करीनें. फूल चढा ववां. पछी थालमां स्वस्तिक करी बिंबनी स्थापना करवी; अने धूप करवो. ते समयें आ प्रमाणे पाठ नणवोः—

॥ अथ कलश ढालवा समयनुं स्तवन ॥

॥ इंद्र कलश नर ढाले, श्रीजिन पर ॥इंद्र कल०॥ हाथो हाथ अमरगण आनत, खीर विमल जल धा रे ॥ श्रीजिन० ॥ १ ॥ सुरवनिता मली मंगल गावे, नावत नाव महा रे ॥ श्रीजिन० ॥२ ॥ किन्नर अरु गंधर्व महोरग, निरत नीर नित्य सारे ॥ श्रीजिन० ॥ ॥ ३ ॥ देव डुंडुनिधुनि गर्जत अति, शिरपर सुजस निध्यारे ॥ श्रीजिन० ॥४॥ परमानंद जिनराज जग तपद, जगजीवन हितकारे ॥. श्रीजिन० ॥ ५ ॥ इति कलश ढालवा समयनुं स्तवन ॥

पछी रकेबीमां लूण पाणी लइने आरतिनी परें

करवुं. अने. ते वखतें मुख थकी लूणउतारवानी गाथाउ कहेवी, ते आवी रीतें:-

॥ अथ लूण उत्तारण गाथा ॥

॥ अह पडिजग्गापसरं, पयाहिणं मुणिवइ करिऊणं ॥ पडइ सलूणत्तणलज्जियं च लूणं हु अवहरंती ॥ १ ॥ पिरकेविणु मुह जिणवरह, दीहरनयण सलूण ॥ एहावइ गुरुमछर भरिय, जलण पईसइ लूण ॥ २ ॥ लूण उतारिह जिण वरहं, तिन्नि पयाहिण देउ ॥ तडतड सद्द करंति यह, विज्जा विज्जु जलेण ॥ ३ ॥ जं जेणविज्जा विज्जइ, जलेण तं तहइ अब ससद्दं ॥ जिणरूवमछरेणवि, फुट्टइ लूणं तडतडस्स ॥ ४ ॥ ए गाथाउ कहीने लूणने अग्नि शरण करवुं. पछी वली प्रथमनी परें लूण पाणी लइने मुखथी आवी रीतें गाथाउ कहेवी:-

॥ सव्वं मुणिवइ जलणिजल्ल, तंतह नमडइ पास ॥ अहवि कयंतस्सनिम्मलउ, निग्गुण बुद्धि पयास ॥ १ ॥ जलण अणे विणु जलणिहि पास, नरविकयज्जालि नावहि पास ॥ तिन्नि पयाहिण दिन्निय पास, जिम जिउ बुट्टइं नव डुह पास ॥ २ ॥ जलं निम्मल कर कमलहि लेविणु, सुरवइ नावहि मुणिवइ सेव

णु ॥ पभणइ जिणवर तुह पइ सरए, भय तुट्टइ लप्प-इ सिद्धि गमणं ॥ ३ ॥ ए गाथाओ कही लूण पाणी उतारीने जल शरण करवुं. त्यार पछी माला लइ उ ना रहीने आ प्रमाणें गाथाओ कहेवी:—

॥ अथ पुष्पमाला पूजा गाथा ॥

॥ उन्नाय पय भत्तस्स, नियगाणे संठियं कुणं तस्स ॥ जिणपासे भमिय जिण,स्स निय गाणे संठि यं तस्सं ॥ (पागंतरे) पिछतुह हुय वहे पडणं ॥१॥ सव्वो जिणप्पभावो, सरिसा सरिसेसु जेण रच्चंति ॥ सवन्नूणमपासे, जडस्स भमणं ण संकमणं ॥ २ ॥ अच्चंत डुक्करं पिहु, डुअवहनिवडे ण जडेण कयं ॥ आणा सवन्नूणं, न कया सुकयछ मूलमिणं ॥ ३ ॥ ए पाठ भणीने माला चडाववी, पछी हाथमां छूटां फूलो लेवां, ते वखतें गाथाओ कहेवी, ते आ प्रमाणें:—

॥ अथ छूटां फूलपूजा गाथा ॥

॥ कुसरणो जिणपुरओ, परिमल मिलियाउलिकिविहग संगीया ॥ मुत्तामरे हिवो कुणउ, परिमल मिलिया उ लिकिविहगं ॥ १ ॥ उवणेउ मंगलं वो, जिणाण मु हलालि जाव संवलिया ॥ तिछ पवत्तण समये, ति यसें वि मुक्का कुसुमवुही ॥ २ ॥ ए पाठ कहीने प्रभु

न। आगल फूलो उगालवां॥ हवे आनरण तथा वस्त्रो लइने उना ठतां गाथाउ कहेवी, ते आप्रमाणेः—

॥ अथ वस्त्राजरण पूजा ॥

॥ श्लोकः ॥ शक्रो यथा जिनपतेः सुरशैलचूला, सिंहासनोपरिगतः स्नपनावसाने ॥ दध्यक्तैः कुसुमचंदनगंधधूपैः, कृत्वार्चनं तु विदधाति सुवस्त्र पूजाम् ॥ १ ॥ तद्वत् श्रावकवर्ग एप विधिनालंकारव स्त्रादिकां, पूजां तीर्थकृतां करोति सततं शक्त्यांतिन्न क्त्याहतः ॥ नीरागस्य निरंजनस्य विजितारातेस्त्रिलो कीपतेः स्वस्यान्यस्य जनस्य निर्वृतिकृते क्लेशक्षयाकां क्षया ॥ २ ॥ एम कही आनरणपूजा करवी ॥

॥ पठी ज्ञानपूजा करे, तेनी गाथाउ ॥

॥ नमंति सामीति महीवनाहं, देवा य पूयं सु जहेव पुव्वं ॥ नत्तीय चित्तं मण दामयेहिं, मंदार पु प्फेहि सवेह नाहं ॥ १ ॥ तहेव सट्ठामण मुत्तयेहिं, सुगंध पुप्फेह वरंसयेहिं ॥ पूयंत वंदंत नमंत नाणं, नाणस्स लानाय नवरकयाय ॥ २ ॥ ए गाथाउ कहीने पुष्पोनी माला चढाववी, तथा रौप्यमुद्रा, सु वर्णमुद्रा, मणि, रत्न अने वस्त्र एउयें करी स्वशक्ति अनुसार ज्ञाननी पूजा करवी.

॥ पछी धूप करती वखतें आ गाथा कहेवी ॥

॥ मीनकुरंगमुदारमसारं,सारसुगंधनिशाकरतारम्॥ तारमिलन्मलयोद्भविकारं, लोकगुरोर्दह धूपमुदारम् ॥ १ ॥ एम कहीने धूप उखेववो. पछी मंगलदीपक करीने आ गाथाउ कहेवीः—

॥ अथ मंगलदीपकपूजा ॥

॥ कोसंबीसंठियस्सवि, पयाहिणं कुणइ मउलि यपईवो ॥ जिणसोमदंसणोदिण, यरुव तुह भांह मंगलपईवो ॥ १ ॥ नामीजंतो सुर सुं, दरीहिं तुह नाह मंगल पईवो ॥ कणयायलस्स निज्जिय, नाणुव पयाहिणं दिंतो ॥ २ ॥ मरगय सामल थाल धरेविणु, कोमल सरलिहिं करिहिं करेविणु ॥ जो उत्तारइ मंगल पइवो,सो नर होइ तिलोय पईवो॥३॥ए गाथा कहीने मंगलप्रदीप करवो. पछी रकेबीमां कपूर धरी,आरतिमां बत्ती सलगावीने मुख थकी आ गाथाउ कहेवीः—

॥ अथ आरति गाथा ॥

॥ जं मरगयमणिगडिय,विसालथाल माणिक्क मंडि य पइवो ॥ एहवणयरकुरु खित्तं, नमउ जिण आर त्तियं तुम्हं ॥ १ ॥ आरत्तिअं नियछह, जिणस्स धूव किसणागरुछायं ॥ पासेसु नमउ निज्जिय, संगमय

विनिन्न दिठ्वि ॥ ॥ पसमेयवो नवंतर, समज्जियं कम्मरेणु संघायं ॥ आरत्तिय मंगलग्गा, उब्बलंति मलि नधाराउं॰॥३॥ एवी रीतें आरति करवी ॥ इति संक्षेप आरति विधि ॥

पठी उत्तरासंग करी, चैत्यवंदन करवुं, अने अष्ट प्रकारें पूजा करवी. कदाचित् अष्ट प्रकारें पूजा न कराय तो शेष फल फूल ने नैवेद्य जे होय, ते एमज चढावी देवुं. पठी गुणगीन करवां, जय जय शब्द उच्चारवा, साहामीवात्सल्य करवुं,तथा यथाशक्तिदान देवुं ॥ इति स्नात्रपूजाविधिः समाप्तः ॥

॥ अथ आरति, दीपक, लूणजलविधिः प्रारभ्यते ॥

॥ प्रभुथी अंतरपट करी प्रभु संमुख बेसी आरति करनारने नव अंगें कुंकुमना तिलक करवां. पठी एक थालमां स्वस्तिक करी,तेमां आरति, मंगलदीपक, जमणी बाजू राखी, त्यां आरतिमां घृत थोडुं नरवुं. अने मंगलदीपकमां घृत पूर्ण नरवुं. पठी केशर, फूल, अने तंडुलें करी तेनी पूजा करवी. उपर कुंकुमना ठांटा नाखी मंगलदीपक प्रगटाववो,अने कर्पूर सलगाववो. तेनो मंत्र कहे ठेः—ॐ अर्हते पंचज्ञानमहाज्योतिर्मयाय, ध्वांतघातप्रद्योतनाय, प्रतिमायै दीपोन्नूयर

त्सर्वेदार्हते ॥ १ ॥ एम जणी मंगलदीपकं प्रगटा वीने पढी ते मंगलदीपकथी आरति प्रगटाववी. पढी दीवो नीचे मूकीने आरति उतारवी. तेवार पढी दीपक उतारवो. पढी लूणनी कांकरी लेइ " लूण उतारो जिनवर अंगें " इत्यादि पाठ कही लूणनी गाथा जणवी. पढी बृहच्छांति कहे, ते न आवडे तो त्रण्य नवकार गणी, आ प्रमाणें श्लोक कहे. ते श्लोक ॥ आज्ञाहीनं क्रियाहीनं, मंत्रहीनं च यत्कृतम्॥तत्सर्वं क्षमया देव! क्षमस्व परमेश्वर ॥ १ ॥ एम कही चैत्यवंदन करे ॥ इति आरति, दीपक,लूणजलविधिः॥

॥ अथ ॥

॥ सत्तर जेदी पूजा प्रारंजः ॥

दोहा ॥ जाव जले जगवंतनी,पूजा सतर प्रकार ॥ परसिध कीधी द्रौपदी, अंग ठठे अधिकार ॥१॥

॥ राग सरपदो ॥

॥जोति सकल जग जागति एं,सरसति समरि सुचिंद॥सतर सुविधि पूजा तणो, पजणिस परमानंद॥१॥.

॥गाहा॥ न्हवण विलेवण-वथजुग, गंधारुहणं चपुप्फरोहणयं॥मालारोहण वन्नय, चुन्न पडागाय आजरणे॥ १ ॥ मालकलावंसघरं, पुप्फं पगरं च अंठमंगल

यं॥धूव उरवेव्रो गीयय, नट्टं वज्जं तहा नणियं ॥ २ ॥

॥ दोहा ॥ सतर सुविध पूजापवर, ज्ञाता अंगम ऊार ॥ डुपदसुता डोपदिपरें, करियें विधि विस्तार॥१॥

॥ अथ प्रथम न्हवण पूजा ॥ राग देशाख ॥ पूर्वं मुख .सावनं, करि दशन पावनं, अहत धोती धरी, उचित मानी ॥ विहित मुख कोशके, खीरगंधोदकें, सुनृत मणिकलश करि, विविध वानी ॥ नमिंकि जिनपुंगवं, लोमहल्लेनवं, मार्जनं करियं का वारि वारी ॥ नणिय कुसुमांजली, कलशविधि मन रली, न्हवति जिन इंड जिम, तिम अगारी ॥ १ ॥

॥ राग सारंग अथवा मल्हारमां ॥ दोहा ॥

॥ पहिली पूजा साचवे, श्रावक शुनपरिणाम ॥ शुचि परवाल तनु जिन तणी, करे सुकृत हितकाम ॥ ॥ १ ॥ परमानंदपीयूष रस, न्हवण मुगति सोपान ॥ धरम रूप तरु सींचवा, जलधरधार समान ॥ २ ॥

॥ राग सारंग तथा मल्हार ॥ पूजा सतर प्रकारी, सुणियो रे मेरे जिनवरकी ॥ परमानंद अति उल्यो री सुधारस,तपत बूझी मेरे तनकी हो ॥ पू० ॥ १॥ प्रचुकुं विलोकि नमि जतन प्रमार्जित, करत परवाल शुचिधार विनकी हो॥ न्हवण प्रथम निजवृजिन.

पुलावत, पंककुं वरष जैसें घनकी हो ॥ पू० ॥ २ ॥ तरणि तरुण नव सिंधु तरणकी, मंजरी संपदफल वरधनकी ॥ शिवपुर पंथ दिखावणं दीपी, धूमरी आपद वेल मरदनकी हो ॥ पू० ॥ ३ ॥ सकल कुशल रंग मिल्योरी सुमतिसंग, जागी सुदिशा शुन मेरे दिनकी ॥ कहे साधु कीरत सारंग नरि, करतां आस फली मेरे मनकी हो ॥ पू० ॥ ४ ॥

॥ अथ द्वितीयविलेपनपूजा ॥

॥ राग रामग्री ॥ गात्र लूहे जिन मनरंगसुं हो देवा ॥ गा० ॥ सखरसुधूपित वाससुं, वाससुं हांरे देवा वाससुं ॥ गंधकसायसुं मेलियें, नंदन चंदन्न चंद मेलीयें रे देवा ॥ नं० ॥ मांहे मृगमद कुंकुम नेलीयें, कर लीये रयणपिंगाणी कचोलीयें ॥ १ ॥ पग जानु कर खंधे सिरें रे, नाल कंठ उर उदरंतरें ॥ दुख हरे हांरे देवा सुख करे, तिलक नवे अंग कीजियें ॥ दूजी पूजा अनुसरे श्रावक, हरि विरंचे जिम सुरगिरें ॥ तिम करे जिणपर जन मन रंजीयें ॥ २ ॥

॥ राग ललितमां ॥ दोहा ॥

॥ करहुं विलेपन सुखसदन, श्रीजिनचंद शरीर ॥ तिलक नवे अंग पूजतां, लहे नवोदधि तीर ॥ १ ॥

मिटे ताप तसु देहको, परम शिशिरता संग ॥ चित्त खेद सवि उपशमे, सुखम समरसी रंग ॥ २ ॥

॥ राग बिलावल ॥

॥ विलेपन कीजें जिन अंगं ॥ जिनवर अंग सुगंधे ॥ वि० ॥ कुंकुम चंदन मृगमद यक्षकर्दम, अगरमिश्रित मनरंगें ॥ वि० ॥ १ ॥ पग जानू कर खंधें सिर. भालकंठ उरउदरंतरसंगं ॥ विलुपति अघ मेरो करत विलेपन, तपत बुझति जिम अंगें ॥ वि० ॥ २ ॥ नवअंग नव नव तिलक करतही, मिलत नवे निधि चंगे, जैसे गंगतरंगें ॥ वि० ॥ ३ ॥

॥ अथ तृतीय वस्त्रयुगलपूजा ॥

॥दोहा॥वसनयुगल उज्ज्वल विमल,आरोपे जिनअंग॥ लाभ ज्ञान दर्शन लहे, पूजा तृतिय प्रसंग॥ १ ॥

॥ राग गोडी ॥

॥ कमलकोमलघनं, चंदनं चर्चितं, सुगंध गंधें अधिवासिया ए ॥ कंनकमंभितहये, लालपल्लवशुचि, वसनजुग कंत अतिवासिया ए ॥ जिनप उत्तम अंगें, सुविधिशक्रो यथा, क्ररिय पहिरावणी ढोइयें ए ॥ पाप लूहण अंग, लूहणुं देवनें, वस्त्रयुगपूज मल धोइयें ए ॥ १ ॥

॥ राग वैराडी ॥ देव डुष्य जुग पूंजा बन्यो हे जगत गुरु, देवे डुष्य हर अब इतनो मागुं ॥ तुंहिज सबही हित तुंहिज मुगति दाता, तिंण नमि नमी प्रभुजीके चरणे लागुं ॥ दे० ॥ १ ॥ कहे साधु त्रीजी पूजा केवल दंसण नाण, देव डुष्य मिश देहुं उत्तम वागुं ॥ श्रवण अंजलि पुट सुगुण अमृत पीता, सविराडे भवसंशय घुरम नागुं ॥ दे० ॥ २ ॥ इति ॥

॥ अथ चतुर्थ वासक्षेप पूजा ॥ राग गोडीमां दोहा ॥

॥ पूज चतुर्थी इण परें, सुमति वधारे वास ॥ कुमति कुगति दूरें हरे, दहे मोह दल पास ॥ १ ॥

॥ राग सारंग ॥

॥ हांहोरे देवा बावन चंदन घसि कुंकुमा, चूरण विधि विरचे वासु ए ॥ हां० ॥ कुसुम चूरण चंदन. मृगमदा, कंकोल तणो अधिवासु ए ॥ हां० ॥ वास दशोदिशि वासतें, पूजे जिन अंग उवंगु ए ॥ हां० ॥ लाभि भुवन अधिवासिया, अनुगामीकी सरम अनंगु ए ॥ १ ॥

॥ राग गौडी तथा पूर्वी ॥

॥ मेरे प्रभुजीकी आणंद, पूजा मेलेंकी ॥ मे० ॥

वास त्रुवन मोह्यो सब लोए, संपदा नेलेंकी॥पूजा०
॥ १ ॥ सतर प्रकारी पूजा विजय, देवा तत्ता थेई॥
अप्रमित गुण तोरा चरण सेवाकी ॥ पूजा० ॥ २ ॥
कुंकुम चंदनवासें पूजीये जिनराज तत्ता थेई ॥ चतु
र्गति दुख गौरी चतुर्थी धरकी ॥ पूजा० ॥ ३ ॥

॥ अथ पंचम पुष्पारोहण पूजा ॥

॥दोहा॥ मन विकसे तिम विकसतां, पुष्प अनेक प्रकार ॥ प्रनुपूजा ए पंचमी, पंचमि गति दातार ॥ १ ॥

॥ राग कामोद ॥ चंपक केतकी मालती ए, कुंद किरणं मंचकुंद ॥ सोवन जाइ जूइका, बिउलसिरी अरविंद ॥ १ ॥ जिनवर चरण उवरि धरे ए, मुकु लित कुसुम अनेक ॥ शिव रमणीसें वर वरे, विधि जिन पूज विवेक ॥ २ ॥

॥ राग कानडो ॥ सोहेरी माई मन मोहेरी वरणे॥ विविध कुसुम जिनचरणे ॥ सो० ॥ विकसी हसी जंपे साहिबकुं, राखि प्रनू हम सरणें ॥ सो० ॥१॥ पंचमि पूज कुसुम मुकुलितकी, पंचविषय दुख हरणे ॥सो०॥ कहे साधुकीरती नगति नगवंतकी, नविक नरा सुख करणे ॥ सो० ॥ २ ॥

॥ अथ छठी मालारोहणपूजा ॥

॥ राग आशावरीमां दोहा ॥

॥ छठी पूजा ए छती, महा सुरभि पुफमाल ॥
गुण गूंथी थापे गले, जेम टले दुखजाल ॥ १ ॥

॥ राग रामग्री गुर्जरी ॥ हे नाग पुन्नाग मंदार नव मालिका, हे मल्लिकासोग पारिधे कली ए॥हे मरुक द मणक बकुल तिलक वासंतिका, हे लाल गुल्लाल पा मल निली ए ॥ हे जासुमण मोगरा बेउला मालती, हे पंच वरणों गुंथी मालती ए ॥ हे माल जिन कंठ पीठें ठवी लहलहे, हे जाण संताप सहु विरती ए ॥१॥

॥ राग आशावरी ॥ देखी दामा कंठ जिन अधिक एधति नंदें ॥ चकोरकुं देखि देखी जिम चंदें ॥ पंच विध वरण रची कुसुमाकी जैसी, रयणावलि सुह मंदें ॥ दे० ॥ छठी रे तोभर पूजा तब भार धूजे. सब अरिजन हुइ हुइ छंदे ॥ कहे साधुकीरति सकल आशा सुख, जगति जगति जेय जिण वंदे ॥ दे० ॥ २ ॥ इति॥

॥ अथ सप्तम वर्णपूजा प्रारंभः ॥

॥ दोहा ॥ केतकि चंपक केवडा, शोभे तेम सुगात ॥ चाढो जिम चढतां हूवे, सातमियें सुखशात॥१॥

॥ राग केदारो गोडी ॥

॥ कुंकुम चरर्चित विविध पंच वरर्णका, कुसुमथुं हे। कुंद गुल्लाबथुं चंपको दमण को,जासुसुं ए ॥ मा तमीपूजमें अंगि, अलंकियें ए ॥ अंगि प्रालंक मिश मानवी मुगति, आलिंगियें ए ॥ १ ॥

॥ राग भैरवी ॥ पंच वरणी अंगी रची, कुसुमनी जाती ॥ फूलनकी जाती ॥ पं० ॥ कुंद मचकुंद गुलाब शिरोमणी, कर कणी सोवनजाती ॥ पं० ॥ दमणक मरुक पाडल अरविंदो, अंस जूई वेउल वा .ती॥पं०॥१॥ पारधि चरण कल्हार मंदारो, त्रिण पर कूलं बनी जाती ॥ पं० ॥ सुरनर किन्नर रमणी गाती, भैरव कुगति व्रतती दाती ॥ पं० ॥ २ ॥

॥ अथ अष्टम गंधवटी पूजा प्रारंभः ॥

॥ दोहा ॥ राग सोरठमां ॥ सोरठ राग सुहामणी, मुखें न मेली जाय ॥ ज्युं ज्यूं रात गलंतियां, त्यूं त्यूं मीठी थाय ॥ १ ॥ सोरठ थारा देशमें, गढां बडो गिरनार ॥ नित उठ यादव वांदस्यां, स्वामी नेम कुमार ॥ २ ॥ जो हूंती चंपो बिरख, वा गिरनार पहार ॥ फूलन हार गुंथावती, चढती नेम कुमार ॥ ३ ॥ राजिमती गिरवर चढी, ऊभी करे पूकार ॥ स्वामी

अजहु न बाहुडे,मो मन प्राण आधार ॥ ४ ॥ रे सं सारी प्राणियो,चढचो न गढ गिरनार । गंगा न्हाय न गोमती, गयो जमारो हार ॥५॥ धन वा राणी राजी मती, धन वे नेम कुमार, शील संयमता आदरी, प होतां नव जल पार ॥६॥ दया गुणांकी वेलडी,दया गुणांकी खान ॥ अनंत जीव मुगते गया, इण दया तणे परमाण ॥७॥ जगमें तीरथ दोइ बडा, सेत्रूंजो गिरनारं ॥ इण गिर रिषन्न समोसरे, उण गिर नेम कुमार ॥ ८ ॥

॥ दोहा सोरठी रागमां ॥

॥ अगर सेलारस सार, सुमनि पूजा आठमी ॥ गं धवटी घन सार, लावा जिन तनु नावशुं ॥ १ ॥

॥ राग सोरठ॥कुंद किरण शशि उजलो जी देवा, पावन घन घनसारो जी ॥ आगो सुरन्नि शिखर मृग नान्निजा जी देवा,चुन्न सेहण अधिकारो जी ॥आ०॥ वस्तु सुगंध जब मोरियो जी देवा,अशुन्न करम चूरी जें जी ॥ आ० ॥ आंगण सुरतरु मोरियो जी देवा, तब कुमती जन खीजे जी ॥ पागंतरे ॥ तब सुमती जन रीजें जी ॥ १ ॥

॥ राग सामेरी ॥ पूजोरी माई, जिनवर अंग सु

गंधें ॥ जि० ॥ पू० ॥ गंधवटी घनसार उदारे, गोत्र तीर्थंकर बांधे ॥ पू० ॥ १ ॥ आठमी पूजा अगर सेलारस,लावे जिन तनु रागें ॥ धार कपूर भाव घन वरखत. सामेरी मति जागे ॥ पू० ॥ २ ॥

॥ अथ नवम ध्वज पूजा प्रारंभः ॥

॥ दोहा ॥ मन मोहन धर मस्तकें, सूहव गीत समूल ॥ दीजें तीन. प्रदक्षिणा.नवमी पूज अमूल॥१॥

॥ राग मेघ॥गोडीमां वस्तु छंद ॥ सहस जोयण सहस जोयण हेममय दंमें, युतपताक पांचे वरण ॥ घुम. घुमंत घूघरी वाजे, मृदु समीर लहके गयणं ॥ जाणं कुमति दल सयल भांजे. सुरपति जिम विरचे धजा ए, नवमी पूज सुरंग ॥ तिणपरि श्रावक ध्वज वहन,आपे दान अभंग ॥ १ ॥

॥ राग नट्टनारायण ॥ जिनराजको ध्वज मोहनां, ध्वज मोहनां रे ध्वजमोहनां ॥ जि० ॥ मोहन सुगुरु अधिवासिय,करिपंच सबद त्रिप्रदक्षिणा ॥ सधव वधू शिरसोहणा ॥ जि० ॥ १ ॥ भांतिवसन पांच वरण वन्यो री, विध करि ध्वजको रोहणां ॥ साधु भणत नवमी पूजा,नव पाप नियाणां खोहणां॥शिव मंदिरकुं अधिरोहण, जन मोह्यो नट्टनारायण्णा ॥ जि० ॥२॥

॥अथ दशमी आभरण पूजा प्रारंभः॥

॥ राग केदारामां दोहा ॥

॥ शिर सोहे जिनवर तणे,रयण मुकुट झलकंत॥
तिलक भाल अंगद भुजा, श्रवण कुंमल अतिकंत॥१॥
दशमी पूज आभरणकी,रचना यथा अनेक ॥ सुरपति
प्रभु अंगें रचे, तिम श्रावक सुविवेक ॥ २ ॥

॥ राग अधरस वा गुंममल्हार ॥ पांच पिरोजा
नीलू लसणीया, मोती माणक लाल लसणीया, हीरा
सोहे रे, मन मोहे रे, धुनी चुनीपुलक करकेतनां.
जातरूप सुभग अंक अंजना, मनमोहे रे॥ १ ॥ मौ
लि मुकुट रयणें जड्यो, काने कुंमल हारे अति जुग
ते जुड्यो॥ उरहरू रे मनवारु॥ २ ॥ भाल तिलक
बांहे अंगदा, आभरण दशमीपूजा मुदा ॥ सुखकारु
रे, दुखवारू रे ॥ ३ ॥

॥ राग केदारो ॥

॥ प्रभु चिर सोहे, मुकुट रयणें जड्यो॥अंगद बांह
तिलक भालस्थल, येहु नीको कोन घड्यो.॥ प्र० ॥
॥ १ ॥ श्रवण कुंमल शशि तरणि मंमल झीपें, सुरभुं
अधिक अलंकर्यो ॥ दुखके दार चमर सिंहासण, छत्र
शिरं उवरि धर्यो, अलंकृत उचित वर्यो ॥ २ ॥

॥ अथ एकादश फूलघर पूजा ॥

॥दोहा॥ फूलघरो अति शोभतो, फूंदे लहके फूल॥
महके परिमल मह महा, इग्यारमी पूजा अमूल॥१॥

॥ राग रामग्री। कौलकिया ॥

॥ कोज अंकोल रायबेलि नव मालिका, कुंद मचकुंद वर विचिकलू ए ॥ हे तिलक दमण कंदलं मोगरा, परिमलं पारिध पाडलू ए ॥ हे प्रमुख कसुमें रचे त्रिभुवनकुं रुचै, कुसुम गेह विच तोरणूं ए ॥ गुच्छ चंद्रोदयं फूंबक भन्नयं, हे जालिका गोख चित्र चोरणूं ए ॥ १ ॥

॥ राग रामग्री ॥

॥मेरो मन मोह्यो माईरी, फूल घरे आणंद झिले॥ असत भसत दाम वधारी मनोहर, देखत तबही सब दुरित खिले ॥ फू० ॥ १ ॥ कुसुम मंडित थंभगुच्छ चंद्रोदयं, कोरणि चार विनाण सकेकी ॥ इग्यारमी पूज भणीहे रामगिरी, विंबुध विमाण जैसेति रिपु भजेकी ॥ फू० ॥ २ ॥ इति फूलघर पूजा ॥

॥ अथ पुष्पवर्षा पूजा ॥ दोहा मलार रागमां ॥

॥ वरषे बारमी पूजमें । कुसुम बादलिया फूल॥
हरणं ताप सवि कोकको, जानु समा बहु मूल ॥ १ ॥

॥ राग नीम मल्हार गुंमनमिश्र ॥ देशी कडखानी ॥
॥ मेघ बरसै नरी, पुष्फ वादल करी, जानु प
रिमाण करि कुसुम पगरं ॥ पंच वरणें बन्यो, विकच
अनुक्रम चण्यो, अधोवृंतें नही पीड पसरं ॥ मे० ॥
॥ १ ॥ वास महके मिलै, नमर नमरी निलै, सस्स
रसरंग तिण डुख निवारी ॥ जिनप आगें करै, सुरप
जिम सुख वरै, बारमी पूज तिण पर अगारी ॥मे०॥२॥
॥ राग नीम मल्हार ॥
॥ पुष्फ वादलीया वरसे सुसमां ॥ अहो पु० ॥
योजन अशुचिहर वरसे गंधोदक, मनोहर जानु स
मा ॥ पु० ॥ १ ॥ गमन आगमनकी पीर नही तसु,
इह जिनको अतिशय सुगुणें ॥ गुंजत गुंजत मधुकर
इम नणे, मधुर वचन जिन गुण थुणे ॥ पु० ॥ २ ॥
कुसुम सुपरि सेवा जो करै,तसु पीर नही सुमणे ॥ स
मवसरण पंचवरण अधोवृंत, विबुध रचे सुअना सु
समा ॥ पु० ॥ ३ ॥ बारमी पूज नविक तिम करे,
कुसुम विकसी हसी उच्चरे ॥ तसु नीम बंधण अधरा
हुवे, जे करै जै जै जिन नमा ॥ पु० ॥ ४ ॥
॥ अथ त्रयोदशाष्ट मंगलिक पूजा ॥
॥ दोहा राग कल्याणमें ॥ तेरमि पूजा अवसरें,

मंगल अष्ट विधान ॥ युगति रचे सुमतें सही, परमा नंद निधान ॥ १ ॥

॥ राग वसंत ॥ अतुल विमल मिल्या, अखंड गुणें नल्या, सालि रजत तणा तंडुला ए ॥ श्लषण समा जकं, विध पंच वर्णकं, चंद्रकिरण जैसा ऊजला ए ॥ मिलि मंगल लिखै, सयल मंगल अखे, जिनप आगें सुथानक धरे ए ॥तेरमि पूजविधि ते रमी मन मेरे, अष्ट मंगल अष्ट सिद्धि करे ए ॥ अतुल० ॥ १ ॥

॥ राग कल्याण ॥ ह्रांहो पूजा बणी तेरी रसमें ॥ ॥ अष्ट मंगल लिखे, कुशल निधान है, तेज तरणके रसमें ॥ह्रां०॥१॥ दर्प्पण भद्रासण नंद्यावर्त्त पूर्ण कुंभ, मत्स्ययुग श्रीवच्छ तसुमें ॥ वर्धमान स्वस्तिक पूज मंगलकी, आनंद कल्याण सुखरसमें ॥ ह्रां ० ॥ २ ॥

॥ अथ चतुर्दश धूप पूजा ॥

॥दोहा॥गंधवटी मृगमद अगर,सेलारस घनसार॥ धरि प्रभु आगल धूपणा, चउदमि अरचा चार ॥१॥

॥ राग वेलावल ॥ कृष्णागर कपूरचूर, सौगंध पांचे पूर, कुंडुरुक सेलारस सार, गंधवटी घनसार ॥ चंदन मृगमदा रस भेलियें, श्रीवास धूप दशांग, अं बर सुरभि बहु द्रव्य मेलियें ॥ वेरुलिय दंड कनक

मंत्र, धूपधाणुं कर धरे ॥ जववृत्ति धूप करंति जोग, रोग सोग अशुज हरे ॥ १ ॥

॥ राग मालवी गोडी ॥ सब अरति मथनमुदार धूपं, करति गंध रसाल रे ॥ देवा, कर० ॥ धाम धूमा वलीय धूसर, कलुष पातिक गाल रे ॥ देवा, स० ॥ ॥१॥ ऊर्ध्वगति सूचंति जविकु, मघ मघे करनाल रे ॥दे०॥ चौदमी वामंग पूजा, दीये रयण विशाल रे॥आ रति मंगल माल रे, मालवी गोडी ताल रे॥म०॥ २॥

॥ अथ पंचदश गीत पूजा ॥

॥ दोहा ॥ कंठ जले आलाप करि, गावो जिनगुण गीत॥जावो अधिकी जावना, पनरमि पूजा प्रीत॥१॥

॥ श्री राग ॥ आर्यावृत्तं ॥ यद्दनंतकेवल, मनंत फलमस्ति जैनगुणगानं ॥ गुणवर्णतानवाद्यै, र्मात्रा जाषालयैर्युक्तं ॥ १ ॥ सप्तस्वरसंगीतैः, स्थानैर्जयतादि तालकरणैश्च॥चंचुरचारी चारै,र्गीतं गानं सुपीयूषं ॥ २॥

॥श्रीराग॥जिनगुण गानं श्रुत अमृतं, तार मंडादि अनाहत तानं, केवल जिम तिम फल अमृतं ॥ जि० ॥१॥ विबुध कुमार कुमरी आलापे, मुरज उपंग नाद जनितं ॥ पाठ प्रबंध धुआप्रतिमानं, आयति बंद सुर ति सुमितं ॥२॥ शब्दसमान रुच्यो त्रिजुवनकुं, सुर न

र गावे जिन चरितं ॥ सप्तस्वर मान शिवश्री गीतं,पन रमि पूजा हरे. डुरितं ॥ जि० ॥ ३ ॥

॥ अथ षोडशी नृत्य पूजा ॥ दोहा ॥

॥ कर जोडी नाटक करे, सजि सुंदर सिणगार॥
नव नाटक ते नवि नमे, सोलमि पूजा सार ॥ १ ॥

॥ राग शुद्ध नट्ट ॥ काव्यं ॥ शार्दूल विक्रीडितं वृत्तं॥ नावादिप्पिमणा सुचारु चरणा,संपुन्न चंदानना, सप्पिम्मासम रूप वेस वयसो, मत्तेज कुंजबणा ॥ नावस्था सगुणा पिकस्स रवई, रागाड्या नावणा ॥ कुम्मारी कुमरावि जैन पुरउ,नच्चंति सिंगारणा ॥ १ ॥

॥ गद्यं ॥ तएणं ते अठसयं कुमार कुमरीउ सूरियानेणं देवेणं संदिठा रंग मंमवे पविठा जिणं नमंता गायंता वायंता नच्चंतित्ति ॥

॥ राग नट्ट त्रिगुण ॥ नाचंति कुमार कुमरी, ड्गगड दि तत्ता थेइ, ड्गगड्दि ड्गगड्दी थोंगनि थोंगनि मुंखें तत्ता थेइ ॥ ना० ॥ १ ॥ वेणु वीणा मुरज वाजे,सोलही सिणगार साजे,तन नन्नानेइ,घणण घणण घूघरी घमके,रसांसांणं नानेई ॥ ना० ॥ २ ॥ कसंती कंचुकी तरुणी, मंजरी नंकार करणी ॥ सोनंति कुमरी, हस्तक हावादि नावें, ददंति नमरी ॥ ना० ॥ ३ ॥

सोलमी नाटक तणी, सुरीयाज्नें रावस कीनी ॥ सुगंध तत्ता त्थेई, जिनप जगतें जविक लीणी, आणंद तत्ता थेई ॥ ना०॥ ४ ॥

॥ अथ सप्तदश वाजित्र पूजा ॥

॥ सुरमद्दल कंसालो, महुरय मद्दल सुवज्जए पणवो ॥ सुरनारि नंदि तूरो, पजणे तुं निंद जिणनाहो ॥

॥दोहा॥ तत घन सुषिरे आनघेरे, वाजित्र चउविध वाय॥ जंगत जली जगवंतनी, सतरमि ए सुखदाय॥ १॥

॥ राग मधु माधवी ॥ तूं नंदियानंदि बोलत नंदी, चरण कमल जसु जगत्रय वंदी ॥ ज्ञान निर्मल वावन मुख वेदी, तिवलि बोले रंग अतिहीं अनंदी ॥ तूं० ॥ १ ॥ जेरी गयण वाजंती, कुमति त्याजंती ॥ प्रजु जक्ति पसायें अधिक गाजंती, सेवे जैन जणावंती, जैन शासन, जयवंत नंदंती ॥ उदय सिंघ पश्पिरिय वदंती ॥ तूं०॥ २ ॥ सेवि जविक मधु माधन फेरी, आखे इन फेरी ॥ जवनी फेरी नप्पजणंती, कहे साधु सतरमी पूज वाजित्र सब, मंगल मधुर धुनि कर कहंती ॥ तूं० ॥ ३ ॥ इति ॥ १७ ॥

॥ अथ कलश ॥ राग धन्याश्री ॥

॥ जवि तुं . जण गुण जिनके सब दिन, तेज

तरणि सुख राजे ॥ कवि शतक आठ थुणत शक्र स्तव, थुय रंगें हम गाजे ॥ ज० ॥ १ ॥ अणहिल्ल पुर शांति शिव सुखदाइ, नव निधि सिद्धि आ वाजे ॥ सतर सुपूज सुविधि श्रावककी, जणी मैं जगति हित काजे ॥ ज० ॥ २ ॥ श्री जिनचंद सूरि खरतर पति, धरम वचन तसु राजे ॥ संवत सोल अढार श्रावण धुरि, पंचमि दिवस समाजे ॥ ज० ॥ ॥ ३ ॥ दयाकलश गुरु अमरमाणिक्य वर, तासु पसाय सुविधि हुइ गाजे ॥ कहै साधु कीरति करतजिन संस्तव, शिव लीला सुख साजे ॥ ज०॥ ४ ॥

॥ इति सतरहभेदी पूजा संपूर्णा ॥

॥ अथ ॥

विंशतिस्थान पूजा प्रारभ्यते ॥

॥ तत्र प्रथम पदे श्रीजिनेंद्र पद पूजा ॥

॥ दोहा ॥

॥ सुखसंपति दायक सदा, जगनायक जिनचंद ॥ विघनहरण मंगलकरण, नमो नाभि नृपनंद ॥ १ ॥ लोकालोक प्रकाशिका, जिनवाणी चित धार ॥ विंशति पद पूजन तणो, कहिस्यां विधि विस्तार ॥ २ ॥ जि

नवर अंगें, नाखिया, तप जप विंविध प्रकार ॥ विं.
शति पद तप सारिखुं, अवर न कोइ उदार ॥ ३ ॥
दान शील तप जप क्रिया, नाव विना फलहीन ॥
जैसें नोजन लवण विण, नहीं सरस गुण पीन ॥
॥ ४ ॥ जे नवियण सेवे सदा, नावे स्थानक वीश॥
ते तीरथंकर पद लहे, वंदे सुर नर ईश ॥ ५ ॥

.॥ ढाल ॥ श्री अरिहंत पद सिधपद ध्यावो, प्रव
चन आचारिज गुण गावो॥ स्थविरपंचम पद पुनरु
वऊाया, तपसि नाण दंसण मन नाया ॥ १ ॥

॥ उलालो ॥ मननाव विनया,वश्यका मल, शील
किरिया जाणियें ॥ तप विविध उत्तम, पात्र वेया,
वच्च समाधि वखाणियें ॥ हित कर अपूरव, नाण
संग्रह, धरो मन सुजगीश ए ॥ श्रुत नक्ति पुनि,
तीरथ प्रनावन, एह थानक वीश ए ॥ २ ॥

॥ ढाल ॥ ए थानक वीश जग जयकारा, जपतां
लहीयें जिनपदसारा ॥ करम निकंदै विसवा वीशें,
नाख्यां जगतारक जगदीशें ॥ ३ ॥

॥ उलालो ॥ जगदीश प्रथम, जिणंद जगगुरु,
चरम जिनवरजी मुदा ॥ नव तीसरे पद,सकल सेवी,
लही जिनपति संपदा ॥ बावीश जिनवर, सकल सु

खकर, इंद जसु गुन गाइयें ॥ इग दोय त्रिण, सहु पद जपीनें, तीर्थपति पद पाइयें ॥ ४ ॥

॥ दोहा ॥ अरिहंतादिक पद सदा, नजियें तप करि शुद्ध ॥ अति निर्मल शुन योगता, करिके तसु गुण लुद्ध ॥ १ ॥ विमल पीठ त्रिक तदुपरें, ठवियें जिनवर वीश ॥ पूजन उपगरण मेलि करि, अरचीजें सुजगीश ॥ २ ॥ एक एक ए पद तणो, इव्यपूज परकार॥ पंच अष्टविध जाणियें, सत्तर इगविस सार ॥ ३ ॥ अष्ट जातिना कलश करि, विमल जलें नर पूर ॥ पूजो नवियण सहु मुदा, होय सकल ऽःख दूर ॥ ४ ॥ सोहे सहु परमेष्टिमें, जिनवरपद अनि राम ॥वेद निक्षेपे समरियें, वधते शुन परिणाम॥ ५

॥ राग देशाख ॥ पूर्वमुखसावनं ॥ ए देशी ॥

॥ सकल जगनायकं, परमपददायकं, लायकं जिन पदं विमलज्ञानं ॥ चतुरधिकतीस, अतिशय अमलबा रगुण, वचन पणतीस गुणमणिनिधानं ॥ अइयो ॥ १ ॥ सुखकरण जिन चरण, पद्मसेवित सदा, अ मर सुर असुर नर हृदयहारी ॥ एह जिनवर तणी, आण पूरण सदा, दाम जिम जगतजन शिरसि धा री॥अइयो॥२॥जिनपपददरसं,पारस फरसतें हुवे, प्रग

टनिज रूप परिणति विलासं ॥ तजिय बहिरातम, गिरिसारता नवि लहे, अनुपमं आत्मकांचन प्रकाशं ॥अइयो ॥ ३ ॥ हुवइ जिनराज पद, जांप रवि किरणतें, तुरत बहु दुरित नर तिमिर नाशं ॥ घन चिदानंद, वरकंदघन नवि लहे, तीर्थंकरचरण कम लाविलासं॥अइयो॥ ४॥वर विबुध मणिलही,काच लघु शकलकों, ग्रहण करिवा कवण कर पसारे ॥ तिम लही जिन चरण, शरण शुभ योगसें, अवर सुरसर ण कुण हृदय धारे ॥ ५ ॥ प्रभु तणे पंच,कल्याण के रे दिनें, प्रगट तिहुं लोकमें हुइ उजेरो ॥ नविक देव पाल, श्रेणिक प्रमुख जिन नमी, बांधियो गोत्र जिन राज केरो ॥ ६ ॥ जेह त्रिण काल, नित नमें जिन हरखशुं, तेह भव जल तरे जनम त्रीजें ॥ अधिक भवं यदि करे, तदपि निश्चय करी, सप्त वलि अष्ट भव करीय सीझे ॥ ७ ॥

॥ काव्यं ॥ णमो णंतविन्नाण सद्दंसणाणं, सयाणं दिया सेस जंतूगणाणं ॥ भवंभोज विछेयणे वारणाणं, णमो बोहियाणं वराणं जिणाणं ॥ ८ ॥ ॐह्रीं श्रीं अर्हद्भ्यो नमः ॥ इति जिनेंद्र पूजा ॥ १ ॥

॥ अथ द्वितीय श्रीसिद्धपद पूजा ॥

॥ दोहा ॥

॥ तनु त्रिजागके घनमानें घन अवगाहन जास ॥
विमल नाण दंसण किर्ण लोकालोक प्रकाश ॥ १ ॥
अविनाशी अप्रमित अचल, पदवासी अविकार ॥
अगम अगोचर अज अज, नमो सिद्ध जयकार॥२

॥ राग सोरठ ॥ कुंदकिरणशशि ऊजलो रे देवा॥ए देशी॥

॥ अनुजव परमानंदशुं रे वाला, परमातम पद वंदो रे ॥ करम निकंदी वंदीने रे वाला, जवि जिनपद चिरनंदो रे ॥ १ ॥ गगन पएसंतर वली रे वाला, समयांतर अणफरसी रे ॥द्रव्य सगुण परजाय ना रे वाला, एक समय विध दरसी रे ॥ २ ॥ एक समय ऋजुगति करी रे वाला, जए परमपद गामी रे ॥ जांगे सादि अनंतमां रे वाला, निरुपाधिक सुख धामी रे ॥ ३ ॥ अखिल करममल परिहरी रे वाला, सिद्ध सकल सुख कारी रे॥विमल चिदानंद घन थया रे वाला, वर इकतिस गुण धारी रे ॥ ४ ॥ उत्पन्न ता वलि विगमता रे वाला, ध्रुवता त्रिपदी संगें रे॥ प्रजुमें, अनंत चतुष्कता रे वाला, सोहे शमक्रम जंगें रे ॥ ५ ॥ पनर जेदें ए सिद्ध थया रे वाला, सह

ज्ञानंद स्वरूपी रे ॥ परम ज्योतिमें परिणंम्या रे वाला, अव्याबाध अरूपी रे ॥ ६ ॥ जिनवर पद प्र णमे सदा रे वाला, एहनें दीक्षा अवसरें रे ॥ तिण प्रभुपद गुणमालिका रे वाला, कंठें धरियें सुपरें रे ॥ ॥ ७ ॥ हस्तिपाल नृप जगतिशुं रे वाला, सिद्ध परम पद जजिनें रे ॥ पद श्री जिन हरखें लह्युं रे वाला, परगुण परणति तजिनें रे ॥ ८ ॥

॥ काव्यं ॥ लोगग्गभागोपरि संठियाणं, बुद्धाणसिद्धा ण मणिंदियाणं ॥ निस्सेस कम्मक्खयकारगाणं ॥ णमो सया मंगल धारगाणं ॥ ए ॥ ॐ ह्रीं श्री सिद्धेभ्यो नमः ॥ २ ॥

अथ तृतीय प्रवचनपद पूजा ॥

॥ दोहा ॥

पद तृतीय प्रवचन नमो, ज्युं न भमो संसार ॥ गमो कुमति परिणमनता, दमो करण जयकार ॥ १ ॥ जैसें जलधरवृष्टितें, अखिल फलद विकसाय ॥ तैसें प्रव चनभक्तितें, शुभ परिणति उल्लसाय ॥ २ ॥

॥ श्रीराग ॥ जिनगुणगानं श्रुत अमृतं ॥ ए देशी ॥

॥ प्रवचन ध्यानं सुखकरणं, परिहरियें सहु वि षय विकारं, करियें प्रवचन आचरणं ॥ प्र० ॥ १ ॥ सप्त भंगिभूषित ए प्रवचन, स्यादवाद मुद्राभरणं ॥

सप्त नयात्मक गुणमणि आगर, बोधबीज उतपति करणं ॥ प्र० ॥ २ ॥ जैसें अमृत पान करणतें, हुवे सकलविषसंहरणं ॥ तैसे प्रवचन अमृत पानें, कुमति हलाहल प्रविसरणं ॥ प्र० ॥३॥ प्रवचनको आधेय ए कहीयें, सकलसंघ तसु अधिकरणं ॥ तिण ए संघ चतुर्विध प्रवचन, ए पद अखिल कलुषहरणं ॥ ॥ प्र० ॥ ४ ॥ यदि भविजन तुम ए चाहतु है, सुगति रमणिकौं वशकरणं ॥ करण तीन इक करि तद करियें, प्रवचन पद समरण धरणं ॥ प्र० ॥ ५ ॥ जिनवरजी पण ए तीरथनें, प्रणमे मध्यसमवसरणं ॥ भवजल तारण तरणिसमानं, ए तीरथ अशरण शरणं ॥ प्र० ॥ ६ ॥ जिम भरतेसर संघ भगति करि, लहियुं पुण्यफलाचरणं ॥ चक्री पद अनुभवि वलि शिवपद, लीध करिय कर्म निर्जरणं ॥ प्र०॥ ॥ ७ ॥ नरपति संभवजिन हरषें करि, आराधी प्रवचन चरणं ॥ करम निकंदी थया जगदीसर, जिनपरमा उर आभरणं ॥ प्र० ॥ ८ ॥

॥ काव्यं ॥ अणंतसंसुद्ध गुणायरस्स, दुरकंधयारुग्गदिवायरस्स ॥ अणंतजीवाण दयागिहस्स, णमो णमो संघचउव्विहस्स ॥ए॥ ॐह्रींश्री प्रवचनायनमः॥ ३

॥ अथ चतुर्थ आचार्य पद पूजा ॥

॥ दोहा ॥

॥ पद चतुर्थ नमियें सदा, सूरीसर महाराज॥सो हम जंबू सारिसा, सकल साधु सिरताज ॥ १ ॥ सा रण वारण चोयणा, पडिचोयण करतार ॥ प्रवच नकज विकसायंवा, सहस किरण अवतार ॥ २ ॥

॥ राग रामग्री ॥ गात्र लूहे ॥ ए देशी ॥

॥ आचारिज पद ध्याइयें रे वाला, तास विमल गुण गाइयें ॥ पाइयें हांहो रे वाला पाइयें ॥ जिन पति पद जगशिर तीलो रे ॥ आ० ॥ १ ॥ जिन शा सन अजुवालता रे वाला, सकलजीव प्रतिपालतां ॥ पालतां हां० ॥ पालतां चरण करण मग चालतां रे ॥ आ० ॥२॥ सूरि सकल गुण सोहता रे वाला, सुरनर मन मोहता ॥ मोहता हां० ॥ नवियणनें पडिबोह तां रे ॥ आ० ॥ ३ ॥ पंचाचार विराजिता रे वाला, सजल जलद जिम गाजता ॥ गाजता हांहो०॥ सूरि सकल सिर गाजता रे॥आ०॥४॥ उपदेशामृत वरसता रे वाला, डुरित ताप सहु निरसता ॥ निरसता हां हो० ॥ परमातम पद फरसता रे ॥ आ० ॥५॥ धरम धुरंधरता धरा रे वाला, जग बांधव जग हितकरा ॥

हित करा हांहो०॥स्वपर समय विद्रु गणधरा रे ॥आ०
॥ ६ ॥ पद श्रीजिन हरषें ग्रह्यो रे वाला, सूरीसर पद
तव वह्यो ॥ तव वह्यो ॥ हांहो० ॥ पुरु षोत्तम नृप
शिव लह्यो रे ॥ आ० ॥ ७ ॥

॥ काव्यं ॥ कुवादि केली तरु सिंधुराणं, सूरीस
राणं मुनिबंधुराणं ॥ धीरत्तसंनक्किय मंदराणं, णमो
सया मंगलमंदिराणं ॥ ८ ॥ ॐह्रीं श्री आचार्येभ्यो
नमः ॥ इति ॥ ४ ॥

॥ अथ पंचमस्थविर पद पूजा ॥ दोहा ॥

॥ द्विविध थिविर जिनवर कह्या, द्रव्यभाव परका
र ॥ लौकिक लोकोत्तर वली, सुणियें भेद विचार ॥
॥ १ ॥ जनकादिक लौकिक थिविर, लोकोत्तर अण
गार ॥ पंचम पदमें जाणियें,द्वितिय थिविर अधिकार॥

॥ राग सारंग ॥ नित नमियें थिविर मुनीसरा ॥ पं
चमहा व्रत धारक वारक, कुमति जगत जन हित
करा ॥ नि० ॥ १ ॥ संयमयोगें सीदत बालक, ग्ला
नादिक सहु मुनिवरा ॥ एहनें उचित सहाय दिय
ण ते,वारे एहनां दुःखभरा ॥ नि० ॥ २ ॥ पर्यय व
य श्रुत त्रिविध ए थिविरा,वीस रु साठ समो परा ॥
वयधर समवायाधिक पाठकं,एह थिविर गुण आगरा

॥ नि०॥ ३ ॥ त्रीजे अंग कह्या दस थिविरा, रत्नत्रयी ना गुणधरा ॥ ते इह निर्मल भाव ग्रहेवा, भविक सरोज दिवाकरा ॥ नि० ॥ ४ ॥ क्षीरजलधिसम अतिहि गंभीरा, सुरगिरि गुरु धीरज धरा ॥ शरणागत तारणता धारा, ज्ञानविमल जल सागरा ॥ नि० ॥ ॥ ५ ॥ श्रुत तप धीरज ध्यान धरणतें, इत्यादिक ज्ञाता वरा ॥ तेह स्वरूपरमण कह्या थिविरा, नही य.धवल केशांकुरा ॥ नि० ॥ ६ ॥ एह थिविर-पद सेवी भगतें, पद्मोत्तर वसुधेशरा ॥ पद श्री जिन हर खें तिण लहियुं, मुनिवर कुमुद निशाकरा ॥ नि० ॥ ७ ॥

॥ काव्यं ॥ सम्मत्तसंयम, पतित भविजन, अतिहि थिर करता भला ॥ अवगुण अदूषित, गुण विभूषित, चंद्र किरण समुज्ज्वला ॥ अष्टाधिकादश सहस शीलां ग, रथ रुचिर धाराधरा ॥ भव सिंधु तारण, प्रवर कारण, नमो थिविरमुनीश्वरा ॥ ८ ॥ ॐह्रींश्री स्थ विराय नमः ॥ इति ॥ ५ ॥

॥ अथ षष्ठ उपाध्याय पद पूजा ॥ दोहा ॥

॥ प्रवरनाण दरिसण चरण, धारक यतिधर्म सार ॥
समितिपंच त्रण गुप्तिधर, निरुपम धीरज धार ॥ १ ॥
चरणं कमल जेहनां नमे, अहोनिश सुर नर राय ॥

जडता गिरि दारण कुलिश,जय जय सिरि उवझाय॥२॥
॥ राग भैरव ॥ पंचवरणी अंगी रची ॥ ए देशी ॥
॥भाव धरी उवझाया वंदो,भविजनने विजयकारी॥
श्री उवझाय परमपद वंदी, लहो जिनपद अतिशय धारी॥भा०॥१॥कुमती मदतरु भंजन सिंधुर, सुमतिकंद घन अवतारी ॥ अंग दुवादस भणे भणावे, शिष्य भणी चित हित धारी ॥ भा० ॥ २ ॥ सकल सूत्र उपदेश दियणतें, वाचक अति विमलाचारी ॥ भवि त्रिजे अमृत सुख पावे, सुर असुरेंद मनोहारी ॥ भा० ॥३॥हय गय वृष पंचानन सरिखा,करमकंद वर तरवारी ॥ वासुदेव वासव नृप दिनकर, विधु भंडारी तुला धारी ॥ भा० ॥ ४ ॥ जंबू सीता नदिकांचन गिरि, चरमजलधि उपम भारी ॥ ए उपम बहुश्रुतनी जाणो, उतराध्ययनें कहि सारी ॥ भा० ॥ ५ ॥ अमल पंच विंशति गुण मणि निधि, सकल भुवन जन उपगारी ॥ संशय तिमिर हरण वासर मणि, पाप ताप आतप वारी ॥ भा० ॥ ६ ॥ प्रवर संख पय भरियो सोहे, तिम ए ज्ञान चरण धारी ॥ महेंद पाल पाठक पद सेवी, लहियो जिन पद विजितारी ॥ भा० ॥ ७ ॥
॥ काव्यं ॥ सबोहि बीजंकुर कारणाणं, णमो ण

मो वायग ,वारणाणं ॥ कुबोहि दंती हरिणेसंराणं, विग्घोघ संताव पयोहराणं ॥ ८ ॥ ॐ ह्रीं श्री उपाध्यायेभ्यो नमः ॥ इति ॥ ६ ॥

॥ अथ सप्तम साधुपद पूजा ॥ दोहा ॥

॥ जाणे जिनवाणी सरस, स्यादवाद गुणवंत ॥ मुनि कहियें शिव पंथनें, साधे साधु कहंत ॥ १ ॥ शमता रस जल झीलता, विशदानंद सुरूप ॥ तिण पाम्या पद सप्तमे, नमो नमो मुनि भूप ॥ २ ॥

॥ राग गुंभ मिश्रित भीम मल्हार ॥ मेघ बरसे ॥

॥ भरी पुष्प बादल करी ॥ ए देशी ॥

॥ भक्ति धरि सातमे, पद भजो मुनिवरा, सुखकरा विजित इंद्रिय विकारा ॥ गुण सतावीश, भूषण करी शोभिता, क्षोभिता विकट क्रम सुभट सारा ॥ भ० ॥ १ ॥ चरण सित्तरि परम, करण सित्तरि धरा, शिव करण नाण किरिया प्रधाना ॥ प्रतिदिनें दोष, आहारना वरजिता, सप्त चालीश यति धर्म निधाना ॥ भ० ॥ २ ॥ मदन मद भंजता, कुमति जन गंजता, भक्त जन रंजता क्षांति भरिया ॥ सुमति धरिया सदा, चरण परिया जना, तारिया ज्ञान गंभीर दरिया ॥ भ० ॥ ३ ॥ तृणमणी सम गिणे, चतुर विध

धर्मना, परम उपदेश दायक उदारा ॥ बहिरभ्यंतर भिदा, बारविध अति कठिन, तप तपे सकल जीव अभयकारा ॥ भ० ॥ ४ ॥ वलि अगवीश, मनहरण गुण लब्धि निधि, सातमे ठठ गुणगण वसिया ॥ सप्त नय धारका, प्रवरजिन आगम्या, धारका स्वगुण परिणमन रसिया ॥ भ० ॥ ५ ॥ पंच परमाद, कह्यो लताकुल महा, पार संसार सागर जिहाजा ॥ विविध नव वाडि युत, शील व्रतके धरा, मधुर निज वाणि, रंजित समाजा ॥ भ० ॥ ६ ॥ कोडि नव सहस, थुणिये महामुनि वरा, वीरभइ जिम करिय साधु सेवा ॥ परम पद जिन हर्ष, सुं ग्रह्यो तसु तणा, चरण कज युग नमे सकल देवा ॥ भ० ॥ ७ ॥

॥ काव्यं ॥ संतक्रिया सेसपरीसहाणं, निस्सेस जीवाण दयागिहाणं ॥ सन्नाण पज्जायतस्सवणाणं, णमो णमो होइ तवोधणाणं ॥ ८ ॥ ॐह्रीं श्री सर्व साधुभ्यो नमः ॥ इति ॥ ७ ॥

॥ अथ अष्टम श्री ज्ञानपद पूजा ॥ दोहा ॥

॥ विमल नाण वर किरण किय, लोकालोक प्रकाश ॥ जीत लही निज तेजसें, जिण अनंत रवि भास ॥ १ ॥ सहु संशय तम अपहरे, जय जय

नाण दिणंद ॥ नाण चरण समरणथंकी, विलयं होय दुख दंद ॥ २ ॥

॥ राग घाटी ॥ मेरो मन बस कर लिनो,

॥ जिनवर प्रभु पास ॥ ए देशी ॥ नावें ज्ञान वंदन करियें, शिव सुख तरु कंद ॥ जिनचन्द्र पद गुण धरियें, वरियें परम आनंद ॥ ना० ॥ १ ॥ मतिनाण श्रुत पुनरवधि, मनपरजय जाण ॥ ना० ॥ लोकालोक नाव प्रकाशी, वर केवल नाण ॥ ना० ॥ २ ॥ पंच ए इकावन नेदें, कह्यो जिनवर नान ॥ जगजीव जडता छेदे, ज्ञानामृत रस पान ॥ ना० ॥ ३ ॥ बिनज्ञान कीधी किरिया, होय तसु फल ध्वंस ॥ नक्ष्या नक्ष प्रगट एं करियें, जिम पय जल हंस ॥ ना० ॥ ॥ ४ ॥ वरनाण सहित सुकिरिया, करी फल दातार ॥ हुवो ज्ञान चरण रसीला, लहो नवजलपार ॥ ॥ ना० ॥ ५ ॥ ज्ञानानंद अमृत पीधुं, नरतेसरराय ॥ पागंतरें ॥ मरुदेवी माय ॥ तिणंसें अमृत पद लीधुं, सुरपति गुण गाय ॥ ना० ॥ ६ ॥ सेवी ज्ञान जयंत नरेशें, नये जिन महाराज ॥ सोहे ज्ञान ए त्रिभुवनमें, सहु गुण शिरताज ॥ ना० ॥ ७ ॥

॥ काव्यं ॥ ठद्दवपज्जाय गुणुक्करस्स, सया पया

मी करणोहुरस्सं ॥ मिछत्त अन्नाण तमोहरस्स, णमो णमो नाणदिवायरस्स ॥ ८ ॥ ॐह्रीं श्री ज्ञानाय नमः

॥ अथ नवम दर्शनपद पूजा ॥ दोहा ॥

॥ दरिसण आश्रय धर्म्मनुं, एहनां षट उपमान ॥ दरिसण विण नहि चरणचंद, उत्तराध्ययनें जाण ॥ ॥१॥ जिन दरिसण फरस्युं नलुं, अंतर मुहुरतमान ॥ अर्द्ध पुगल परियट रहे, तसु संसार वितान ॥२॥इति॥

॥ राग कामोद ॥ चंपक केतक मालती ॥ ए देशी ॥ जिणदरिसण मुझ मनवस्युं ए, अस्यो मन वस्युं ए, उपजत परमआनंद ॥ जिनदरिसण दरिसण दियें, विमल नाण तरुकंद ॥ १ ॥ दरिसण मोह रिपु जीतिया ए ॥ अ० ॥ वरदरिसण उल्लसंत ॥ दरिसण घट परगट हुवां, नवियण नव न नमंत ॥२॥ जिनवर देव सुगुरु व्रती ए॥ अ० ॥ केवलि कथित जिनधर्म ॥ तीन तत्त्व परिणति रमे, ते दरिसण करे शर्म ॥ ३ ॥ जिनप्रनु वचनोपरि सदा ए ॥ अ० ॥ थिर सरद हण धरंत ॥ इण लक्षणतें जाणियें, समकितवंत महंत ॥ ४ ॥ इग डुग ति चउ शर दस विहा ए, सत्तसवि नेदविचार ॥ अ० ॥ वलि पररीति समकित नण्यों, इव्य नाव परकार ॥ ५ ॥ इत्यें जिन दरि

सण कह्युं ए॥ अ० ॥ नावें समकित सारं॥ ड्व्यत दरिसण नावतो, दरिंसण कारण धार ॥ ६ ॥. ड्व्य दरिसण यदिगत वली ए ॥ अ० ॥ तदपि उत्तर हित कार ॥ सघ्यंनव जिनदरिसणें, पायो दरिसण सार ॥ ७ ॥ दरिसण विण किरिया हता ए ॥ अ० ॥ अंक विना जिम बिंडु ॥ वलि हणियो विन चंड्रिका, वासरमें जिम इंडु ॥ ८ ॥ हरिविक्रम नृप. सेवतो ए ॥ अ०॥ दरिसणं पद अनिराम ॥ पद श्रीजिन हरषें धर्युं, वधते शुन्न परिणाम ॥ ए ॥

॥ काव्यं ॥ अणंत विन्नाण सुकारणस्स, अणंत· संसार विदारणस्स ॥ अणंत कम्मावलि धंसणंस्स, णमो णमो निम्मलदंसणस्स ॥१०॥ ॐह्रीं श्री दर्शी नायनमः ॥ इति ॥ ए ॥

॥ अथ दशम विनय पद पूजा ॥ दोहा ॥

॥ विनय नुवन रंजन करे, विनयें जस विसतार ॥ विनय जीव नूषित करे, विंनयें जयजयकार ॥ ॥ १ ॥ विनय मूल जिनधर्मनुं, विनय ज्ञानतरु कंद ॥ विनय सकलगुण सेहरो, जय जय विनय सनंद ॥२॥

॥ राग सामेरी॥ पूजोरी माई, जिनवर अंग सुगंधें ॥ ए.देशी ॥ ध्यावोरी माई विनय दशम पद ध्यावो॥ पंच

भेद दश विध तेरस विध, बावन भेद गणेशे ॥ ढासठ भेद कह्या आगममें, विनयतणा सुविशेषें ॥ ध्या० ॥ ॥ १ ॥ तीर्थंकर सिद्ध कुल गण संघा, किरिया धर्म वरनाणा ॥ नाणी आचारिज मुनि थविरा, पाठक गणि गुण जाणा ॥ ध्या० ॥ २ ॥ए अरिहादिक तेरस पदनो, विनय करे जे भावें ॥ ते तीर्थंकर पद अनुभविनें, अमृतपद सुख पावे ॥ ध्या० ॥ ३ ॥ जिम कंचनमें मृदुगुण लाभे, नहीय कालिमा पावे ॥ तिण ए सकल धातुमें उत्तम, नाम कल्याण कहावे ॥ ध्या० ॥ ४ ॥ तिम विनयीमें छे मृदुता गुण, कुमति कठिनता नासे ॥ कृष्णादिक लेश्यानी मलिनता, जाये विनय गुण भासे ॥ ध्या० ॥५॥ दोय सहस अरु अधिक चिहुत्तर, देववंदन निरधारो ॥ गुरु वंदन विधि च्यारशें बाणुं, भेद करी उर धारो ॥ ध्या० ॥ ६ ॥ तीर्थंकरादिकनो मन रंगें, विनय चरण शुभ ध्यायौ॥ ॥ धन नामा भविजन शुभयोगें, पद जिन हर्षे पाया यो ॥ ध्या० ॥ ७ ॥

॥ काव्यं॥आणंदिया सेसजगज्जणस्स,कुंदिंदु पादामलताचणस्स ॥ सुधम्म जुत्तस्स दयासयस्स, णमो णमो सव्विणया लयस्स॥८॥ ॐ ह्रीं श्री विनयाय नमः॥

॥ अथ एकादश चारित्र पद पूजा ॥

॥ दोहा ॥

॥ इग्यारमपद नित नमुं, देशसरव चारित्र ॥ पंक मलिनता दुर करि, चेतन करे पवित्र ॥ १ ॥ एह चरण सेवन करे, रंकथकी सुरराय ॥ तीन जगत पति पद दिये,जंसु सुर नर गुण गाय ॥ २ ॥

॥ राग सारंग ॥ बावन चंदन घसिकु० ॥ ए देशी ॥ चरण सरण मुझ मन हस्यो, सुख करण हरण घन पाप ए ॥ हांहो रे वाल्हा ॥ एह चरण जलधर हरे, अज्ञान तरुणतर ताप ए ॥ हां० ॥ १ ॥ आठ कषाय निवारतां,देशविरति प्रगट हुवे खास ए ॥ ॥ हां० ॥ चार कषाय निवारिया,समविरति लहे गुण वास ए ॥ हां० ॥ २ ॥ इगवासर सेव्यो थको, शुद्ध सर्व संवरचारित्र ए ॥ हां० ॥ परमानंद घन पद दिये, सुरलोक जनित सुखचित्र ए ॥ हां० ॥ ३ ॥ भवभय तरुगण छेदवा, ए संयमं निशित कुठार ए ॥ ॥ हां० ॥ ज्ञान परंपर करण छे, अमृत पदनो हित कार ए ॥ हां० ॥ ४ ॥ चरण अनंतर करण छे, निरवाण तणो निरधार ए ॥ हां० ॥ सरव विरति शुद्ध चरणसें, पामे अरिहंत पद सार ए ॥ हां० ॥

॥ ५ ॥ वरस चरण परजायमें, अनुत्तर सुख अति क्रम होय ए ॥ हां० ॥ सतर भेद चारित्रंना, कहिया जिन आगम जोय ए ॥ हां० ॥ ६ ॥ देशथी सम संयम विषे, उज्जलता अनंत गुण भाज ए ॥ हां० ॥ अरुण देव सेवी चरणनें, भये जगगुरु जिन महाराज ए ॥ हां० ॥ ७ ॥ इति ॥

॥ काव्यं ॥ कम्मोघकंतार दवानलस्स, महोदयानंद भयाजलस्स ॥ विन्नाण पंकेरुहकाणणस्स, णमो चरित्तस्स गुणापणस्स ॥ ८ ॥ ॐ ह्रीं श्री चारित्राय नमः ॥ इति ॥ ११ ॥

॥ अथ द्वादश ब्रह्मचर्यपद पूजा ॥

॥ दोहा ॥ सुरतरु सुरमणि सुरगवी, काम कलश अवधार ॥ ब्रह्मचर्य इण सम कह्युं, कामित फलदातार ॥ १ ॥ जिम जोतिसियां रजनिकर, सुरगणमें सुरराय ॥ तिम सहु व्रत शिर सेहरो, ब्रह्मचरिज कहिवाय ॥ २ ॥

॥ राग काफी जंगलो ॥ भलो प्रभुगुण वाल्हा हो ॥ ए देशी ॥ भवभयहरणा शिवसुखकरणा, सदा भजो ब्रह्मचारी हो ॥ भ० ॥ शील विबुध तरु प्रतिपालनकों, कहि जिनवर नववारी हो ॥ भ० ॥ १ ॥ दि

ब्यौदारिक करण करावण, अनुमति विषय प्रकारा
हो ॥ ज० ॥ त्रिकरण जोगें ए परहरियें, नजियें
नेद अढारा हो ॥ ज० ॥ २ ॥ कनक कोडिनुं दान
दिये नित, कनक चैत्य करतारा हो ॥ ज० ॥ एहेथी
ब्रह्मचरिज धारकनुं, फल अगणित अवधारा हो ॥
॥ ज० ॥ ३ ॥ सहस चोरासी श्रवण दान फल, श
मुब्रह्मव्रतफल सारा हो ॥ ज० ॥ विजयशेठ विजया
शेठाणी, उनय पक्ष ब्रह्मधारा हो ॥ ज० ॥ ४ ॥
नये सुदर्शन शेठ शीलसें, मुगतिवधू नरतारा हो ॥
॥ ज० ॥ सहस अढार शीलांगरथ धारा, धार करो
निसतारा हो ॥ ज० ॥ ५ ॥ सिंहादिक वसुनय तरु
नंजन, सिंधुर मद मतवारा हो ॥ ज० ॥ कलहका
रि नारद रुषि सरिखे, तस्यो नवजलधि अपारा हो ॥
॥ ज० ॥ ६ ॥ पच्चरकाण विरति नहि एहमें, ए ब्रह्म
व्रत उपगारा हो ॥ ज० ॥ सकल सुरासुर किन्नर न
रवर, धरिय जगति हितकारा हो ॥ ज० ॥ ७ ॥ ब्र
ह्मचरिज व्रतधर नरवरके, प्रणमे चरण उदारा हो ॥
॥ ज० ॥ दशमे अंगें जणियो नरवर्मा, नरपति गुण
आधारा हो ॥ ज० ॥ ८ ॥ ब्रह्मचरिजव्रत पाल लह्युं

पद, जिनहरषें जयकारा हो ॥ पागंतरे ॥ जिनहर्षें नवतारा हो ॥ न० ॥ ९ ॥

॥ काव्यं ॥ सग्गापवग्गग्ग सुहप्पयस्स, सुनिम्मला णंत गुणालयस्स ॥ सव्वया नूसण नूसणस्स, णमो हि सीलस्स अदूसणस्स ॥ १० ॥ ॐह्रींश्री ब्रह्मचर्याय नमः ॥ इति ॥ १२ ॥

॥ अथ त्रयोदश क्रियापद पूजा ॥

॥ दोहा ॥ करम निरजरा हेतु हे, प्रवर क्रिया गुण खाण ॥ जिनशासननी स्थिति रही, किरियारूपें जाण ॥ १ ॥ नवनमांहि किरिया मही, सकल शुद्ध विवहार ॥ प्रवरनाण दरिसण तणो, शुद्धकिरिया सिणगार ॥ २ ॥

॥राग मालवी गोडी॥सब अरति मथनमुदार धूपं ॥ ए देशी ॥ शुनध्यान किरिया हृदय धरीने, धर्म सकल उरधार रे ॥ आर्त्त रौद्रनी हेतु किरिया, अशुन पणवीस वार रे ॥ शु० ॥ १ ॥ ज्ञानवंत अशस्त्र नट हे, किरिया शस्त्र वतंस रे ॥ सुनटनाणी क्रियाशस्त्रें, किरियक्रम अरिध्वंस रे ॥ शु० ॥ २ ॥ ज्ञानसेंती वदे शिव यदि,तेरमे गुणगण रे ॥ एकनाणें करि जिनेसर, किमु न लहे निरवाण रे ॥ शु० ॥ ३ ॥ जि

नप शैलेशीकरण करि, चउदमे गुणगण रे ॥ सरस संवर चरण करणें, लहे पद निरवाण रे ॥ शु० ॥ ॥ ४ ॥ ए अनंतर अमृत कारण, कह्यों जिनवर जाण रे ॥ सरवसंवर चरण किरिया, न शिव इण बिणु जाण रे ॥ शु० ॥५॥ एक नाणें इक क्रियामें, न शिव वितरण शक्ति रे ॥ कहे जिनवर उनय योगें, लहे नविजन मुक्ति रे ॥ शु० ॥ ६ ॥ गरल मिश्रित सरस नोजनं, अशुन परिणति धार रे ॥ अमृत संयुत ले ह नोजन, रुचिर परिणति कार रे ॥ शु० ॥ ७ ॥ ज्ञानसहिता तेम किरिया, करि करे निसतार रे ॥ ज्ञानविणु किरिया न दीये, मनोगत फलसार रे ॥ शु० ॥८॥ज्ञान परिणत रमी किरिया, तेह किरिया सार रे॥ नयो हरिवाहन जिनेसर, शुद्ध किरिया धार रे ॥शु०॥ ॥ काव्यं ॥ विशुद्ध सद्धान विनूसणस्स, सुलद्धि संपत्तिसुपोसणस्स ॥ णमो सदाणंतगुणप्पदस्स, णमो णमो सुक्किरियापदस्स ॥ १० ॥ ॐ ह्रीं श्री क्रियायै नमः

॥ अथ चतुर्दश तप पद पूजा ॥

॥दोहा॥शमतारस युत तपरुचिर, नणियो जिन जग नान ॥ शिवसुर सुख चंदनफलद, नंदनविपिन समानं॥ १ ॥सघन करम कानन दहन, करनविमल तप

जान॥विपिन धूमं केतन समो,जय तप सुगुणनिधान

राग कल्याण ॥ तेरी पूजा बनी तेरसंमी ॥ मेरी लगी लगन तप चरणें ॥ सकल कुशलमें प्रथम कुशल ए, डुरित निकाचित हरणें ॥ मे० ॥ १ ॥ जैसे गणधरकी जिनचरणें, चातककी जल धरणें ॥ मे० ॥ जैसी चक्रवाककी अरुणें, चकोरकी हिम किरणें ॥ मे० ॥ २ ॥ जिनवर पण तद्भव शिव जाणे, त्रण चउनाण सकरणें ॥ मे० ॥ तोपि सुकोमल करण सरणनें, उवय कठिन तप करणें ॥ मे० ॥ ३ ॥ कपट सहित तपचरणधरणतें, वांछित फल नवि तरणें ॥ मे० ॥ जित ए दंन रहित तपपद के, सुरपति गणगुण वरणें ॥ मे० ॥ ४ ॥ पीठ महा पीठमुनि मल्लीजिन, पूरव नव तप सरणें ॥ मे० ॥ रहिया तदपि कपट नवि छम्युं, नये स्त्रीगोत्राचरणें ॥ मे० ॥ ५ ॥ दृढप्रहारी पांमव घनकरमी, छंम्या क रमावरणें ॥ मे० ॥ तपसें शोन लही त्रिनुवनमें, के वल कमलानरणें ॥ मे० ॥६॥ लाख अग्यारह अंसी हजारा, पंच सयस दिनखिरणें ॥ मे० ॥ मासखमण करि नंदन मुनिवर, पाम्यो फल शिव धरणें ॥ मे० ॥ ॥ ७ ॥ तप करियुं गुणरयण संवत्सर, खंधक शमंता

दरणें ॥ मे० ॥ चउदसहस मुनिमें कह्यो अधिको, धन्नो तप आचरणें ॥ मे० ॥ ८ ॥ बहिरभ्यंतरभेदें ए तप, बारभेद अधिकरणें ॥ मे० ॥ वसनें कनककके तु पाम्यो पद, जिन हरषें नवतरणें ॥ मे० ॥ ९ ॥

॥ काव्यं ॥ लब्धीसरोजावलितावणस्स, सरूव संलग्ग सुपावणस्स ॥ अमंगलानोकुहडुहवस्स ण मो णमो निम्मलसत्तवस्स ॥ १० ॥ ॐ ह्रीं श्री तप से नमः ॥ १४ ॥ इति ॥

॥ अथ सुपात्रदानाधिकारेपंचदश गौतम पद पूजा ॥

॥दोहा॥गौतम गणधर पनरमे,पद सेवो सुप्रसन्न॥ वलि सहु जिन गणधर नमो, चौदेशें बावन्न॥१॥दा नसकल जग वश करे, दान हरे डुरितारी ॥ मनवां छित सहु सुख दिये, दान धरम हितकारि ॥ २ ॥

॥ राग सोरठ ॥ तेरी प्रीति पिछानी हो प्रभुमें ॥ ए देशी ॥ पनरम पद गुण गानां हो भवि॥पनरम०॥ भा वधरी करियें मन रंगें, परम सुपात्रें दानां ॥ हो भ वि पनरम० ॥ १ ॥ पात्र कह्या ड्व्य भाव डुभेदें, ड्व्यलब्धन ए जानां॥ हो भवि.प० ॥ सर्वोत्तम उत्तम हुवे भाजन, रतनकनक रूपानां ॥ हो भवि प०॥२॥ मध्यम पात्र कहीजें एहवा, ताम्र धातु निपजांनां ॥

॥ हो जवि.प० ॥ पात्र लोहादिक अपर जातिनां, तेह जघन्य कहानां ॥ हो जवि प० ॥ ३ ॥ जावपा त्रनुं लक्षन कहियें, सुणियें सुगुण सयानां ॥ हो जवि प०॥ पंचम चरणधरें वलि अरनें, क्षीणमोह गुणठा णा ॥ हो.जवि प० ॥ ४ ॥ रत्नपात्र सम ते सर्वोत्त म, पात्र कह्यां जिनजाना ॥ हो जवि प० ॥ पवर नाण किरियाधर मुनिवर, लानालान्न समाना ॥ हो जवि प० ॥ ५ ॥ ते कांचन नाजन सम कहियें, नव जल तारन याना ॥ हो जवि प० ॥ शुद्धमन द्वादश व्रत दरिसनृ धर, तार पात्र सम जाना ॥ हो जवि प० ॥ ६ ॥ शुद्ध समकितधर श्रेणिक परमुख, रहा अविरति गुणठाणा ॥ हो जवि प० ॥ ताम्रपात्र सम एहने कहियें, जावी गुणमणि खानां ॥ हो जवि प० ॥ ७ ॥ अपर सकलजन मिथ्यादृष्टि, लोहादि पात्र गिनाना ॥ हो जवि प०॥ जिनशासन रंगें रंगानी, वाचंयम सुप्रमाना ॥ हो जवि प० ॥ ८ ॥ एहनें दा न दियां शिव लहियें, एह सुपात्र पहिचानां ॥ हो ज वि प० ॥ पंचदान दशदान निकरमें, अजयसुपात्र म हिरानां ॥ हो जवि प० ॥ ए ॥ नरवाहन शुज पात्र दानतें, जये जिन हरष निधाना ॥. हो जवि प० ॥

शालिनद्र वलि सुर सुख लहियुं, सुर नर करयं वखा
नां ॥ हो नवि प० ॥ १० ॥

॥ काव्यं ॥ अनंतविन्नाण विन्नासरस्स, डुवाल्न सं
गी कमला करस्स ॥ सुलद्धवासा जरगोयमस्स, नमो
गणाधीसर गोयमस्स ॥ ११ ॥ ॐ ह्रीं श्रीगौतमाय
नमः ॥ इति ॥ १५ ॥

॥ अथ षोडश वेयावच्चपद पूजा ॥

॥ दोहा ॥ सोलमपदमें जाणियें,वेयावच्च विधान ॥
अखिल विमल गुणमणि तणो, सोहे प्रवर निधान ॥
॥ १ ॥ जिन सूरी पाठक मुनी, बालक वृद्ध गिलान
॥ तपसी चैत्य संघनुं करो, वेयावच्च प्रधान ॥ २ ॥
॥ राग जंगलो ॥ मुनेम्हारोकबमिलशेमनमेलू ॥ दे० ॥

॥ सेवोनाई, सोलमपद सुखकारी ॥ श्री जिनचंद्र
प्रमुख दशपदनुं करो वेयावच्च नारी ॥ से०॥१॥ श्री
तीर्थंकर त्रिनुवन शंकर, अवर केवली बलिहारी ॥
मनपर्यव धर अवधिनाणधर, चैदपूरव श्रुतधारी ॥
से० ॥ २ ॥ दशपूर्वि उत्कृष्ट चरणधर, लब्धिवंत अ
णगारी ॥ ए जिन कहियें इन वंदनतें, नवि हुवे जि
न अवतारी ॥से० ॥३॥ जिनमंदिर बिंब करिय नरावे,
पूजं करे मनुहारी ॥ वेयावच्च कहीयें ए जिनकी,करि

यें नवजलंतारी ॥ से० ॥ ४ ॥ आचारिज परमुख नवपदकी, वेयावच्च विजितारी ॥ नक्तिपूर्वं वस्त्रौषध अनजज, देवे गुणविस्तारी । से० ॥ ५ ॥ पंचसय मुनिनी करिय वेयावच्च पूरवनव व्रतचारी ॥ नरत बाहुबलि. चक्रीपदनुज, धन नहुं वरी शिवनारी ॥ से० ॥ ६ ॥ नंदिषेण सुलसामुनि तिंनकी, कराय वेयावच्च सारी ॥ तिनमें स्वर्गलोकमें हुयकी, नईय-प्रशंसा नारी ॥ से० ॥ ७ ॥ इत्यादिक सोलमपद नधरे. बहुलनव्य क्रम जारी ॥ तिनमें इन वेयावच्चपदकी, वारिजावं घार हजारी ॥ से० ॥ ८ ॥ नृप जीमूत केतु सोलमपद, सेवी नये हुस्वारी ॥ श्रीजिनहर्ष धरी हरिवंदित, शरणागत निसतारी ॥ से० ॥ ९ ॥

॥ काव्यं ॥ मणुस्स सव्वातिसया सयाणं,सुरासुराधीसर वंदियाणं ॥ रविंदु बिंबामल सग्गुणाणं, दयाधणाणंहि नमोजिणाणं ॥ १ ॥ ॐह्रीं श्रीजिनेन्योनमः

॥ अथ सप्तदश समाधि पद पूजा ॥

॥ दोहा ॥ सतरम पदमें सेवियें, सहु सुख करण समाधि ॥ जिन सेवनतें नविकनो, गमे व्याधि अरु आधि ॥ १ ॥ ब्रह्मनगर पति विचरतां, वर पा

थेय समान ॥ ए समाधि पद जाणियें, सुरमुंणि कि ये है रान ॥ २ ॥

॥ राग कहेरबो ॥ बाजै तेरा निऊआं रे ॥बा०॥ ए देशी ॥ मेरो रे समाधि चरण चित बसियो, तसु गुण समरण कियो मनु बसियो ॥ मे० ॥ सकल जगत जन तिनकुं स्तवतु हे, अनुजवरंगें अतिहि विकसियो ॥ मे० ॥ १ ॥ इव्यत जावत डुविध समाधि, सुरतरु मांनुं नित जुवन विलसियो ॥ असन वसन सलिलादिक जक्ति, करिय संघनी करुणा रसियो ॥ ॥ मे० ॥ २ ॥ इव्य समाधि प्रथम ए सुनियें, कह्यो जिन लोकालोक दरसियो ॥ सारण वारण चोयण प्रमुखें, पतित सुथिर करे धममें हरसियो ॥ मे० ॥ ॥ ३ ॥ जाव समाधि द्वितीय ए कहियें, जो करे सो जिन चरण फरसियो ॥ सकल संघकों जो उपजावत, डुविध समाधि डुरित तसु नसियो ॥ मे० ॥ ४ ॥ सुमति पंच त्रण गुपति धरे नित, सुरगिरिवरनो धीरज करसियो ॥ जगत जंतु अघ तपत हरनकुं, अनुजव अमृत धार वरसियो ॥ मे० ॥ ५ ॥ ध्यान अनल कर्मेंधन दाहत, जिनसें परगुण परिणत खिसियो ॥ ए मुनितरणि तेज सम दीपत, अमृत सुखामृत

धान ति मिया ॥ मे० ॥ ६ ॥ इन पदमें ऐसे मुनि जन के, समरनतें हुये जग अवतंसियो ॥ ए पद सेवी नृप ति पुरंदर, नये जगपति जिन हरख उल्लसियो ॥ मे० ॥

॥ काव्यं ॥ सविंदिया पारविकारदारी, प्रकारणा सेसजणोवगारी ॥ महानयार्तकगणापहारी, जयो सदा शुद्ध चरित्तधारी ॥ ८ ॥ ॐ ह्रीँ श्री नमश्चारित्रधारेन्य: ॥ इति सप्तदशस धि पद पूजा ॥ १७ ॥

॥ अथ अष्टादश अपूर्वश्रुत ग्रहण रूपज्ञान पूजा ॥

॥ दोहा ॥ श्रुत अपूर्व ग्रहिवुं सदा, अष्टादश पद मांहि ॥ इण पद सेवक ज न तणा, सहु संकट नय जाहि ॥ १ ॥ जेसी कुम नि शुद्धता, घोर तपें करि होय ॥ तत अनंत गुण शुद्धता, सुज्ञानीकी जोय ॥ २ ॥

॥ दिलदार यार गबरू, राखुं रे हमारा घटमें ॥ एदेशी ॥ जिन चंद नाम तेरा, महाराज ज्ञान तेरा ॥ जिते रे बिकट नव नटने, सैदपूर्वज्ञान धरणा ॥ वितरे जि नेंद चरणा, करे सर्व कर्म हरणा ॥ जी० ॥ १ ॥ जगमें महोपकारी, नय सिन्धु वारि तारी, कुमतांधता विदारी ॥ जी० ॥ २ ॥ सहु नावनो प्रकाशी, परम स्वरूप नासी, परमात्म सद्मवासी ॥ जी० ॥ ३ ॥ त्रिनु

हेतु विश्वबंधू, गुण रत्न राशि सिंधू, समता पियू
ष अंधू ॥ जी० ॥ ४ ॥ स्याद्वाद पक्ष गाजे, नयस
मसें विराजे, एकांत पक्ष नाजे ॥ जी० ॥ ५ ॥ ल
हि तीर्थ पाव तारा, इनसें जिनेंद्र सारा, नविके
किया उधारा ॥ जी० ॥ ६ ॥ पद सेवि ए नरिंदा,
नये सागरादि चन्दा, जिन हर्षके समंदा ॥ जी० ॥ ७ ॥

॥ काव्यं ॥ सुनक्किया मंमल.मंमनस्स, संदेह सं
दोह विखंमणस्स ॥ मुत्ती उपादान सुकारणस्स, णमो
हि नाणस्स जसोधणस्स ॥ ७ ॥ ॐह्रींश्री ज्ञानाय
नमः ॥ इति ॥ १७ ॥

॥ अथ एकोनविंश श्रुतपदपूजा ॥

॥ दोहा ॥ पापताप संहरण हरि, चंदन समश्रुत
सार ॥ तत्त्वरमण कारण करण, अशरण शरण उ
दार ॥ १ ॥ इगुनवीस पदमें नजो, जिनवर श्रुतनी
नक्ति ॥ इनपद वंदनसें लहे, विमलनाण युत मुक्ति ॥ २ ॥

॥ राग ॥ व्रजवासी कांन तें मेरी ॥

॥ गागर ढोरी रे ॥ ए देशी ॥

॥ नविजन श्रुतनक्ति, चरणशरण उर धरियें रे ॥
ए श्रुतनक्ति सुमंगलमाल, विमलकेवल कमलावरमा
ल ॥ नवि० ॥ १ ॥ सकलद्रव्यगणगुणपर्याय, प्रग

टकरण ए श्रुत मन भाय ॥ भ० ॥ अतुल अनंतकिर ण समवाय, धरणातर ागणसम कहिवाय ॥ भ० ॥ ॥ २॥ ए श्रुतकुमति युवतिने संग, अगणित रमण तणो करे भंग ॥ भ० ॥ अरथें भाख्यो श्रीजिनराज, सूत्रें गणधर मुनि सिरताज ॥ भ० ॥ ३ ॥ ए श्रुत सागर अगम अपार, अनंतअमल गुंणरयणाधार ॥ भ० ॥ भवभय जलनिधि तारण जहाज, निसुणि मग नं भई सकल समाज ॥ भ० ॥ ४ ॥ भवकोटीलग तप करि जीव, अज्ञानी करे जितनी सदीव ॥ भ० ॥ कर्मनिरज्जरा तितनी होय, ज्ञानीके इक क्षणमें जो य ॥ भ० ॥ ५ ॥ एक सहस कोडि बसयकोडि, चतुर तीस कोडि अक्षर जोडि ॥ अडसति लाख रु सात ह जार, अडसय असीय प्रमित चित धार ॥ भ० ॥ ॥ ६ ॥ इतने वरनसें इक पद होय, एक शलोकके गणित ए जोय ॥ भ० ॥ इकपदको परिमाण ए जा न, इण पदसें आगम परिमाण ॥ भ० ॥ ७ ॥ तीन कोडि अरु अडसठि लाख, सहस बैयालिस ए पद भाख ॥ भ० ॥ इतने पदसें अंग इग्यार, केरी गणना भवि चित्त धार ॥भ०॥ ८ ॥ बारम दृष्टि वादको मान, असंख्यातपदकों पहिचान ॥ भ० ॥ इनको चौदपूर

व इक देश, एनो पार लह्यो है गणेश ॥ भ० ॥ ए ॥ एह द्वादस अंग उदार, एहनो जइयें नित बलिहार ॥ भ०॥ एहनी द्रव्यभाव बहुभक्ति, करियें धरियें जिन पदयुक्ति ॥ १० ॥ रत्नचूड नृप सुखमा धार, जिनश्रुत भक्ति करी हितकार ॥ भ० ॥ भये जिनहरष परम पद दाय, जिनके सुर नरपति गुन गाय ॥ भ०॥ ११ ॥

॥ काव्यं ॥ अन्नाणवह्नी वणवारणस्स, सुबोहि बीजंकुरंकारणस्स ॥ अणंतसंसुद्ध गुणालयस्स, णमो दयामंदर सद्दुयस्स ॥ १२॥ ॐ ह्रीं श्रीं श्रुताय नमः ॥

अथ श्री विंशति तीर्थपद पूजा. ॥

॥दोहा॥ प्रावचनी अरु धर्मकथी, वाद निमित्ती नाण॥ तपसी विद्या सिद्ध पुनि, कवी एह मुनिभाण॥ १॥ भावतीर्थके प्रभु कह्या, प्राभाविक ए अष्ट ॥ तीर्थ प्रभावन जे करे, ते फल लहे विशिष्ट ॥ २ ॥

॥ राग धन्याश्री ॥

॥ तीरथ परभावन जयकारां, जिनसें भव सागर जल तरियें ॥ ते तीर्थ गुण धारा ॥ ती० ॥ १ ॥ जिनके गणधर तीर्थ कहियें, वलि सहु संघ सुखकारा॥ एह महा तीरथ पहिचानो, वंदि लहो भवपारा॥ती० २ अडसठ लौकिक तीर्थ तजि करि, भज लोकोत्तर सा

रा ॥ इंव्यनाव दोय भेद लोकोत्तर, थिर जंगम नयधा रा ॥ ती० ॥ ३ ॥ पुंमरीक परमुख पंचतीरथ, चैत्य पंच प्रकारा ॥ ए सरु तीरथ थावर कहियें, दीठां डुरित निवारा ॥ ती० ॥ ४ ॥ श्रीसीमंधर प्रमुख वीश जिन, विहरमान नवतारा ॥ दोय कोडि केवलि विच रंता, जंगमतीर्थ उदारा ॥ ती० ॥ ५ ॥ संघ चतुर्विध जंगमतीरथ, जिनशासन उजियारा ॥ नर अ... संनूषण नृपति, जिनकुं नमत जिनसारा ॥ ती०॥ ६ ॥ ॥ ए तीरथ परनावन करियें, शुन नावन आधारा ॥ शिवकुज जलविंशतितम पदकी, जाउं प्रतिदिन बलिहारा ॥ ती० ॥ ७ ॥ ए तीरथ परनावन करतो, मेरु प्रन अविकारा ॥ पदजिनहरष अहीनें तरियो, नवअंनोधि अपारा ॥ ती० ॥ ८ ॥

॥ काव्यं ॥ महामहानंदपदप्रदाय, जिनश्रुतज्ञानपयोनदाय ॥ जगत्त्रयार्धीश्वरवंदिताय, नमोस्तु तीर्थाय शुनंददाय ॥ ॐह्रींश्रीतीर्थाय नमः ॥इति॥ २० ॥

॥ सुण चतुर सुजाण परनारीशुं प्रीति ॥

॥ कबू नवि कीजियें ॥ ए देशी ॥

॥चित हरष धरी,अनुनवरंगें वीस परमपद वंदियें॥ शिवरमणि वरी,केवल सखीयसहायकरी चिर नंदियें॥

॥ए आंकणी॥ए वीस चरण अशरणशरणा, चिरसंचित दुरित तिमिरहरणा, नित चित ए पद समरण धरणा ॥ चि० ॥ १ ॥ ए पदसमरण जिन चित धरिया, तरिया तरशे तरे नवदरिया, सदनंत नविकसहु ~~अघ~~ हरिया ॥ चि० ॥ २ ॥ ए पद गुणसागर मनुहारा, वरणन तरणीयें बहुहारा, इंद्रादिक सुरनर न लह्यो पारा ॥ चि० ॥ ३ ॥ ए पद अतिशय महिमाधारा, अमृत पद कमला नरतारा, जिनचंद्रानंद घन पदकरा ॥ चि० ॥ ४ ॥ जिनहरष सुरिंदके शिव करणा, चंद्राभल गुणविंशतिचरणा, हुइज्यो प्रभु अरज ए अवधरणा ॥ चि० ॥ ५ ॥ इति श्रीसमस्तविंशतिपदस्तुतिः॥

॥ कलश ॥

॥ ए विसथानक, भुवनवंदन, अघ निकंदन जानियें ॥ विबुधेंद्रचंद्र, नरेंद्र वंदित, पद जिनेंद्र बखानियें ॥ ए वीस पद नव, जलधि तारन, तरन गुन पहिचानियें ॥ इम जानि नविजन, कुशलकारन, वीसपद उर आनियें ॥ १ ॥ इह वरस चंद्र, दिनेंद्र हरिमुख, विधि नयन ह्वि तिमिरधरू ॥ तिह मासनादव, धवलदल तिथि, पंचमी रवि वासरू॥बंगालजनपद, जिहां बिराजत, शिखर तीरथ गिरिवरू ॥ सहु नगरशोभि, अजीम गंज

पुर, द्वितीयं बाजूचरपुरू ॥ २ ॥ खरतरगणेशर, विजि तसुरगुरु, विमल गुणगरिमाधरा॥गुण नवन नविजन, नलिन्न कानन, नित विकासन दिनकरा ॥ मुनिचंद्र श्रीजिन, लाज सूरिंद, सुगुरु महियल युगवरा॥ सकलेंद्र वंद्य, जिनेंद्र शासन, मंफना नित हितधरा ॥ ३ ॥ त सु पट्ट उज्जल, अचलगनवर, उदयगिरि बासरकरा॥यो गींद्र वृंद, नरेंद्र वंदित, चरणपंकज गणधरा ॥ आचार पंच, छतीस गुणधर, सकल आगम सागरा ॥ युगप्रवर श्री, जिनचंदसूरी, गुरु सकलसूरीसरा ॥ ४ ॥ तसु च रण कमल वि, युगलसेवन, अहनिशि मधुकरता धरी॥पु न सुगुरुपद, अरविंद युगनी, कृपा नित चित आदरी॥ग णधार श्रीजिन, हरषसूरी, हरषधर घन अघहरी॥या बी स पदकी, विविध पूजन, बिधि तणी रचना करी ॥५॥

॥ अथ विंशतिस्थान आरति ॥

॥ जिया चतुरसुजाण नवपदके गुणगाय रे॥

॥ ए देशीमां ॥

॥ पिया विंशतिथान मंगलआरति गाय रे ॥ सुम तिप्रिया कहे चेतनपतिकों, निसुण बचन मन लायरे ॥ पि० ॥ १ ॥ यदि निजगुण परिणति तुम चहियें, तिणकों एह उपाय रे ॥ पि० ॥ अरिहंत सिद्ध आ

चारित्र पाठक, साधु सकल समुदाय रे ॥ पि० ॥ २ ॥ इत्यादिक विंशति पद समरण, जवजय हरण विधाय रे ॥ एह आरती अरतिवारती, अनुपमसुर सुख दाय रे ॥ पि० ॥ ३ ॥ जैसें जगतें करय आरती, सकलसुरासुरराय रे ॥ तैसें जवि तुमें करो आरती, ए पदगुण चित लाय रे ॥ पि० ॥ ४ ॥ पंचप्रदीपसें करय आरती, जे नितचित उलसाय रे ॥ ते लही पंच चिदानंद घनता, अचल अमर पदपाय रे ॥ पि० ॥ ५ ॥ पंच प्रदीप अखंडित ज्योतें, कुमति तिमिर विलाय रे ॥ एह आरती तुरत तारती, जवजल निपतित धाय रे ॥ पि० ॥ ६ ॥ पदजिन हरष तणी ए करणी, मनहरणी कहिवाय रे ॥ चंद्रविमलशिवसिधिनिधि धरणी, वरणी किण विध जाय रे ॥ पि० ॥ ७ ॥ इति॥

॥ अथ चतुर्विंशति ऋषिमंमल पूजा प्रारंजः ॥

॥ तत्र प्रथमऋषजजिन पूजा ॥

॥ दोहा ॥ प्रणमी श्रीपारस विमल, चरण कमल सुखदाय ॥ ऋषिमंमल पूजन रचुं, वरविधियुत चित लाय ॥ १ ॥ नंदीश्वर मंदरगिरें, शाश्वत जिनमहाराज ॥ अरचे अडविध पूजशुं, जैसें सहु सुरराज ॥ २ ॥ तिम चित जिनपति गुण धरी, श्रावक समकित धार ॥

विरचे जिनं चौवीशकी, अडविध पूज उदार ॥ ॥

॥ गाथा ॥ जलिल १ सुचंदन २ कुसुमजर, ३ दीवगकरणंच ४ धूवदवणं ५ ॥ ५॥ वर अरकत ६ नेविज्जं, ७ सुब फल पूजा य अठविहा ॥ ८॥ दोहा॥ ए अडविध पूजा करण, सुणियें सूत्र मजार ॥ जे जवि विरचे जगु तणी, ते पामे जवपार ॥ १ ॥ दोहा ॥ प्रथम जिनेश्वर तिम प्रथम, योगीश्वर नरराय ॥ प्रथम नये जग आदिमें, सकल जीव सुखदाय ॥ १ ॥

॥ राग देशाख ॥ पूर्वमुख सावनं ॥ ए देशी ॥

॥विमलगिरि उदयगिरिराज शिखरो परे, तरुणतर तेज दीपत दिणंदा ॥ युगल धमवारकर धर्म उद्योत किय, विमल इक्ष्वाकु कुल जलधिचंदा ॥ १ ॥ मात मरुदेवि वरउदरदरि हरिवग, सकल नृप मुकुटमणि नाजिनंदा ॥ अखिल जगनायका, मुगति सुखदायका, विमल वरनाणगुण मणिसमंदा ॥ २ ॥ दूरज लांबन धरा सकल जव नयहरा, अमरवरगीतगुण कुशल कंदा ॥ गुहिर संसार सागर तरणसमधरा, नमत शिवचंद प्रजुचरण वंदा ॥ ३ ॥

॥ काव्यं ॥सलिल चंदन पुष्प फल व्रजैः, सुविमलाक्त दीप सुधूपकैः ॥ विविधनव्यमधुप्रवरान्नकै,

र्जिनममीनिरहं वसुनिर्यजे॥१॥ ॐह्रीं श्रीपरमंपरमात्मने अनंतानंतज्ञानशक्तये जन्म जरामृत्युनिवारणाय, श्रीमदृषभजिनेंद्राय ॥ जलं चंदनं पुष्पं धूपं दीपं अक्षतं नैवेद्यं फलं यजामहे स्वाहा ॥ इतिश्रीऋषभजिनपूजा ॥ १ ॥

॥ अथ द्वितीय अजित जिन पूजा ॥

॥ दोहा ॥ जयजिणंददिणइंदसम, लखि भविकज विकसांत ॥ परमानंदसुकंदजल, विजयामातसुजांत

॥ राग आशावरी ॥ आय रहो दिलबागमें ॥

॥ प्यारे जिनजी ॥ ए देशी ॥

॥एक अरज अवधारियें,अजितजिन ॥ ए० ॥ अजित जिनेसर जग अलवेसर, कूरम निजर निहारियें ॥अ०॥य ०॥१॥तरण तारण बिरुद सुणि तेरो, आयो सरण तिहारीयें ॥ अ० ॥२॥ चरमसिंधु भवभय जलं निपतित, चरणपतित मोहे तारियें ॥ अ० ॥ ॥ ३ ॥ परमानंदघन शिव वनितानन, कजमधुपान सुकारियें ॥अ०॥ ४ ॥ चिर संचित घन डुरित तिमिर हर, तुम जिन भये तिमिरारियें ॥ अ० ॥ ५ ॥ कहे शिवचंद अजित प्रभु मेरे, एह अरज न विसारियें ॥ ॥ अ० ॥ ६ ॥ काव्यं ॥ सलिल० ॥ ॐह्रीं परमप० ॥

अनं० ॥ जन्म० ॥ श्रीमज्जि० ॥ ज० ॥ चं० ॥ स्वाहा ॥

॥ अथ तृतीय श्रीसंभवजिन पूजा ॥

॥ दोहा ॥ जय जितारि संभव सदा, श्रीसंभव जिनराज ॥ सकल लोक जिण जीतलिय, जीत्यो मोह समाज ॥ १ ॥ जैनाकर गुणपूर, सेवो तेजसनूर, भक्तिभावपूरण उर धार, मुक्तिपुरी पग सार ॥ १ ॥

॥ राग वेलाविल ॥ गंधवटी घन सार ए ॥ ए देशी ॥

॥ अपरिमित वर शिखरसागर, धार संभवकार ए ॥ जिनरायसंभव पाय वंदो, लहो भवजल पार ए ॥ कलि जलधिजात सुजातकुंजर, कुंभभंजन जानियें ॥ तसु जनकनाम समान नामा, भये जिन उर आनियें ॥ १ ॥ जसु चरण पंकज मधुर मधुरस, पान लय लागी रह्या ॥ मिल कर सुरासुर खचर व्यंतर, भमर नितचित क्रमह्या ॥ जसु चरण कमलें प्लवगलांछन, कनक सुवरणकाय ए ॥ सहु भुवननायक सुमतिदायक, जननिसेना जाय ए ॥ २ ॥ जसु मधुरवाणी जग वखाणी, तीस सरगुण धारिणी ॥ संसार सागर भय भरा कर, पतित पार उतारिणी ॥ स्याद्वाद पद्म कुगार धारा, कुमतिमद तरु दारिणी ॥ प्रभु वाणि नित शिवचंद गणिके, हुउ मंगलकारिणी ॥ ३ ॥ काव्यं ॥

सलि० ॥ ॐह्रीँश्री परम० ॥ अनं० ॥ ज्ञानं० ॥ श्रीमत्संभवजिनें० ॥ जलं० ॥ य० ॥ स्वाहा ॥ ४ ॥

॥ अथ चतुर्थश्री अभिनंदन जिन पूजा ॥

॥ दोहा ॥ श्रीचतुर्थ जिनवर सदा, पूजो भवि चित लाय ॥ जगति युवति संकट हरण, करण तीन शुध थाय ॥ १ ॥

॥ कुंदकिरण शशि ऊजलो रे देवा ॥ ए देशी ॥

॥ संवरनंदन जिनवरू रे वाला, अभिनंदन हित कामी रे ॥ जगदभिनंदन जयकरू रे॥ वा० ॥ दुरित निकंदन स्वामी रे ॥ १ ॥ लोका लोक प्रकाशता रे ॥ वा० ॥ करता अविचल धामी रे ॥ अव्याबाध अरूपिता रे ॥ वा० ॥ विमल चिदानंद रामी रे ॥ २ ॥ वंछित पूरण सुरमणी रे ॥ वा० ॥ ए प्रभु अंतरजामी रे ॥ ऐसे प्रभु महाराजकुं रे ॥ वा० ॥ शिवचंद नमे शिर नामी रे ॥ ३ ॥ काव्यं ॥ सलिल० ॥ ॐह्रीँ पर० अनं० अभिनंदन जिनेंद्राय जलं० य० स्वाहा ॥

॥ अथ पंचम सुमति जिनपूजा ॥

॥दोहा॥पंचम जिननायक नमूं,पंचम गतिदातार॥ पंचनाणवर विमलकज, वनविकसन दिनकार ॥१॥

॥ राग कहेरवो ॥ बंसी तेरी बेरण बाजे ॥ ए दे

शी ॥ शुद्ध भाव चित थिर धरकें रे, पूजो सुमति जि णंद ॥ जिनभक्ति करण रसीला, लहो परम आनंद ॥ शु० ॥ १ ॥ जिनराज सुमति समंद, करे कुमति निकंद ॥ प्रभुनां चरण अरविंद, वंदे असुर सुरिंद ॥ ॥ शु० ॥ २ ॥ कनकाभ तनुद्युति सोहे, प्रभुसुमंग लानंद ॥ करुणोपशम रस भरिया, वंदे नित शिव चंद ॥ शु० ॥ ३ ॥ काव्यं ॥ सकल० ॥ ॐह्रीं परम० अनं० ज्ञा० ज० श्रीमत् सुमति जिनेंद्राय जलं० ॥ स्वाहा ॥

॥ अथ षष्ठपद्मप्रभपूजा ॥

॥ दोहा ॥ हिव षष्ठम जिनवर तणी, पूजन करुं उदा र ॥ भविचित भक्ति धरी करी, सुख संपति कर तार ॥ राग सारंग ॥ बावन चंदन घसि कुमकुमा ॥

॥ हांहोरे वाला पदमप्रभु मुखचंद्रमा, नित सक ललोक सुखदाय ए ॥ हांहो रे वाला ॥ हरिसुर असुर चकोरडा, नित निरख रह्या ललचाय ए ॥ १ ॥ हांहोरे वाला ॥ जिनमुख वचनामृत तणुं जे, श्रवण करे भवि पान ए ॥ हांहोरे वाला ॥ ते अजरामरता लहे, हरिगण करे जसु गुणगान ए ॥ २ ॥ हांहो० ॥ धर नृप कुलनभदिनमणी, प्रभु मात सुसीमा नंद ए ॥ हां० ॥ प्रभु दरिसणतें प्रतिदिनें, हुइज्यो शिवचंद आनंद ए

॥३॥ काव्यं ॥ सलिल० ॥ ॐह्रीँ परम० अनं० ज्ञा० ज० श्रीमत्पद्मप्रभ जिनें० जलं० यजामहे स्वाहा॥६॥

॥ अथ सप्तम सुपार्श्वजिनपूजा ॥

॥दोहा॥श्रीसुपार्श्व सुरतरु समो,कामित पूरण काज॥ भो भवियण पूजो सदा, वसुविध पूज समाज ॥ १ ॥

॥राग कल्याण॥ मेरा दिल लगा जिणेसरसें॥ए देशी॥

॥मेरी लगी लगन जिनवरसें॥ मे० ॥ जैसें चंद चकोर भमरकी, केतकि कमल मधुरसें ॥ मे० ॥ एह सुपारस भए प्रभु पारस, गुणगणसमरण फरसें ॥ ॥ मे० ॥ चेतन लोहपणुं परिहरकें, हुय लै कांचन सरिसें ॥ मे० ॥ २ ॥ ए प्रभु करुणा करकुं धरि ले, उर जिम कमल भमरसें ॥ मे० ॥ जे भवि जिनपद लगन धरे तसु, नहि भये मरन असुरसें ॥ मे० ॥ ३ ॥ मात प्रथवी तनुजात तनुद्युति, समप्रभ कांचन सरिसें ॥ मे० ॥ कहे शिवचंद चित नित मेरो, रहो प्रभु पदलय भरसें ॥ मे० ॥४॥ ॐह्रीँ परम० अनं० ज० सुपार्श्वजिनें० जलं यजामहे स्वाहा ॥ इति ॥ ७ ॥

॥ अथाष्टम चंद्रप्रभ पूजा ॥

॥ दोहा ॥ अष्टम जिनपद पूजियें, विविध कष्ट हरंतार॥अष्टसिद्धि नवनिधि लहे,जिनपूजा करतार ॥

॥ राग गुंभं मिश्रित मल्हार ॥ मेघ वरसे नरी पुष्प ॥ ॥ बादल करी ॥ ए देशी ॥

॥ परमपद पूर्वगिरिराज परि उदय लहि, विजित पर चंद्र दिनकर अनंता ॥ चंद्रप्रभचंद्रिका विमल केवल कला, कलित शोभित सदा जिन महंता ॥ प० ॥ ॥ १ ॥ कुमतिमत तिमिरभर हरिय पुनभूरिभवि, कुमुद सुखकरिय गुणरयण दरिया ॥ गहिरभव सिंधु तारण तरण तरणिगुण, धार भविलारि जिनराज तरिया ॥ प० ॥ २ ॥ निरखियें आज मोहे लाज जिन राज प्रभु, करण सुख चरण जिन शरण परिया ॥ परम शिवचंद्र पद पद्म मकरंद रस, पान नित करण ततपर भरीया ॥ प० ॥३॥ काव्यं ॥ सलि० ॥ ॐह्रीं परप० ॥अनं०॥ श्रीमच्चंद्रप्रभाजिनें०॥ जलं० ॥ नैवेद्यं यजामहे स्वाहा ॥ ८ ॥

॥ अथ नवम सुविधि जिन पूजा ॥

॥ दोहा ॥

सुविध सुविधि समरण थकी, कामित फल प्रकटाय ॥ अतिहिगहन संसारवन, बहुल अटन मिट जाय॥

॥ राग ॥ चंपक केतकी मालती ॥ ए देशी ॥

सुविध चरण कज वंदियें ए ॥ अङ्यो ॥ वं० ॥

नंदियें अतिचिरकाल॥शिवतरवारि कि कंदियें ए॥अ०॥ विघनकंद ततकाल ॥अइ०॥१॥ आज जनम सफलो जयो ए ॥ अ० ॥ दीगे प्रनु दीदार, तन मन दृग विकसित जये ए॥ अ० ॥ जिम कज लखि दिनकार ॥ २ ॥ अमृत जलधर बरसियो ए ॥अ०॥ जवि उरखित अपार ॥ दर्शन सुरतरु ऊगियो ए ॥अ०॥ शिव फलनो दातार ॥ ३ ॥ काव्यं ॥ सलि० ॥ ॐह्रीँ पर० अनं० ज० श्रीमत् सुविधिजिनेंद्राय ज० नैवे० यजा महे स्वाहा ॥ इति नवम सुविधिजिनपूजा ॥ ए ॥

॥ अथ दशम श्रीशीतलजिनपूजा ॥

॥ दोहा ॥

॥ मुऊ तन मन शीतल करो, श्रीशीतल जिनराय ॥ तुम समरण जलधारसें, अंतर तपत पुलाय ॥१॥

॥ दादा कुशलसूरिंद ॥ ए देशी ॥ मेरे दीनदयाल, तुम जये सकललोक प्रतिपाल ॥ मे० ॥ सुण शीतल जिनवर माहाराज, चरण सरण धस्यो प्रनुनो आज ॥ न नमूं सहु सविकारी देव, करखुं चरण कमलनी सेव ॥ मे० ॥ १ ॥ जैसे सुरमणि करतल पाय, कुण ले काचशकल ललसाय ॥ तुम सम सुरवर अवर न कोयं, हेर हेर जग निरख्यो जोय ॥ मे० ॥ २ ॥

प्रभु दरिसण जलधर घनघोर, लखिय निरत करे न विजन मोर ॥ पद शिवचंद विमल नरतार, शिवव निता वरे अति सुखकार ॥ मे० ॥ ३ ॥ काव्यं ॥ ॥ सलिल० ॥ ॐह्रीं परम० अन० श्रीमच्छीतलजिनें० ज०नै०य०स्वाहा ॥ १० ॥ इति ॥

॥ अथ एकादश श्री श्रेयांस जिनपूजा ॥

॥ दोहा ॥

॥ श्री श्रेयांस जिनेंद्र पद नदहुति सलिलाधार ॥ जे नेत्रें मज्जन करे, ते शुचि हुइ विधु तार ॥ १ ॥

॥ सोहम सुरपति वृषभ रूपकरी ॥ ए देशी ॥

॥ श्री श्रेयांस जिनेसर जगगुरु, इंद्रिय सदन समंद हे ॥ जसु वसुविध पूजनसें अर्चो, उर धरि परमानंद हे ॥ ए समकितधर श्रावक करणी, हरणी भवमल रंग हे ॥ विजयदेव जिनप्रतिमा पूजी, जीवाभिगम उवंग हे ॥ श्री० ॥ १ ॥ सूरियाभजिन पूजन करियो, रायपसेणी उवंग हें ॥ ज्ञाता अंगें द्रुपदि श्राविका, पूज्या जिन चित चंग हे ॥ जे निन्हव कुमती जिन पूजन, उथापे तेह अनंत हे ॥ काललगें भमसी भव वनमें, मंदमती भयभ्रंत हे ॥ श्री० ॥ विष्णु माततनु जात विष्णुनृप, विमल कुलांबर हंस हे ॥ स

कल पुरंदर अमर असुरगण, शिव वरि प्रभु अवतंस हे ॥ इण सुरवरनी परि श्रावक जे, पूजे जिन उब रंग हे ॥ ते शिवचंद परमपद लहिशे, निश्चय करि नवभंग हे ॥ श्री० ॥ ३ ॥ काव्यं ॥ सलिल० ॥ ॐ ह्रीं पर० अनं० ज० श्रेयांस जिनें० जलं० नैवे० य० ॥ इति

॥ अथ द्वादश वासुपूज्यजिन पूजा ॥

॥ दोहा ॥

॥ हिव बारम जिनवर तणी, पूजन करियें सार ॥
भावभक्तियुत भवि सदा, द्रव्यभक्ति चित धार ॥ १ ॥

॥ राग ॥ सब अरतिमथनमुदार धूपं ॥ ए देशी ॥

॥ सकल जगजन करत वंदन, जयानंदन स्वामी रे ॥ देवा ॥ जया० ॥ दुरिततापनिकंद चंदन, परम शिवपदगामी रे ॥ दे० ॥ स० ॥ १ ॥ नृपतिवर वसु पूज्यनृपकुल, विपिन नंदन जात रे ॥ दे० ॥ वि० ॥ सुहरिचंदन नंदनंदन, नंदमदकिय घात रे ॥ दे० ॥ नं० ॥ २ ॥ वसुपूज्यनंद जिनेंद्र पूजो, सकलजिन माहाराज रे ॥ ॥ दे० ॥ स० ॥ करत स्तुति शिवचंद प्रभु ए, निखिल सुरशिरताज रे ॥ दे० ॥ नि० ॥ ३ ॥ ॐ ह्रीं पर० अनं० ज० वासुपूज्यजिनें० ज० नैवे० यजामहे स्वाहा ॥ इति ॥ १२ ॥

॥ अथ त्रयोदश विमलजिनपूजा ॥

॥ दोहा ॥

॥ विमल विमलजिन कर मुझे, मलिन कर्म करि दूर ॥ परम प्रभु रमियें सदा, मुझ परमा[illegible] गुणपूर ॥

॥ सिद्धचक्र पद वंदो रे नविका ॥ ए देशी ॥ विमलचरणकजवंदो रे सुरिजन ॥वि०॥ वंदीने आनं[illegible] रे ॥सु०॥ ए आंकणी ॥ जस गणधर मुनिवर [illegible] सेवत पद अरविंदो ॥ श्या[illegible] उदर सुगति मुगताफल कृतवरमा नृपनंदो रे । सु० ॥ १ ॥ सहु जगमंगल विमल करणकुं, निजशासन नज चंदो ॥ उदय नये नविकुमुद विकसवा, वरगु[illegible] रयणसमंदो रे ॥ सु० ॥ ॥ २ ॥ यदिनवबंदि हरण नवि चाहो, प्रभु वंदी निरनंदो ॥ विमल चिदानंद घनमयरूपी, नित वंदत शिवचंदो रे ॥ सु० ॥ ३ ॥ काव्यं ॥ सलिल० ॥ ॐ ह्रीं परम० अ० ज० श्रीविमलजिनें० जलं० रूदा० ॥ इति ॥

॥ अथ चतुर्दश श्रीअनंत जिनपूजा ॥

॥ दोहा ॥

॥ हिव चजदम जिन पूजतां, हरियें विषयविकार ॥ नो नवियण सुणियें सदा, ए प्रभु शरणाधार ॥ १ ॥

॥ पंचवरणी अंगी रची ॥ ए देशी ॥ पूजकरणी प्र

मुनी दुरितनिवारी । अनंत तरणि हिमकिरण तरु गतर, किरण निकर जीता है नारी ॥ अनंतनाणवर दरिसण तेजें, प्रभु सुयशोदर अवतारी ॥ पू० ॥ १ ॥ लोकालोक अनंतद्रव्यगुण, पर्ययप्रगट करण्हारी ॥ तातें अन्वय युत जिन धरियो, अनंतनाम अति मनुहारी ॥ पू० ॥ २ ॥ सिंहसेन नृपनंदन वंदन, करत इंद्रचंद्र सुखकारी ॥ सादि अनंत भंगथिति धरियो, पदशिवचंद्र विजयधारी ॥ पू० ॥ ३ ॥ काव्यं ॥ सलिल० ॥ ॐ ह्रीं परम० अनं० ज० श्रीमदनंतजिनेंद्राय ज० नैवे० स्वाहा ॥ इति अनंत जिनपूजा ॥ १४ ॥

॥ अथ पंचदशश्रीधर्मजिनपूजा ॥

॥ दोहा ॥

॥ भानुभूप कुल भानुकर, पनरम जिनसुखकार ॥
शोभित सहुजग विपिन जन, हरख फलद जलधार॥

॥ धीरसमीरे यमुनातीरे वसति वने वनमाली ॥ ए देशी ॥

॥धरम जिनेसर धरम धुरंधर, जगबंधव जगवाला॥ मैं वारी जाउं ॥ध०॥ सुव्रतानंदन पापनिकंदन, प्रभुजन ए दीनदयाला ॥ मैं वारी जाउं ॥ध०॥१॥प्रभुधीरज गुण निरख अमर, गिरि,लजि लीनो अचला धारा ॥

॥ में० ॥ वारी जिनगंजीरता चरमसिंधु लखि, किय लोकांत विहारा ॥ में० ॥ ध० ॥ २ ॥ए जिनचंद चरण अरचनतें, लहि जिनपति अवतारा ॥ में० ॥ ध० ॥ ३ ॥ करमवैरि दलि करि नवि लहिस्यो, पदशिवचंद उदारा ॥ में० ॥ध०॥४॥काव्यं॥सलिल० ॥ ॐ ह्रीं परम०अनं०ज०श्रीधर्मजिनेंद्राय ज०स्वाहा ॥ १५॥

॥ अथ षोडश शांतिजिनपूजा ॥

॥ दोहा ॥

अचिरा उयरें अवंतरी,शांति करी सुखकार ॥ मारि विकार मिटाय करि, नाम धस्यो शांतिसार ॥ १ ॥

॥ राग विलास ॥ जाव धरि धन्य दिन, आज ॥सफलो गिणुं ॥ ए देशी ॥ शांतिजिनचंद,निजचरणकज शरणगत, तरणि गुणधारि, जववारि तारी ॥ कुमतिजन विपिनजनि, कुमतिघन व्रतनितत, निशित शितधार, तरवारवारी ॥ शांति० ॥ १ ॥ एक जवि पद उजय, चक्रधर तीर्थ कर, धारिया वारिया, विघन सारा ॥ सकल मद मारिया, विमल गुण धारिया, सारियां जक्त वांछित अपारा ॥शांति०॥२॥हरिण लांछनधरा, करण सुवरण करा, सुरवरा हितधरा, गतविकारा ॥ मोहजट धरणिधरं, गणहरण वज्रधरं, कुमुद

शिवचंद्रपद रजनिकारा ॥ शां० ॥ ३ ॥ काव्यं ॥ स-
लिल० ॥ ॐह्रीं परम० अनं० ज० श्रीशांतिजिनेंद्रा
य जलं० यजामहे स्वाहा ॥ इति ॥ १७ ॥

॥ अथ सप्तदश कुंथुजिनपूजा ॥

॥ दोहा ॥

॥सतरम जिनवर दीवसम, भक्ति भव सागर जाण॥
भक्तियुक्त नित पूजियें, लहियें अमल विनाण ॥ १ ॥

॥ राग ॥ अरिहंतपद नित ध्याइयें ॥ ए देशी ॥

॥कुंथु जिणंद गुण गाइयें, मनवंछित फल पाइयें रे॥
प्रभु समरण लय ल्याइयें, भवि भव तजि शिव जाइ
यें रे ॥ कुं० ॥ १ ॥ भवजलगत निज आतमा, करु
णा उर धरि ताइयें रे ॥ चरणकरण उपयोगिता, ग्रह
ण करणकुं ध्याइयें रे ॥ कुं० ॥ २ ॥ ए प्रभु दरिसण
जीवनें, अनुभव रसनो दाइयें रे ॥ वरशिवचंद विम
लं वधे, दिन दिन शोभ सवाईयें रे ॥ कुं० ॥ ३ ॥
ॐह्रीं परम० अ० श्रीकुंथुजिनें० जलं० स्वाहा॥इति॥

॥ अथ अष्टादश श्रीअरनाथपूजा ॥

॥ दोहा ॥

॥जिन अढारमो ध्याइयें, भवियण चित्त मझार ॥
करण तीन इक करि मुदा, प्रतिदिन जयजयकार ॥ १ ॥

॥ राग वसंत ॥ संग लागा हे आवे रे तोसुं ॥ ए देशी ॥

॥ निजविमल नक्तिमें अरजिनसुं, नित रमियें रे ॥ जिनगुण निजगुण तुल्य करणकुं, चंचलचित हय द मियें रे ॥ नि० ॥ १ ॥ सुमतियुवति संगति उर धरि के, कुमतिनार संग गमियें रे ॥ अनुनव अमृतपान करणतें, विषयविकृति विष वामियें रे ॥ नि० ॥ २ ॥ जिनवरसंगरमण दव अनलें, पंकसघन वन धमियें रे ॥ कहे शिवचंद जिनेंद्र रमणसें, नववनमें नहि नमि यें रे ॥ नि० ॥ ३ ॥ काव्यं ॥ सलिल० ॥ ॐ ह्रीं परम अ० श्रीमत्अरजिनें० जलं० यजामहे स्वाहा ॥ १८ ॥

॥ अथ एकोनविंश मल्लिजिनपूजा ॥

॥ दोहा ॥

॥ उगणीसम जिनचरणकज, नमर होय लय लाय ॥ सेवे तसु नव च्रमरता, अगणित तुरत विलाय ॥ १ ॥

॥ मल्लिजिणंद नपगारी रे वाला, हांहो रे वाला वा री जाउं वार हजारी रे ॥ वाला ॥ म० ॥ कुंन नरे सर गगनांगणमें, सहसकिरण अवतारी रे ॥ वा० ॥ म० ॥ १ ॥ पूरवनव खटमित्र नरिंदपति, बोधसिं धु नवतारी रे ॥ वा० ॥ वेदत्रयी विरही तनु धाख्यो, सकलसंघ सुखकारी रे ॥ वा० ॥ म० ॥ २ ॥ संक

लकुशल हरिचंदन तरुवर, नंदनवन अनुकारी रे ॥ वा० ॥ संघचतुर्विध नूरि खचरगण, प्रणत चंद मनुं हारी रे ॥ वा० ॥ म० ॥ ३ ॥ काव्यं ॥ सलिल० ॥ ॐ ह्रीं परम० अनं० श्रीमल्लिजिनेंद्राय जलं० य०॥१९॥

॥ अथ विंशतितमश्रीमुनिसुव्रतजिनपूजा ॥

॥ दोहा ॥

॥ पद्मोदरवरपद्मनंद, गतपरपद्मसमान ॥ विंशतितम प्रभु पूजियें, केवललब्धिनिधान ॥ १ ॥

॥ सुण चतुर सुजाण, परना० ॥ ए देशी ॥

॥सुण सुव्रत जिनेंद्र, सुनजर धरि मुझ परवरदरसण दीजियें ॥ प्रभु दरस प्रीति निरुपाधिकता, करियें लहियें शिव साधकता, तब तुरत मिटे शिव बाधकता ॥ सुण० ॥ १ ॥ अमृतमें साध्यपणुं विलसे, प्रभु दरिसण साधनता उलसे, तद मुझने साधकता मिलसे ॥ सु० ॥ २ ॥ भिन्नाधिकरणता यदि विघटे, एकाधिकरणता यदि सुघटे, तद मुझ शिवसाधकता प्रगटे ॥ सु० ॥ ३ ॥ एकाधिकरणता मुझ करियें, भिन्नाधिकरणता परिहरियें, शिवचंद्रविमलपद तद वरियें ॥ सु० ॥ ४ ॥ काव्यं ॥ सलिल० ॥ ॐ ह्रीं परम० अनं० मुनिसुव्रत जिनें० जलं० चंद० य०॥२०॥

॥ अथ एकविंशतमश्रीनमिजिनपूजा ॥

॥ दोहा ॥

॥अंतर वैरी नमावियां, तब लहियुं नमि नाम ॥
भवियण ए प्रभु पूजशो, सरियें वंछित काम ॥ १ ॥

॥ हम आये हे सरण तिहां रे ॥ ए देशी ॥

॥श्रीनमि जिनवर चरणकमलमें, नयन भमर युग धरियें रे॥वारि॥न०॥तिण किय गुण मकरंद पानसें, चेतन मद मत करियें रे ॥ वारि ॥चे० ॥ श्री० ॥१ ॥ एह चरणकज अहोनिशि विकसे, परकज निशि कुम लावे रे ॥ वारि ॥ प० ॥ ए न बलें बलितुहिन अनलसें. अपरकमल बल जावे रे ॥ वारि ॥ अ० ॥ श्री० ॥ २ ॥ए पदकज गुन मधुरस पीवत, जीव अमरता पावे रे ॥ वारी॥ जी०॥ अवर कमल रसलोभी मधुकर, कजगत गजगल जावे रे ॥वा०॥ क०॥३॥ परकज निजगुण लछिपात्र है, पदकज संपद देवे रे॥ वा० ॥ प० ॥ तातें पद शिवचंद जिणंदके, अहनिशि सुरनर सेवे रे ॥ वा० ॥ अ० ॥ श्री० ॥ ४ ॥ काव्यं ॥ सलिल० ॥ ॐह्रीं परम० अनं० नमिजिनें० जलं० नैवे० यजामहे स्वाहा ॥ इति ॥ २१ ॥

॥ अथ द्वाविंशतश्रीनेमिजिनपूजा

॥ दोहा ॥ बावीसमजिन जगगुरु,ब्रह्मचारि विख्यात ॥ इणवंदन चंदनरसें, पाप ताप मिट जात ॥ १ ॥

॥ राग रामग्री ॥ गात्र लूहे जिनमन——
रंगशुं रे देवा ॥ ए देशी ॥

॥ नेमि जिणंद उर धारियें रे वाला, विषय कषाय निवारियें रे वाला॥निवारियें रे हांरे वाला निवारियें रे ॥ ए जिननें न विसारियें ॥ १ ॥ जलधर जिम॰ प्रभु गरजता रे वाला, देशना अमृत वरसता रे वाला ॥ दे०॥वरसता हां रे॥वा०॥नविक मोर सुण उलसता॰रे ॥ २ ॥ समवसरण गिरि पर रह्या रे वाला, जामंम ल चपला वह्या रे ॥वाला॥ चपला वह्या हांरे॥च०॥ सुर नर चातक ऊमह्या रे ॥३॥ बोधबीज उपजावियुं रे वाला, नवि उरक्षेत्र वधावियुं रे वाला ॥ वधावियुं हांरे वाला ॥ वधा०॥ नविक मुगति फल पावियुं रें ॥ ४ ॥ काव्यं ॥ सलिल० ॥ ॐह्रीं परम० श्रीमन्नमिजिनेंद्राय जलं० नैवे० यजाम० ॥ स्वाहा ॥२२॥

॥ अथ त्रयोविंशत श्रीपार्श्वजिनपूजा ॥

॥ दोहा ॥

॥ अश्वसेननंदन सदा, वामोदरखनिहीर ॥

लोक शिखर शोभे प्रभू, विजितकरमवडवीर ॥ १ ॥

॥ वाजे तेरा विंछुआ रे ॥ वा० ॥ ए देशी ॥

॥ पास जिणंदा प्रभु मेरे मन वसिया ॥ मे० ॥ शिवकमलाननन कमलविमलकल, तरमकरंद पान अतिहि सरसिआ ॥ पा० ॥ १ ॥ वामानंदन मोहनी मूरत, सकल लोक जनमन किय बसिया ॥ पा० ॥ २ ॥ परम ज्योति मुखचंद विलोकित, सुर नर निकर चकोर हरसियर ॥ पा० ॥ ३ ॥ अंजन गिरि तनु दुति जिनजलधर, देशन अमृत धार वरसिया ॥ पा० ॥ ४ ॥ पिय करि नवि चिरकाल तरसिया, मुगति युवति तनु तुरत फरसिया ॥ पा० ॥ ५ ॥ कुमुद सुपद शिवचंद जिणदनी, वारी जाउं मन मेरो अतिहि उलसिया ॥ पा० ॥ ६ ॥ काव्यं ॥ सलिल० ॥ ॐ ह्रीँ परम० अ० ज० श्रीमत्पार्श्वनाथाय ज० यजामहे स्वाहा ॥ २३ ॥

॥ अथ चतुर्विंशतितमवीरजिनपूजा ॥

॥ दोहा ॥

॥ वरइरकाकुकुलकेतुसम, त्रिशलोदर अवतार ॥ ए प्रभुनी नित कीजियें, विविधभक्ति सुखकार ॥ १ ॥

॥ राग ॥ तेज तरणिमुख राजे प्रभुजीको ॥ ए देशी ॥

॥ चरमवीर जिनराया, हां रे जिनराया मेरे प्रभु ॥

चरम वीर जिनराया ॥ सिद्धारथ कुलमंदिरधजं सम, त्रिशलाजननी जाया ॥ निरुपम सुंदर प्रभु दरिसण तें, सकललोक सुख पाया ॥ मे० ॥१॥ वामचरणअंगुष्ठ फरसतें, सुरगिरिवर कंपाया इंद्रभूतिगणधरमुख मुनिजन, सुरपति वंदित पाया ॥ मे० ॥ २ ॥ वरतमान शासन सुखदाया, चिदानंदघनकाया ॥ चंद्रकिरण.गुणविमल रुचिर धर, शिवचंदगणि गुण गाया ॥ ॥म्हांरे०॥ ३ ॥ बरसनंद मुनि नाग धरणिमित, कृतीयाश्विन मन भाया ॥ धवलपक्ष पंचमि तिथि शनिसुत, पुर जयनगर सुहाया ॥ मे० ॥ ४ ॥ श्रीजिनहर्षसूरि सूरीश्वर, वर खरतरगच्छराया ॥ क्षेमकीर्त्तिशाखाभूषणमणि, रूपचंद उवझाया ॥मे०॥५॥महापूर्व जसु भूरि नरेश्वर, वंदे पद उलसाया ॥ तासु शिष्य वाचक पुण्यशीलगणि, तसु शिष्य नाम धराया ॥ मे० ॥६॥समयसुंदर अनुग्रहि ऋषिमंडल, जिनकी शोभ सवाया॥ पूज रची पाठक शिवचंदें, आनंदसंघ वधाया ॥ मे० ॥ ७ ॥ काव्यं ॥ सलिल० ॥ ॐह्रीं पर०॥ अ० ज० श्री वीरजिनेंद्राय ज० ॥ य० ॥ स्वाहा ॥ २४ ॥

॥ अथ ऋषिमंडलस्तुतिकलश ॥

॥स्रग्धरावृत्तद्वयम् ॥ दुर्वारस्फारविघ्नोत्कटकरटिघटो

नपाटनस्पष्टजाग्र, . धीर्यप्राग्नारचंचत्कुशलहरिदरीजित्वरी दुर्नतानाम् ॥ संसारापारसिंधूत्तरणतरतरी नक्तिनाजममजस्त्रं, नव्यानां ब्रह्मपद्मप्रवणमधुकरी शंकरी शंकरी सा ॥ १ ॥ लोकालोकप्रलोकास्खलितविमल सद्दर्शनज्ञाननानुः, श्रीमज्जैनेश्वरोयं त्रिनुवनविनुता श्चिश्चतुर्विंशतिश्च ॥ श्रीसिद्धानंतनाथालयविशदलसत्सर्वलोकाग्रनाग, प्रासादाग्रप्रदेशो जगति विजयतां वैजयंती जयंती ॥२॥

इति चतुर्विंशतिजिनकुसुमांजलपूजा संपूर्णा ॥

॥ अथ नवपदजीकी आरति ॥

॥ जय जय जग जन वंछित पूरण, सुरतरु अनिशामी ॥सु०॥ आतम रूप विमल कर तारक, अनुनव परिणामी ॥ ज० ॥ १ ॥ जयजय जगसारा, नविजन आधारा ॥न०॥ आरति पार उतारा, सिद्धचक्र सुखकारा ॥ ज० ॥ २ ॥ जगनायक जगगुरु जिणचंदा, नल श्री नगवंता ॥न०॥ आतमराम रमा सुख नोगी, सिद्धा जगवंता ॥ ज० ॥ ३ ॥ पंचाचार दिये आचारज, युगवर गुणधारी ॥यु०॥ धारक वाचक सूत्र अरथना, पाठक नवतारी ॥ ज० ॥४॥ शमदम रूप सकल गुणधारक, महोटा मुनिराया ॥मो०॥ दरिसण नाण सदा जय

कारक, संजम तप नाया ॥ ज० ॥ ५ ॥ नवपद सारपरम गुरु नाखे, सिद्धचक्र सुखकारी॥सिं०॥ इह नव परनव रिधि सिधि दायक, नवसायर वारी ॥ ज० ॥ ॥ ६ ॥ कर जोडी सेवक जस गावे, मनवंछित पावे ॥ ॥ म० ॥श्रीजिनचंद चरणपरिपूजक,शिव कमलापावे ॥ ज० ॥ ७ ॥ इति नवपद आरति संपूर्णा ॥

॥ अथ लघु नवपद पूजा प्रारभ्यते ॥

॥ तत्र प्रथम अरिहंत पद पूजा ॥

॥ उप्पन्न सन्नाणमहोमयाणं, सप्पाडिहेरासण संठिआणं ॥ सद्देसणाणं दियसज्जणाणं, नमोनमो होउ सया जिणाणं ॥ १ ॥ नमोनंतसंत प्रमोद प्रधानं, प्रधानाय नव्यात्मने नास्वताय ॥ थया जेहना ध्यानथी सौख्यनाजा, सदा सिद्ध चक्राय श्रीपाल राजा ॥ २ ॥ कस्यां कर्म डुर्मर्म चकचूर जेणें, नला नव्य नवपद ध्यानेन तेणें ॥ करी पूजना नव्य नावें त्रिकालें, सदा वासियो आतमा तेण कालें ॥ ३ ॥ जिके तीर्थकर कर्म उदयें करीने, दिये देशना नव्यने हित धरीने ॥ सदा आठ महापाडिहेरें समेता, सुरेशें नरेशें स्तव्या ब्रह्मपुत्ता ॥ ४ ॥ कस्यां घातियां कर्म चारे/अलग्गां, नवोपग्रही चार छे जे विलग्गा ॥

जगत् पंचकल्याणकें सौख्य पामे, नमो तेंह तीर्थंक
रा मोक्षकामें ॥ ५ ॥

॥ दोहा ॥ परम मंत्र प्रणमी करी, तास धरी उर ध्या
न ॥ अरिहंत पदपूजा करो, निज निजशक्ति प्रमाण॥

॥ ढाल ॥ त्रीजे नव विधिसें करी,वीश स्थानक
तप करिने रे ॥ गोत्र तीर्थंकर बांधियुं, समकित शुद्ध
मन धरिने रे ॥ १ ॥ अरिहंत पद नित वंदियें, करन
कठिन जिम दंडियें रे ॥ ए आंकणी ॥ जनम कल्या
णकने दिनें, नारकी सुखिया थावे रे ॥ मति श्रुत अ
वधि विराजता, जसु उपम कोइ नावे रे ॥ अ० ॥
॥ २ ॥ दीक्षा लीधी शुभ मनें, मनःपर्यव आदरियुं
रे ॥ तप करि कर्म खपाइने, ततखिण केवल वरियुं
रे ॥ अ० ॥ ३ ॥ चउतिस अतिशय शोभता, वाणी
गुण पेंतीसो रे ॥ अढदस दोष रहित थइ, पूरे संघ
जगीसो रे ॥ अ० ॥ ४ ॥ तन मन वयण लगाइने,
अरिहंत पद आराधे रे ॥ ते नर निश्चयथी सही, अ
रिहंत पदवी साधे रे ॥ अ० ॥ ५ ॥

॥ श्लोक ॥ अथाष्टदलमध्याब्ज, कर्णिकायां जि
नेश्वरान् ॥ आविर्भूतलसद्बोधा, नावृतः स्थापयाम्य
हम् ॥ १ ॥ निःशेषदोषेंधनधूमकेतू, नपारसंसार

समुद्रसेतून ॥ यजे समस्तातिशयैकहेतून, श्रीमज्जिना नंबुजकर्णिकांयाम्॥ २॥ ॐह्रीं अर्हद्भ्यो नमः ॥ इति॥

॥ अथ द्वितीय सिद्धपद पूजा ॥

॥ दोहा ॥ दूजी पूजा सिद्धनी, कीजें दिल खुशियाल ॥ अशुभ कर्म दूरें टले, फले मनोरथमाल ॥ १ ॥

॥ सिद्धाणमाणंदरमालयाणं, नमो नमोणंतचउक्कयाणं ॥ करी आठ कर्म क्षयें पार पाम्या, जरा जन्म मरणादि भय जेणें वाम्या ॥ निरावरण जे आतम रूपें प्रसिद्धा, थया पार पामी सदा सिद्ध बुद्धा ॥ त्रिभागोनदेहावगाहात्मदेशा, रह्या ज्ञानमय जातवर्णादिलेशा ॥ सदानंतिसौख्याश्रिता ज्योतिरूपा, अनाबाध अपुनर्भवादि स्वरूपा ॥ १ ॥

॥ ढाल ॥ सकल करमनो क्षय करी, सिद्ध अवस्था पाइ रे ॥ गुण इगतीस विराजता, उपम जस नहीं कांइ रे ॥ ६ ॥ मन शुद्ध सिद्धपद वंदियें ॥ ए आंकणी ॥ जनम मरण दुःख निर्गम्या, शुद्धातम चिदरूपी रे ॥ अनंत चतुष्टय धारता, अव्याबाध अरूपी रे ॥ म० ॥ ७ ॥ जास ध्यान जोगीसरू, करे अजप्पा जापें रे ॥ भव भव संच्यां जीवडे, कठिण करम तें कापे रे ॥ म० ॥ ८ ॥ ध्यान धरंतां सिद्धनुं

पूजंतां मनरांगें रे ॥ अविचल पदवी पाईयें कहुं जिनवर वड नागें रे ॥ म० ॥ ए ॥

॥ श्लोक ॥ तस्य पूर्वदले सिद्धान्, सम्यक्त्वादि गुणात्मकान् ॥ निःश्रेयसपदं प्राप्तान्, निदधे नतिनिर्भरः ॥ १ ॥ तत्पूर्वपत्रे परितः प्रणष्ट, दुष्टाष्टकर्मानधिगम्य शुद्धिम् ॥ प्राप्तान्नरान् सिद्धिमनंतबोधान्, सिद्धान्यजे शांतिकरान्नराणम् ॥ २ ॥ ॐ ह्रीं सिद्धेभ्यः०

॥ अथ तृतीय आचार्यपद पूजा ॥

॥ दोहा ॥ हिव आचारिज पद तणी, पूजा करो विशेष ॥ मोह तिमिर दूरें हरे, सूझे नाव अशेष ॥ १ ॥

॥ सूरीण दूरीकयकुग्गहाणं, नमो नमो सूरिसमप्पहाणं ॥ नमो सूरिराजा सदा तत्त्वताजा, जिनेंद्रागमें प्रौढ साम्राज्यनाजा ॥ षट्वर्ग वर्गितगुणें शोनमाना, पंचाचारने पालवे सावधाना ॥ नवि प्राणिने देशना देशकाले, सदा अप्रमत्ता यथा सूत्र आले ॥ जिके शासनाधार दिग्दंतिकल्पा, जगें ते चिरंजीवजो शुद्धजल्पा ॥ १ ॥

॥ ढाल ॥ गुणछत्तीशें दीपता, पाले पंच आचारो रे ॥ जिनमारग साचो कहे, जुगप्रधान जयकारो रे ॥ १० आचारिज पद वंदीयें ॥ ए आंकणी ॥ सारण वार

ण चोयणो, पडिचोयण चौशिक्षा रे ॥ नव्यजीव- समझायवा, देवाने ते दक्षा रे ॥ आ० ॥११॥ जिन वर सूरिज आथम्या, परतख दीपक जेहा रे ॥ सकल नाव परगट करे, ज्ञानमयी जसु देहा रे ॥ आ० ॥१२॥ विधिशुं पूजा साचवे, ध्यावे निज हित जाणी रे ॥ पावे लघुतर कालमां,आचारिज पद प्राणी रे ॥ ३

॥ श्लोक ॥ स्थापयामि ततः सूरीन,दक्षिणेऽस्मिन् दलेऽमले ॥ चरतः पंचधाचारं, षट्त्रिंशत् सद्गुणैर्युतान् ॥ १ ॥ सूरीन् सदाचाररतांश्चसारा, नाचारयंतः स्वपरान्यथेष्टम् ॥ उग्रोपसर्गैकनिवारणार्थं, मन्यर्चयाम्यक्षतगंधधूपैः ॥२॥ ॐह्रीं सूरिभ्योनमः ॥इति॥३॥

॥ अथ चतुर्थ उपाध्याय पदपूजा ॥

॥ दोहा ॥ गुण अनेक जग जेहना, सुंदर शोभित गात्र॥ उवझाया पद अरचियें, अनुनव रसनुं पात्र ॥ १ ॥

॥ छंद ॥ सुत्तछविछारण तप्पराणं, नमो नमो वायग कुंजराणं ॥ नही सूरि पण सूरिगणनें सहाया, नमुं वाचका त्यक्तमदमोहमाया ॥ वली द्वादशांगादि सूत्रार्थ दानें, जिके सावधाना निरुद्धाभिमानें ॥ धरे पंचनें वर्गवर्गित गुणौघाः, प्रवादि द्विपोछेदनें तुल्य

सिंघाः ॥ गुणीगह्नसंधारणे स्तंजनूता, उपाध्याय ते वंदियें चित्प्रनूता ॥ १ ॥

॥ ढाल ॥ द्वादशांगी वाणी वदे, सूत्र अरथ वि स्तारे रे ॥ पंचवरग गुण जेहना, सुमति गुपति नित धारे रे ॥१४॥ श्रीउवझाया वंदियें ॥ ए आंकणी ॥ दायक आगम वाचना, नेद नावयुत सारी रे ॥ सूर खकूं पंमित करे, जगतजंतु हितकारी रे ॥१५॥ श्री०॥ शीतलचंद किरण समी, वाणी जेहनी कहियें रे ॥ ते उवझाया पूजतां, अविचल सुखडां लहीयें रे॥१६॥इति

॥ श्लोक ॥ द्वादशांगश्रुताधारान्, शास्त्राध्ययन तत्परान् ॥ निवेशयाम्युपाध्यायान्, पवित्रे पश्चिमे द ले ॥ १ ॥ श्रीधर्मशास्त्राण्यनिशं प्रशांत्यै, पठंति येऽ न्यानपि पाठयंति ॥ अध्यापकांस्तानपराब्जपत्रे, स्थि रान्पवित्रान्परिपूजयामि ॥ २ ॥ ॐह्रीं उपाध्या० ॥

॥ अथ पंचम साधुपदपूजा ॥

॥ दोहा ॥ मोक्षमारग साधन नणी, सावधान थ या जेह ॥ ते मुनिवरपद वंदतां, निर्मल थाये देह ॥१॥

॥ छंद ॥ साहूण संसाहिय संजमाणं, नमो नमो सुद्ध दयादमाणं ॥ करे सेवना सूरिवायग गणीनी, करूं वर्णना तेहनी शी मुणीनी ॥ समेता सदा पंच

समितित्रिगुप्ता, त्रिगुप्तें नही काम भोगेषु लिप्ता ॥ वली बाह्य अंभ्यंतरें ग्रंथि टाली, हुये मुक्तिने योग्य चारित्र पाली ॥ शुनाष्टांग योगें रमे चित्त वाली; नमुं साधुनें तेह निज पाप टाली ॥ १ ॥

॥ ढाल ॥ सकल विषय विष वारिनें, आतमध्यानें राता रे ॥ उपशम रसमां झीलता, निज गुण ज्ञानें माता रे ॥ १७ ॥ हित धरि मुनिपद वंदियें ॥ ए आंकणी ॥ रतनत्रयी आराधतां, षट्काया प्रतिपाले रे ॥ पंचेंद्री झीपे सदा, जिन मारग अजुवाले रे ॥ हि० ॥१८॥ गुण सत्तावीश अलंकस्था, पंच महाव्रत धारी रे ॥ द्वादशविध तप आदरे, चिदानंद सुखकारी रे ॥ हि० ॥१९॥ नवविध ब्रह्मचरिज धरे, करम महा भट जीत्या रे ॥ एहवा मुनि ध्यावे सदा, ते नर जगत विदीता रे ॥ हि० ॥ २० ॥

॥ श्लोक ॥ व्याख्यादिकर्म कुर्वाणान, शुनध्यानैकमानसान् ॥ उदक्पत्रगतान्नित्यं, साधून्वंदामि सुव्रतान् ॥ १ ॥ वैराग्यमंतर्वचसि प्रसिद्धं, सत्यं तपो द्वादशधा शरीरे ॥ येषामुदक्पत्रगतान् पवित्रान, साधून् सदा तान, परिपूजयामि ॥ ॐह्रीं सर्वसाधुभ्यो०

॥ अथ षष्ठदर्शनपदपूजा ॥

॥ दोहा ॥ जिनवर नाषित शुद्धनय, तत्त्व तणी परतीत ॥ ते सम्यग्दर्शन सदा, आदरियें शुनरीत॥१॥

॥ छंद ॥ जिणुत्ततत्ते रुइलरकणस्स, नमो नमो निम्मलदंसणस्स ॥ विपरियासहठ वासनारूप मिथ्या, टले जे अनादी अठे जे मपथ्या ॥ जिनोक्तें हुवे सह जथी सरदहानं, कहियें दर्शनं तेह परमं निधानं ॥ विनाँ जेहथी ज्ञानमज्ञानरूपं, चरित्रं विचित्रं नवारण्य कूपं ॥ प्रकृति सात उपशमक्षयें तेह होवे, तिहां आपरूपें सदा आप जोवे ॥ १ ॥

॥ ढाल ॥ सुगुरु सुदेव सुधर्मनी, सदहणा चित्त धरियें रे ॥ सात प्रकृतिनो क्षय करी, क्षायिक समकित वरियें रे ॥२१॥ दरिसण पद नित वंदियें ॥ए आंकणी ॥ इण विण ज्ञान निफल कह्युं, चारित्र निःफल जाये रे ॥ शिव सुखजं विण नां मीले, बहु संसारी थाये रे ॥ द० ॥ २२ ॥ सतसठि नेदें शोनतुं, अजरामर फल दाता रे ॥ जे नर पूजे नावशुं, ते पामे सुख शाता रे ॥ द० ॥ २३ ॥

॥ श्लोक ॥ जिनेंद्रोक्तमतं श्रद्धा, लक्षणं दर्शनं यजे ॥ मिथ्यात्वमथनं शुद्धं, न्यस्तमीशानसहले

॥ १ ॥ ॐ ह्रीँ सम्यग्दर्शनाय नमः ॥ इति ॥ ६ ॥

॥ अथ सप्तम ज्ञान पद पूजा ॥

॥ दोहा ॥ सप्तम पद श्री ज्ञाननुं, सिद्धचक्र तप मांहि ॥ आराधीजें शुन मनें, दिन दिन अधिक नच्छाहि ॥

॥ छंद ॥ अन्नाण संमोह तमोहरस्स,. नमो नमो नाण दिवांयरस्स ॥ हुवे जेहथी ज्ञान शुद्ध प्रबोधं,.यथा वरण नाशे विचित्रं विबोधं ॥ तिणें जाणीएं वस्तु षडद्रव्य नावा, न होवे वितञ्चा निजेञ्चा स्व नावा ॥ हुवे पंचमत्यादि सुज्ञान नेदें, गुरूपास्तथी योग्यता तेह वेदे ॥ वली ज्ञेय हेया नपादेय रूपें,लहे चित्तमां जेम ध्वांतप्रदीपें ॥ १॥

॥ ढाल ॥ नक्ष अनक्ष विचारणा, पेय अपेय निर्धारो रे ॥ कृत्य अकृत्य ने जाणियें, ज्ञान महा जयकारो रे ॥ २४ ॥ ज्ञान निरंतर वंदियें ॥ ए आंकणी ॥ ज्ञान विना जयणा नही, जयणा विण नही धर्मो रे ॥ धर्म विना शिव सुख नही, ते विण न मिटे नर्मो रे ॥ज्ञा०॥२५॥ पांच प्रकार छे जेहना,नेद एकावन तासो रे ॥ जाणीनें पूजे सदा,ते लहे केवल खासो रे २६

श्लोक ॥ अशेषद्रव्यपर्याय, रूपमेवावनासकम् ॥ ज्ञानमाग्नेयपत्रस्थं, पूजयामि हितावहम् ॥ इति॥७॥

॥ अथ अष्टम चारित्र पद पूजा ॥

॥ दोहा ॥ अष्टमपद चारित्रनुं, पूजो धरी उमेद ॥ पूजत अनुनव रस मिले, पातक होय उछेद ॥ १ ॥

॥ छंद ॥ आराहियाखंमिय सक्कियस्स, णमो णमो संयमवीरियस्स॥ वली ज्ञानफल चरण धरियें सुरंगें, निरासंसत द्वाररोधें प्रसंगें ॥ नवांनोधिसंतारणे यानतुल्यं, धरुं तेह चारित्र अप्राप्तमूल्यं ॥ १ ॥ हुवे जास महिमाथकी रंक राजा, वली द्वादशांगी नणी होय ताजा ॥ वली पाप रूपोपि निःपाप थाये, थई सिद्ध ते कर्मनो पार जाये ॥ २ ॥

॥ ढाल ॥ सर्वविरतिनें देशविरतिथी, अणागार सागारी रे ॥ जयवंतो थावो सदा, ते चारित्र गुण धारी रे ॥ २७ ॥ चारित्रपद नित वंदीयें ॥ ए आंकणी ॥ षटखंम सुख तजि आदरे, संयमशिव सुखदायी रे ॥ सत्तर नेदें जिन कह्यो, ते आदरियें नाई रे ॥ चा० ॥ २८ ॥ तत्त्वरम्मण तसु मूल छे, सकल आश्रवनो त्यागी रे ॥ विधिसेंती पूजन करे, नाव धरी वडनागी रे ॥ चा० ॥ २९ ॥

॥ श्लोक ॥ सामायिकादिनिर्नेदै, श्चारित्रं चारु पंचधा ॥ संस्थापयामि पूजार्थं, पत्रे द्वि नैकृते क्रमात्.

॥ १ ॥ ॐ ह्रीं सम्यग्चारित्राय नमः ॥ इति ॥ ७ ॥

॥ अथ नवम तपपद पूजा ॥

॥ दोहा ॥ कर्मकाष्ठप्रति आलवा, परतख अग नि समान ॥ ते तपपद पूजो सदा, निर्मल धरियें ध्यान ॥

॥ छंद ॥ कम्मद्दुमोम्मूलणकुंजरस्स, नमो नमो तिव्वतवोजरस्स ॥ त्रिकालिकपणें कर्म कषाय टाले, निकाचितपणें बाधियां तेह बाले ॥ कह्युं तेह तप बाह्य अंतर डुजेदें, क्षमा युक्त निर्हेतु डुर्ध्यान छेदे ॥ हुवें जास महिमाथकी लब्धि सिद्धि, अवांछकपणे कर्म आवरण शुद्धि ॥ तपो तेह तप जे महानंद हेतें, हुवे सिद्धि सीमंतिनी निज संकेतें ॥ १ ॥

॥ ढाल ॥ निज इछा अवरोधीयें, तेहिज तप जिन नाख्युं रे ॥ बाह्य अभ्यंतर नेदथी, द्वादशनेदें दाख्युं रे ॥३०॥ अनुपम तप पद वंदीयें ॥ ए आंकणी ॥ तदनव मोक्ष गामीपणुं, जाणे पण जिन राया रे ॥ तप कीधां अति आकरां, कुत्सित करम खपायां रे ॥ अ० ॥३१॥ करम निकाचित क्षय हुवे, ते तपने परन्नावें रे ॥ लब्धि अठावीश ऊपजे, अष्ट महासिद्धि पावे रे ॥ अ० ॥३२॥ एहवुं तपपद ध्यावतां, पू

जंतां चित्त ग्राहे रे ॥ अक्षयगति निर्मल लहे, ग्रहे योगिंद सराहे रे ॥ अ० ॥ ३३ ॥

॥ श्लोक ॥ द्विधा द्वादशधा भिन्नं, पूते पत्रे तप श्रयं ॥ संस्थापयामि भक्त्यात्र, वायव्यां दिशि शर्मदम् ॥ ॐ ह्रीँ सम्यग्तपसे नमः ॥ इति ॥ ए ॥

॥ अथ कलश ॥

॥इम नव पद ध्यावे, परम आनंद पावे, नव भव शिव जावे, देव नर भव पावे ॥ ज्ञान विमल गुण गावे, सिद्ध चक्र प्रभावें; सहु डुरित शमावे, विश्व जय थकार पावे ॥ १ ॥

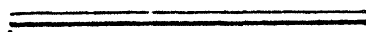
॥ अथ स्तवन रूप नो कलश ॥

॥अरिहंत सिद्ध आचार्य उवझाय, साधु दंसण नाण ए ॥ चारित्र तप नवपद थकी, इहां सिद्धचक्र प्रमाण ए ॥१॥ श्रीपाल राजा सुख ताजा, लह्यां सिद्ध चक्र ध्यानसों ॥ भविजन भजो जिन लाभ जाणी। हिये आणी भाव सों ॥ २ ॥ इय नवपय सिद्धिं, लद्धि विज्जा समिद्धं, पयडिय सरवग्गं, ह्रीँतिरेहासमग्गं ॥ दिसिवइ सुरसारं, खोणिपीढावयारं, तिजय विजयचक्कं सिद्धचक्कं नमामि ॥ ३ ॥ निःस्वेदत्वादि दिव्यातिशयमयतनून् श्री जिनेंद्रान्सुसिद्धान्, सम्य

क्त्वादि प्रकृष्टाष्टगुणगणभृदा, चार सारांश्च सूरीन् ॥ शास्त्राणि प्राणिरक्षाप्रवचनरचनासुंदराण्यादिशंत, स्त त्सिद्ध्यै पाठकानां यतिपतिसहितानर्चया म्यर्घ्यदानैः ॥१॥ इत्थमष्टदलं पद्मं, पूरयेदर्हदादिभिः ॥ स्वाहांतैः प्रणवाद्यैश्च, पदैर्विघ्ननिवृत्तये ॥२॥ ॐ ह्रीं पंचपरमेष्ठि ने सम्यग्ज्ञानादिभिःचतुरन्वितेभ्यो नमः ॥ इति श्री न वपदस्तुतिः ॥ इति लघु नवपद पूजा समाप्त ॥

॥ अथ आरती ॥

॥ए नवपद प्राणी नित ध्यावो, पंचम गत सास य सुख पावो ॥ ए आंकणी ॥ धुरथी अरिहंतपद ध्याइजें, थिरतायें श्री सिद्ध थुणीजें॥ए०॥१॥आचार ज तीजें आराधो, सूधे मन निज कारिज साधो ॥ ए० ॥ २ ॥ उवझाया पंचम अणगारा, प्रणमंतां पा मे नवपारा ॥ए०॥३॥ दंसण नाण चरण जल दीपे, तप तपतां क्रम अरिने झीपे ॥ए०॥ ४ ॥ ए नवपद प्राणी नित थुणतां, गिरुवा नरभव सफल गिणंता ॥ ए० ॥ ५ ॥ सिद्धचक्रनी कीजें सेवा, मनवंछित ल हियें नित मेवा ॥ ए० ॥ ६ ॥ अजर अमर सुखदा यक साचो, रूडे मनसे नित प्रति राचो ॥ ए०॥ ७ ॥



॥ अथ श्री नंदीश्वरद्वीप पूजा प्रारंभः ॥

तत्र

॥ प्रथम न्हवण पूजा ॥

॥ दोहा ॥ स्वस्तिश्री सुखकरण घन, विघनहरण जयकार ॥ अश्वसेन नंदन चरण, शरण रुचिर उरधार ॥ १ ॥ जिनवाणी समरण करी, सकलजीव सुखकार ॥ कहिशुं नंदीश्वर जगत, पति पूजन विस्तार ॥ २ ॥

॥ ढाल ॥ तीर्छा अखिलद्वीप शिरताजे, अष्टम नंदीश्वर द्वीप राजे ॥ वलयाकार जगत सुखकारी, निरुपम अतिशय गुण मणिधारी ॥ १ ॥

॥ उल्लालो ॥ मणिधारि बावन, विमल गिरिवर, जैनमंदिर युत सदा ॥ शुभभक्ति धर, निर्जरपुरंदर, निरखि पामे संपदा ॥ इक कोडि शतत्रिण, सठिकोडिय, चोरासीलख योजना ॥ इण द्वीपनो, चक्रवाल विष्कंभ, मान जाणो भो जना ॥ १ ॥

॥ ढाल ॥ इण द्वीपें पूरव दक्षिण आसा, पश्चिम उत्तर दिशि चउपासा ॥ चतुरंजन गिरिसुखमा धारी, चारणसुर विद्याधरचारी ॥ २ ॥

॥ उल्लालो ॥ धरचारि निज द्युति, भरवि निर्जित, सजल जलधर घनघटा ॥ वलि चतुरशीति, सहस्र यो

जन, तुंगता धरता स्फुटा ॥ इण प्रवर अंजनं, शिख रि शिखरें, शाश्वतां जिनमंदिरां ॥ चउसंख्य सुंदर, क नक कलशो, पमधरा जग सुखकरा ॥ २ ॥

॥ ढाल ॥ इकइक अंजनगिरि चउपासा, चउपुक रिणी प्रगट प्रकासा ॥ विस्तर इगलख योजनसारा, तासुमांहि इक इक उदारा ॥ ३ ॥

॥ उलालो ॥ इक इक उदारा, सहस्र चउसठि. योजनोन्नतताकुला ॥ जिनराज मंदिर, मंम्फिता सहु. चंद किरण समुज्ज्वला ॥ दधिमुख धरा, धरदीर्घिका प्र ति, विदिशि दोय दोय रतिकरा ॥ दशसहस्र योजन; उन्नताधर, उदय करुणारुणवरा ॥ ३ ॥

॥ ढाल ॥ जिनमंदिर युत रतिकर विमला, पूरव दिशि तेरस सहु अचला ॥ यह रीतें पर त्रिण दिशि जा णो, इम बावन्नगिरी इ वखाणो ॥ ४ ॥

॥ उलालो ॥ इ वखाण शत, योजन सुदीर्घा, ब हुत्तर योजन प्रमा॥ अति उन्नता, पंचास योजन, विस्तरा जिनगृहसमा ॥ शतएक अष्टो, त्तर प्रमाणा, पंचशत धनुरुन्नता, इण रीति प्रति, प्रासाद प्रतिमा, जाणियें बिंब शाश्वतां ॥ ४ ॥

॥ दोहा ॥ ऋषभानन, चंद्रानना, वारिषेण वर्धमा

न ॥ ए जाणो शाश्वत सकल, जिनप्रतिमा अभिधान॥
॥ १ ॥ सुरगिरि शिखरें जिन तणो, जिनन्हवणोत्स
व सार ॥ करिके नंदीश्वर जई, हरिगण विबुध उदा
र ॥ २ ॥ अनुभव रसयुत भक्तिधर, हृदय सरोज म
झार ॥ इण परि शाश्वत जिनतणी, करे पूज अति
सार ॥ ३ ॥ पूरवदिशि अंजनगिरी, मंदिरगत जिन
राज ॥ अडविधि पूजायें सदा, अरचीजें हित काज
॥ ४ ॥ प्रथम पूज जिन राजनी, विमल जलें भरपूर ॥
करियें न्हवण सदा भवी, होय सकल दुःख दूर ॥ ५ ॥

॥ कुंदकिरण शशिऊजलोजी देवा ॥ ए देशी ॥

॥मिलि करि सकल सुरासुरा रे वाला, निज सेवक
सुर पासें रे ॥ क्षीर जलधि मागधथकी रे वाला, सिं
धुनदी गंगासें रे ॥ १ ॥ वलि वरदाम सुतीर्थसें रे वा
ला, विमल सलिल अणावे रे ॥ मणि कनकादि क
लश भरी रे वाला, उषधि कुसुम मिलावे रे ॥ २ ॥
इंद्रादिक सहु सुरगणा रे वाला, शाश्वत जिन न्हव
वरावे रे ॥ विमल सलिल धारा करी रे वाला, कुम
ति तापने गमावे रे ॥ ३ ॥ इण परि जे भगतें भवी
रे वाला, न्हवण करे जिन अंगें रे ॥ ते सुरवर सुख
अनुभवी रे वाला, लहे शिवपद मन रंगें रे ॥ ४ ॥

द्रव्यपूज करि सुरवरा रे वाला, करे जिणंद गुणगाना. रे ॥ कुशल कुमुद विकसायवा रे वाला, प्रभु शिवचंद समाना रे ॥ ५ ॥

॥ काव्यं ॥ दुरितदावघनातपवारणं, सकलभाव विकासनकारणम् ॥ जगति भव्यभवोदधि तारणं, जिनगणं स्नपयाम्यमलैर्जलैः ॥ १ ॥ ॐह्रीं श्रीअर्हं परमात्मभ्योऽनंतानंतज्ञानशक्तिभ्यः प्रणतसकलसुरासुरेंद्रवृंदविहितभक्तिभ्यः कठिनकर्म्मशालमालोन्मूलनचरणेभ्योजन्मजरामृत्युनिवारणकारणेभ्योनंदीश्वराष्टमद्वीपगतपूर्वांजनगिरिशिखरस्थसिद्धायतनमंडनाय मानेभ्यः श्रीऋषभाननचंद्राननवारिषेणवर्द्धमानाभिधानाष्टोत्तरैकशतशाश्वतजिनेंद्रेभ्यो जलं यजामहेस्वाहा ॥ इति प्रथम जलपूजा ॥ १ ॥

॥ अथ द्वितीय चंदनपूजा ॥

॥ दोहा ॥

॥ द्वितीयपूज जिनराजकी, करहुं भक्ति भर सार ॥ वरसुगंध द्रव्यें करी, तरहुं सिंधु संसार ॥ १ ॥

॥ मेघ वरसे भरी पुष्फवादल करी ॥ ए देशी ॥

॥ भक्ति धरि भविजन, पूज महाराजकुं, एह वर गंध द्रव्यें सदाई ॥ विमल घनसार, चंदन सरसमृगमद

दा, कुंकमें कर विलेपन मुदाई ॥ ज० ॥ १ ॥ जे ज वी सुरजितर गंधद्रव्यें करी, सुरजितनु करे, जिनराज केरो ॥ तेहनी चंद्रकर,अमल यशवासना, सुरजितम करइ, सहु जग घणेरो ॥ ज० ॥ २ ॥ एम वर सुरजि तर, द्रव्यसें सुरवरा, अरच करि जगपती बिंब सारा॥ परमशुज जावना, जावता गावता, विशद जिनव र गुणा अति अपारा॥जा०॥३॥सकलसुरगण मिली,ए म जंपे मुदा, जो सुरा आज जिनराज अरचो ॥ वि रति गुण रहित, निज जन्म सफलो कियो, सुमति संयोग कुरमति विगूचो ॥ ज०॥ ४ ॥ इतिय इम पूज, करतां हरे जव्यनो,पापघनताप आपें अपारा ॥ स रग निरवाण, पुरपंथ प्रकटीकरण, विशदशिव चंद्रक रगण उदारा ॥ ज० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ काव्यं ॥ मृगमदोज्ज्वल कुंकुम चंदनै,श्चिरतनां तरतापनिकंदनैः ॥ जिनवरानघतामसजास्करान् , स्व हितकृद्दिधयें च समर्चये ॥ १ ॥ ॐह्रीं श्रीअर्हं परमात्म० प्रणत० कठिन० नंदीश्वरा० रू० चंद्रा० वारि० वर्द्धमानाष्टोत्तरैकशत शाश्वत जिनें० चंदनं यजामहे स्वाहा ॥ इति द्वतीयचंदन पूजा॥ २ ॥

॥ अथ तृतीय पुष्पपूजा ॥

॥ दोहा ॥

॥तृतीयपूज जिनराजनी, विकसित अंतिहि रसाल॥ सुरजिकुसुम करि जविय जन,करियें जक्ति विशाल॥१॥

॥ पांच वरणी अंगी रची ॥ ए देशी ॥

॥ एह जिनकी पंकहरणी जगति सारी ॥ मलि करि हरिवर सकल सुरासुर, त्रिकरण इक करि हितकारी ॥ एह० ॥ १ ॥ अनुजवरसयुत चित्त जक्ति धरि, पूरव पुण्य उदय जारी ॥एह०॥ इणविध कुसुम जक्ति जिनवरकी, करइ हरइ घन डुरितारी ॥ ए० ॥ २ ॥ मालती नागपुन्नाग केवडो, दमणक कुंद सुगंधधारी ॥ एह०॥मरुक केतकी पद्म मोगरा,कुसुममाल करि मनुहारी ॥ए०॥३॥ जिनवर कंठ ठवे प्रजु आगल,कुसुमपुंज धरि डुःख वारी ॥ए०॥ इणविध पुष्प जक्ति करि जविजन, वरइ सकल जग सिरनारी ॥ ए० ॥ ४ ॥ करिकें शुक्लध्यान पावकसें, जस्म विषम सम कर्म वारी ॥ ए० ॥ चिदानंदघनशिवचंदोपम, पामे अतिगुण विस्तारी ॥ ए० ॥ ५ ॥

॥ काव्यं ॥ जवदवानलतापघनाघनं, कुशलचंदन नंदनकाननम् ॥ विशदशारदचंद्रसमाननं, जिनगणं

कुसुमैश्च समर्चये ॥६॥ ॐह्रींश्रीं अर्हं परमात्मन्भ्यो ऽनंता० ॥ प्रणत० कविन० नंदी० श्री ऋष० चंद्रा० वारि० वर्द्ध० निधान अ० जिने०भ्यो पुष्पं यजामहे स्वाहा ॥ १ ॥ इति ॥ ३ ॥

॥ अथ चतुर्थ धूपपूजा ॥

॥ दोहा ॥

॥ जगनायक जिनचंदनी, एह चतुर्थी जाण ॥ धूपपूज करियें सदा, हरियें कुमति अनाण ॥ १ ॥

॥ सब अरतिमथनमुदारधूपं ॥ ए देशी ॥

॥ जग कुशलकारि अघालि हरणं, धूपपूज उदार रे ॥ धूप अनलें कुगति दुःख नर, फलद दहन अपार रे ॥ १ ॥ ज० ॥ सरस चंदन अगर अंबर, मृगमदा घनसार रे ॥ कुंदरुक्कबली सेलारस, करियें गंधवटि सार रे ॥ ज० ॥ २ ॥ रतनमय वर धूपधाणुं, धूप नृत कर धार रे ॥ सुर पुरंदर पूज करतां, लहे लाभ अपार रे ॥ ज० ॥ ३ ॥ धूप परिमल महमहे जिम, तेम भुवन मझार रे ॥ धूपपूजा ते नविकनो, गुण सुगंधि विचार रे ॥ ज० ॥ ४ ॥ नव अंधकूप पतंत उधरत, धूप अरचन धार रे ॥ कहत गणि शिवचंद पाठक, पूज चतुर्थी सार रे ॥ ज० ॥ ५ ॥

॥ काव्यं ॥ नव सुडुस्तर वारिधि तारणं, विषय सौख्यविकारनिवारकम् ॥ निरुपमोत्तरमंगलकारकं, जिनगणं धृतधूपकरायते॥ १ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं परमात्म० प्रणत कठिन० ॥ नंदीश्वरा० श्रीरिष० चंद्रा० ब्रा० रि० वर्द्धमानाभिधान अ० धूपं य० ॥ इति ॥ ४ ॥

॥ अथ पंचम दीपपूजा ॥

॥ दोहा ॥

॥ दीप पूज इह पंचमी, करियें विविध प्रकार ॥
दीप पूज करतो भविक, दीपे जगत मझार ॥ १ ॥

॥ तेरी पूजा बणी ते रसमें ॥ ए देशी॥

॥ मेरी लगीय प्रीत प्रभु चरणा ॥ जिनगुंण परिणति करण कारण, सकल लोक सुखकरणा ॥ मे०॥ ॥ १ ॥ गहिर सिंधुभव निपतित तारण, तरण तरणि गुण धरणे ॥मे०॥ अनंत रूपधर डुर्गति भयहर, परम ज्योति अधिकरणे ॥ मे० ॥ २ ॥ करुणाधार विमल गुण आगर, निरुपम अशरण शरणें ॥ मे० ॥ ए जिनचरण दीप पूजनसें, अर्चीजें डुख हरणे ॥ मे० ॥ ॥ ३ ॥ केवल विमल चिदानंद लहियें, दीप पूजके करणे, ॥ मे०॥ रतन दीपसें करे आरती, हरिगण जिनगुंण चरणे ॥ मे० ॥ ४ ॥ ए प्रभु चरण सेव भवि

जनकुं, अमृत पद सुवितरणें ॥ मे० ॥ कुमति रजनि अज्ञान तिमिर हर, वर शिवचंद सु किरणें ॥ मे० ॥ ५ ॥

॥ काव्यं ॥ मदनसिंधुरसिंधुरवैरिणं, गुरु कषा यरेणुसमीरणम् ॥ मदधराधरतावल वैरिणं. जिनगणं प्रयजे वरदीपकैः ॥ ६ ॥ ॐ ह्रीं श्री परमा० प्रण त० कवित० नंदीश्वरा० श्रीऋषभ० चंद्रा० ॥ वारि० ॥ वर्द्धमान अ० दीपं यजामहे स्वाहा ॥ इति ॥ ६ ॥

॥ अथ षष्ठाक्षत पूजा ॥

॥ दोहा ॥

॥ छठी अक्षत अरचना, करियें धरि शुभ भाव ॥ व रियें सिद्धवधू परम, अक्षय सुखनो दाव ॥ १ ॥

॥ हांहो रे देवा बावना चंदन घसि कुमकुमा ॥ हांहो रे वाला ए जगदीसर हितकरू, अलवेसर जिन माहाराज ए ॥ अतिगहिरा भवजलधितें, प्रभु तारण तरण जिहाज ए ॥ हां० ॥ १ ॥ भीमकरम कुंजर घटा, भंजन मृगराज समान ए ॥ हांहो रे वाला भ व्यकमल प्रतिबोधवा, ए प्रभुवासर महिरान ए ॥ ॥ हां० ॥ २ ॥ रजत शालि तंदुलमयी, अक्षत पूजन अग्रसार ए ॥ ए पूजा जिनचंदनी, वांछित सुखनी दातार ए ॥ हां० ॥ ३ ॥ त्रवण जिनंद दरिसण अ

बे, अनुनव रसतरुनो कंद ए ॥ नाव जिणेसर दर सनो, कारण कह्यो सकल जिणंद ए ॥ हां० ॥ ४ ॥ ए पाठक शिवचंदने, जिन चरण शरण आधार ए ॥ प्रतिनव हुय जो ए कही बही, अक्षत पूजा सार ए॥ ५ ॥

॥ काव्यं ॥ विजितमंदरनूधरधीरतं, निहत सागरराजगनीरतम् ॥ प्रजितपातकयोधसुवीरतं, जिनगणं प्रयजेऽक्षतपूजया ॥६॥ ॐ ह्रीं श्रीं अर्ह परमात्मन्यो अनंता० प्रणत० कठिन० नंदीश्वरा० श्रीऋ प० चंद्रा० नारिषेणवर्द्धमानानिधानाष्टोत्तरेक० जिनें० अक्षतान् यजामहे स्वाहा ॥ इति ॥ ६ ॥

॥ अथ सप्तम नैवेद्यपूजा ॥

॥ दोहा ॥

॥ हिव पूजा नैवेद्यनी, सप्तम अतिहि विशाल ॥ करियें जिनवरनी अचल, लहियें मंगल माल ॥ १ ॥

॥ राग ॥ जिनगुणगामं श्रुतअमृतं ॥ ए देशी ॥

॥जिनवर दरिसण वर अमृतं॥ आंकणी ए नित दरिसण अमृत फरसे, नवि तजि मिथ्या अवगुणतं ॥ जि० ॥ १ ॥ जगदीसर परमात्मदशापद, पामे अनुपम कांचनतं ॥ तिणसें सुरपति प्रनुदरिसण वरि, नगतें गांवे जिनचरितं ॥ जि० ॥ २ ॥ मोदक घृत वरखज्ञा

क परमुख, वरनैवेद्य सरस धरितं ॥ हरिगण जगप्रभु आगल ढोवे, मणिमय कनकथाल भरितं ॥ जि० ॥ ॥ ३ ॥ जे नैवेद्य करी जिनपूजन, करइ तेह जगम न हरितं ॥ अतिही स्वादु सुरगति शिवपद सुख, त तिनित सेवे भवि तुरितं ॥ जि० ॥ ४ ॥ विंशति पद में ये जिनपति पद, वरशिवचंद विमल अमितं ॥ इ णपद सेवक भविजन केरो, संचित भूरि हरइ डुरित ॥ ॥ काव्यं ॥ अनंतविज्ञानमयस्वरूपं, समस्तलोक त्रयभूतिभूपम् ॥ लसज्जणौघामृत चारुकूपं, यजे सुनै वेद्यचयाज्जिनौघम् ॥६॥ ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं परमात्मने ऽनंता० प्रणत० कविन० नंदी० श्रीरूप० चंद्रा० वा रि० वर्द्धमानाभिधानाष्टोत्तरैकशत जिनेभ्यो० नैवेद्यं यजामहे स्वाहा ॥ इति ॥ ७ ॥

॥ अथाष्टमफलपूजा ॥

॥ दोहा ॥

॥ जिनफल पूजा अष्टमी, कष्टअनिष्टविदार ॥
करियें शुभभावें सदा, भरियें पुण्य भंमार ॥ १ ॥

॥ तेजतरणि मुख राजे ॥ ए देशी ॥

॥ सुरनायक जस गावे, जिनजीको ॥ सुर० ॥ ए आंकणी॥निरमल मनवच काय करणसें,ललिललि शी

श नमावे ॥ सुर अवतार सफल भयो मेरो, जिनपू
जन सुपसावे ॥ जि० ॥ १ ॥ नयनचकोर चंद्र सम
ज्योती, संचित दूर पुलावे ॥ निरखि निरखि मनमोह
न मूरति, आनंद अंग न मावे ॥ जि०॥ २ ॥ नालि
केर नारंगी कवला, केलां आम्र अणावे ॥ पूगीफल
दाडिम परमुख फल, जिनवर चरण चढावे ॥ जि०
॥ ३ ॥ जे भवि फलपूजा जिनवरकी, करे करावे भा
वे ॥ अनुमोदे ते परमचिदानंद, घनअमृत फलपावे॥
जि० ॥ ४ ॥ वरस अढार बिहोत्तर जेठें, प्रतिपद सु
कल सुहावे ॥ चंद्रसूनुवासर जय नगरे, खरतर गछ
जग चावे ॥ जि० ॥ ५ ॥ श्रीजिनहर्ष सूरि सूरीसर,
विजयमान वडदावे ॥ रूपचंद गणिपाठक पारी, वा
दींद्र बिरुद धरावे ॥ जि० ॥ ६ ॥ तास शिष्य वाचक
पुण्यशील शिष्य, समयसुंदर कहिरावे ॥ तासु शिष्य
पाठक शिव चंदें, पूज रची मन भावें ॥ ७ ॥ जे नंदी
श्वर शाश्वत जिनकी, वसुविध पूज रचावे ॥ ते जन
सकल लोकके ईश्वर, तीर्थंकरपद पावे ॥ जि० ॥ ८ ॥

॥ काव्यं ॥ कलश ॥

॥ सुरपति सुरासुर, वृंद वंदित, चरण पंकजमघह
रं ॥ सद्द्वीप नंदीश्वरं जिनालय, परमतर सुख माक

रं ॥ अति निशद हिमकर, चंद्रिका मल, निखिल गु
ण मणि सागरं ॥ जिनराज गणमह, मंचये वर, फ
ल चयैः करुणाकरं ॥ए॥ ॐ ह्रीं श्री परमात्मन्यो ऽनं
ता॰प्रणक्षस॰ कत्रिन॰ नंदीश्वरा॰ श्री ऋष॰ चंद्रा
नन॰ वारि॰ वर्द्धमानाभिधानाष्टोत्तरैकशतशाश्वत
जिनेंद्रेभ्यः फलं यजामहे स्वाहा ॥ इत्यष्टम॰ ॥ ७ ॥

॥ दोहा ॥

॥ पूरव दिशि अंजनगिरा, मंदिरगत जिनराज ॥
अडविधि पूजायें सदा, अरचीजें हितकाज ॥ १ ॥
पूरव परमुख चिहुं दिसे, पुक्करणी अभिराम ॥ दधि
मुख चउमंदिर जिना, अरचीजें शुभ काम ॥ २ ॥
ईशानादी विदिशिगत, वसुरतिकर गिरिराज ॥ मंदिर
गत जिनराजकी, करियें पूज समाज ॥ ३ ॥ दक्षिण
अंजनशैलमें, चउ दिशि दधिमुख सार ॥ चउमंदिर
जिनराजकी, करियें पूज उदार ॥ ४ ॥ दक्षिण दिशि
अंजन गिरी, मंदिरगत जिनराज ॥ वसुविधि पूजायें
सदा, पूजीजें हित काज ॥ ५ ॥ दक्षिण ईशानादिकें,
विदिशें अतिहि उदार ॥ अड रतिकर गिरिवर जिना,
पूजो विविध प्रकार ॥ ६ ॥ पश्चिम दिशि अंजन गि
री, मंदिर जिन महाराज ॥ वसुविधि पूजायें सदा, पू

जो नविक समाज ॥ ७ ॥ पश्चिम अंजन शैलनें, च उदिशि दधि मुखधार ॥ चउमंदिर जगनाथकी, पूज करो सुखकार ॥ ८ ॥ पश्चिम ईशानादिकें, विदिशें जग हित काज ॥ अड रतिकर गिरि जिनप्रतें, अस्तुं जगदाधार ॥ ए ॥ उत्तर दिशि अंजनगिरी, मंदिर गत जगराय ॥ अष्टविधार्चनसें नविक, अर्चो जीउ सुखदाय ॥ १० ॥ उत्तर अंजनशैलनें, चउदिशि दधि मुखनांम ॥ चउमंदिर तीर्थेशने, अरचो शुन परिणाम ॥ ११ ॥ उत्तर ईशानादिकें, विदिशें रुचिराकार ॥ वसु रतिकरगिरि जगविनू, पूजो अरति विदार ॥ १२ ॥ सकल संघ वलि जेठमल, कोठारी चित्तचंग ॥ इनके आग्रहसें करी, पूजा अतिहि सुरंग ॥ १३ ॥ इति श्री नंदीश्वरजीकी पूजा संपूर्णा ॥

अथ पाठक बालचंद विरचित पंच कल्याणक पूजा॥

॥ तत्र प्रथम चवन कल्याणिक पूजा ॥

॥ दोहा ॥

॥ ज्योतिरूप जगदीशनुं, अद्भुत रूप अनूप ॥ प्रवचन प्रजुता प्रगट पण, जय जय ज्योति सरूप ॥ १ ॥

॥ चौवीसे जिनवर नमी, पंच कल्याणक रूप ॥ शासन नायक वरणवुं, दर्शन ज्ञान सरूप ॥ १ ॥

॥ कल्याणक उत्सव करे, इंद्रादिक जे देव ॥ ते भा
वे नविजन करे श्रीजिनवरनी सेव ॥ १ ॥

॥ राग सरपदो ॥ जोति सकल जगदीसनी ॥ ह
रे जगदीसनी ए ॥ चार निक्षेप प्रमाण ॥ नाम जि
नादिक जिन कह्या आगममांहि प्रधान ॥ १ ॥

॥ गाथा ॥ नाम जिणाजिण नामा, ठवण जिणा
उ जिणंद पडिमाउ ॥ दव्वजिणा जिण जीवा. भाव
जिणा समवसरणत्था ॥ १ ॥

॥ ढाल तेहीज ॥ विन कारण कारज नही, हां रे
का० ए ॥ ए सब लोक प्रसिद्ध ॥ भाव निक्षेप प्रश्न
नता, कारज रूपें सिद्ध ॥ १ ॥ विण आकारें द्रव्य
नो ॥ हां० ॥ द० ए ॥ न हुवे थापन सिद्ध ॥ नामवि
ना आकारनो, प्रगट पणे नवि बुद्ध ॥२॥ नामादिक
कारण सही॥हां०॥का० ए॥इन विन भाव न होय॥भा
व विशुद्धें जिनतणी,पूज करी सहु कोय॥३॥विवहारें
निश्चय लहे॥ हां० ॥ नि० ए ॥ कारण कारज होय॥
पावड शाला क्रम करी, सौध चढे सहु कोय ॥ ४ ॥

॥ दोहा ॥

॥ ज्ञानकला कलितातमा, लोकालोक प्रकाश ॥ व्या
पकभावें थिर रह्यो, शुद्ध विकासं विलास ॥ १ ॥

॥ राग सारंग ॥ हांहो रे देवा जोति सकल जिन राजनी, सहु लोकालोक प्रकाश ए ॥ हांहो रे देवा राजत श्रीजिनराजजी, वाणी प्रवचन शुभवास ए ॥ ॥ १ ॥ हांहो रे देवा मात नमुं नित्य शारदा, गुरुपंच कल्याणक सार ए ॥ हांहो रे देवा तीर्थंकरना वरणवुं, गुण शास्त्र परंपर धार ए ॥ २ ॥

॥ दोहा ॥

॥ शासन नायक जग धणी, त्रिभुवन पति परमेस ॥
पर उपगारी प्रभु तणा, गुण गावत सहु वेस ॥ १ ॥

॥ ढाल तेरहीज ॥ हांहो रे देवा वीशथानक सेवना, बांध्युं जिन नाम प्रधान ए ॥ हांहो० ॥ दिव्य अमर सुख अनुभवे, प्राये प्रभु पुण्य प्रमाण ए ॥ ॥१॥ हांहो० ॥ निरमलतर वर ज्ञानना, धारक कारक शुभयोग ए ॥हांहो०॥ शब्द वरण रस गंधना, शुभ फरस तणा वर जोग ए ॥२॥ हांहो० ॥शाश्वत सिद्धायण तणा, नित उत्सव करत सुरंग ए ॥ हांहो० ॥ बालचंद पाठक कहे, नित मंगल होत सुचंग ए ॥३॥

॥ दोहा ॥

॥ पुण्य पूर्व भव प्रभु तणो, प्रगट्यो प्रगट प्रभाव ॥
सुरकुमरी नित प्रति करे, नाटक नवनव भाव ॥ १ ॥

॥ पूर्व शुभ सावनं ॥ ए देशी ॥

॥शुद्ध निज दर्शनें, करिय गुणाकर्षना, जिनचरण सेवना विविधकारी॥ह॰ अद्भुत विविधकारी॥रु आं०॥ एक जिनधर्ममय परम लीनता, दीनता सकल तन, रज निवारी ॥ हे अ०॥ र०॥ १ ॥ आत्मगुण अंतरातमपणे वृद्धिता, तजिय बहिरात्मजिन. आ ण धारी ॥ हे अ०॥ आ०॥ २ ॥ शुद्ध सम्यक्गुण. संपदा निज लही, सहीय शुद्ध धर्म रुचि, नाम मारी ॥ हे अ०॥ना०॥३॥विविधमणि रत्नकी, जोति फगमग जगे, चंद्रिका नासनासित करारी ॥ हे अ० ॥ क०॥ ४ ॥ प्रवर कुल शुद्ध, राजन्य प्रमुखें मुदा, आयुक र बंध, नर नव सुधारी ॥ हे अ० ॥ न० ॥ गर्भ अव तार, निज मात उदरें लहे, बाल शुभ लग्न शुभ योग चारी ॥ हे अ० ॥ शु० ॥ ५ ॥

॥ दोहा ॥

॥ शुभदिन शुभ मुहूरत घडी, शुभ उच्च ग्रह चार ॥
देवलोक चवि प्रभु लहे, मातु उदर अवतार ॥ १ ॥
॥ सुंदरवर प्रासाद महि, मध्यनिशा जिनमात ॥ स्व
प्न देख. सुख सेजमें, जाग्रत अति हरखात ॥ २ ॥

॥ राग काफी ॥ जिनजी लगो मवि प्यारा, या

तें आनंद अधिक अपारा ॥ जि० ॥ १ ॥ सूखं सेज सूती जिन माता, देखे सुपना मनजाता ॥ चित्त हरखित हुय तिण वारा ॥ जि० ॥ २ ॥ शुचि गज वृष सिंह मनुहार, लक्ष्मी दाम शशी दिनकार॥धजकुंभ पदमसर सारा ॥जि०॥३॥ वर क्षीर समुद्र विमान, रयणोच्चय मेरु समान ॥ निर्धूम पावक सुखकारा ॥ जि० ॥ ४ ॥ शिवधान्य मंगल श्रियकारी, जाणी अर्थ हृदय क्रमधारी, शुभसूचक पुण्य संभारा ॥जि०॥ ॥५॥सुंदर वर सखियन संगें,करिधर्म जागरिकारंगें,निशि शेष गई तिणवारा ॥ जि०॥ ६ ॥ ए.भणी एकज पुष्पमाला चढावियें ॥

॥ दोहा ॥

॥ परम पुरुष परमातमा, भावी भगवन भास ॥ प्रवचन प्रगटकरण प्रभु, पुण्य तणो सुप्रकाश ॥ १. ॥

॥ पूजा सतर प्रकारी ॥ ए देशी ॥

॥ आज आनंद वधाई, भई त्रिभुवनमें ॥ चौद सुपन सूचित गुण जेहना, अवतरे माता उदरनमें ॥ आ० ॥ १ ॥ नृपति सदन बहु सुपन शास्त्र विध, अर्थ विचार करि निज मनमें ॥ पुत्र रतन फल वचत नृपति कुल, परम कल्याण होत जननमें ॥ आ०

॥ २ ॥ प्रफुल्लित हरख भरत हिय उल्लसत, जिन ज
ननी तात सुनी तनमें ॥ दिन दिन बढत प्रवर धन
जन मन, अधिक उत्साह घर घरनमें ॥ आ० ॥ ३ ॥
रूप्य रजत मणि माणक मोतियें, शंख प्रवाल शिल
वरसनमें ॥ धनद धनद सुरइंद हुकमतें, भरत भंमार
नृपसदनमें ॥ आ० ॥ ४ ॥ ताल कंसाल मधु वीण
बजावत, गीत गात तननमें ॥ दुन्दुभि मुरज मृदंग
घनै गरजत, गरज गरज मानुं जैसे घनमें ॥ आ०
॥ ५ ॥ सुर नर लोक मांहे अधिक उत्साह वाह, नि
शिदिन होत जन जनपदनमें ॥ इंद इंद्राणी नृप दोह
द पूरतं, मनोरथ होत जो जो मातु मनमें ॥ आ०
॥ ६ ॥ परम कल्याण शुभयोग संयोग भयो, शुभ घ
रि शुभ ग्रह शुभ दिनमें ॥ वरण सके न ताहि कवि अ
वसरकों, आनंद भयो तीन भुवनमें ॥ आ० ॥ ७ ॥ इति
श्री च्यवनकल्याणके ॐ ह्रीं श्रीं परमात्मन्योऽनंतानंत
ज्ञानशक्तिभ्यो जन्मजरामृत्युनिवारणकारणेभ्यो द्रव्या
णि यजामहे स्वाहा ॥ इति प्रथम च्यवन पूजा ॥

॥ अथ द्वितीय जन्मकल्याणक पूजा ॥

॥ दोहा ॥

॥ प्रगटे पावन पतित प्रभु, अधम उधारन काज ॥

नृपकुलमांहे अवतरे, त्रिभुवनके शिरताज ॥ १ ॥

॥ राग सोरठी ॥

॥ आज अधिक आनंद भयो रे वाला, आज सुरंग वधाई रे ॥ जगपति जिनवर जनमिया रे वाला, सुर वधु वन मिल आई रे ॥ १ ॥ आठो आज आनंदघ न उलटयो रे देवा, दिशि कुमरी हरखाई रे ॥ आठो दशदिश निर्मलता थई रे देवा, फूल रही वनराई रे ॥ २ ॥ फूलें फूली वनलता रे वाला, मधु मालती म हकाई रे ॥ शालि प्रमुख सहु धान्यनी रे वाला, निप जी राशि सवाई रे ॥ ३ ॥ नारकी जीवें नरकमां रे वाला, क्षण इक शाता पाई रे ॥ सब जन मन हरषि त भयो रे वाला, भूमंमल छबि गाई रे ॥४॥ शुभदिन शुभ मुहूरतघडी रे वाला, शुभग्रह शुभ पल आई रे॥ जन्म थयो जिनराजनो रे वाला, प्रगटी पूर्व पुण्याई रे ॥५॥ ए भणी पुष्प तथा गुलाबजलनी वर्षा करे॥

॥ सोरठो ॥

॥ त्रिभुवन मांहि सुरूप, जन्मसमय जिनराजनें ॥
वाजित्र वज़त अनूप, सुरनर कृत उत्सव हुवे ॥ १ ॥

॥ रावण निरत बणावे हो भलां ॥ ए देशी ॥

॥आज आनंद बधाइ रे, देखो आजआनंद वधाई॥

जयजय कार भयो जिनशासन, सुरकुमरी हरखाई रे ॥ दे० ॥ १ ॥ घरघर गोरी मंगल गावत, मोतियन चोक पुराई रे ॥ ईति उपद्रव भय सब भागे, खार समुद्र भाई रे ॥ दे० ॥ २ ॥ आज सनाथ भयो हे त्रिभुवन, जिनवर जनम्या माई रे ॥ आज अधिक जग हर्ष भयो हे, धन धन मात कहाई रे ॥ दे० ॥ ३ ॥ जन्म महोत्सव करननकुं सब, दिशिकुमरी मिल आई रे ॥ करि कदलीगृह सुंदर रचना, पावन कर फल लाई रे ॥ दे० ॥ ४ ॥ जिनजननी जिनवर पय प्रणमी, मस्तक आण चढाई रे ॥ स्नान करावत तनय शरीरें, तैलाभ्यंग कराई रे ॥ दे० ॥ ५ ॥ भूषण भूषित अंग विलेपन, देवदूष्य पहराई रे ॥ दर्प्पण ले मंगल घट थापी, चामर जुगल झुलाई रे ॥ दे० ॥ ६ ॥ पंचवरनके फूल सुगंधित, सुर कुमरी वरखाई रे ॥ होम करी रक्षापोटरिया, जिनवर करे बंधाई रे ॥ दे० ॥ ७ ॥ मंगल गावत जिन जगजननी, निजगृह मांहे गाई रे ॥ सफल भयो निज आतम जाणी, दिशिकुमरी घर आई रे ॥ दे० ॥ ८ ॥

॥ दोहा ॥

॥ अतिहि अधिक उत्सव करी, गइ कुमरी निज था

न ॥ इंद्र हवे उत्सव करें, जन्म समय जिन जांणं ॥ १ ॥
॥ राग गोडी ॥ सांझ समे जिन वंदो ॥ ए देशी ॥
॥ आज उछव मन जायो रे ॥ देखो माई ॥ जगजननी जिन जायो रे ॥ दे० ॥ आ० ॥ त्रिभुवन मांहि प्रकाश भयो हे, इंद्रासन थररायो रे ॥ दे० ॥ ॥ आ० ॥ १ ॥ अवधिज्ञानधर जिनजीकुं निरखत, हृदय कमल उलसायो रे ॥ हरिणगमेषी इंद्र हुकमतें, घंट सुघोष घुरायो रे ॥ दे० ॥ आ० ॥ २ ॥ बनतुन नवर रूप मनोहर, सुरसमुदय मन भायो रे ॥ सुरकुमरी वरभूषण भूषित, अद्भुत रूप बनायो रे ॥ दे० ॥ आ० ॥ ३ ॥ नव नव यानवाहन रच सुरवर, सुरगिरि शिखरें आयो रे ॥ चौसठ इंद्र करत अति उत्सव, मेघ घटा घररायो रे ॥ दे० ॥ आ० ॥ ४ ॥ काली घटा वरदामनि चमकत, दादुर मोर सुहायो रे ॥ अतिहि सुगंध पुष्पव्रज वरसत, मोतियनकी झर लायो रे ॥ दे० ॥ आ० ॥ ५ ॥ इति ॥
॥ प्रभु प्रतिमा पंचतीर्थी अंदरथी ल्यावे, सिंहासण उपर स्थापन करे पछी स्नात्र पूजा करावे ॥

॥ दोहा ॥

॥ शक्र जाय जिनवर गृहे, जिनजननी जिनराज ॥

प्रणमी श्रीमहाराजनी, नक्ति करे सुरराज ॥ १ ॥

॥ सुंदर नेम पियारो माई ॥ ए देशी ॥

॥ तुम सुत प्रान पियारो माई ॥ तु० ॥ ए आंकणी ॥ जगवत्सल जगनायक निरख्यो, धन धन नाग्य हमारो माई ॥ तु० ॥ १ ॥ धन जगजननी तुम सुत जायो, अधमउधारणहारो माई ॥ धन धन प्रगट नयो जगदिनकर, त्रिभुवन तारन हारो माई ॥ तु० ॥ २ ॥ सब सुर चाहत स्नात्र करनकुं, सुरगिरि प्रभुजी पधारो माई ॥ कर जोडी प्रभु अरज करतहुं, सब जनकाज सुधारो माई ॥ तु० ॥ ३ ॥ मैं सेवक तुम सुत चरननको, आयोहूं अधिकारो माई ॥ इंद्र कहे पदपंकज प्रणमुं, नय सब दूर निवारो माई ॥तु०॥४॥ पांच रूप करि प्रभुजीकुं लावे, पंडुगबन सिणगारो माई ॥ वासव इंद्र महोत्सव करिहे, पूजन अष्ट प्रकारो माई ॥ तु० ॥ ५ ॥

॥ दोहा ॥

॥ पंचरूप कर इंद्र जिन, पंडुग वन ले जाय ॥ सिंहासन उछरंग गहि, स्नात्र करे सुरराय ॥ १ ॥

॥ इतनो गुमान न करियें छबीली राधा हे ॥ए देशी॥

॥ जिनजीको पूजन करियें, हांरे हो रंगीले श्रा

वक हो ॥ जि० ॥ द्रव्य भाव बेहुनेदें करतां, नव सागर निस्तरियें ॥ जि० ॥ १ ॥ गंगाजल चंदन पुष्पादिक, अडविध मंगल धरियें ॥ भावविशुद्धें जिन गुण गावो, नाटक नवनव करियें ॥ जि० ॥ २॥ बहुविध प्रभुकी भक्ति रचावत, वर्नन करन न तरियें ॥ वो आनंद देखे सोइ जाने, दुःख सब दूरें हरियें ॥ जि० ॥ ३ ॥ पूजन करि प्रभुकुं घर ल्यावे, आतम पुण्यें भरियें ॥ कर अठाइ महोत्सव आवत, सर्व सुर मिल निज घरियें ॥ जि०॥४॥ ॐ ह्रीं श्रीं प० अ० ज०जन्मकल्याणके अष्टद्रव्याणि यजामहे स्वाहा॥४॥

॥ अथ तृतीय दीक्षा कल्याणक पूजा ॥

॥ दोहा ॥

॥ सुरकृत उत्सव अति अधिक, भये अनंतर प्रात ॥ मात पिता उत्सव करे, निज कुलक्रम विख्यात ॥१॥ ॥ पार नही धनके जहां, अगणित भरे भंमार ॥ दान मनोवंछित दिये, दयावंत दातार ॥ २ ॥

॥ गात्र लूहे० ॥ ए देशी ॥

॥ जिनजन्म महोत्सव रंगशुं रे, भये प्रात करत उच्छरंगशुं रे ॥ हां रे देवा रंगशुं ॥ नृपउत्सव करे अति घणो ॥ १ ॥ पुत्रजनम कुल क्रम करे रे देवा, ज

गजस कीरत विस्तरे ॥ वि० ॥ घरघर उत्सव रंगमें ॥२॥ सुरवधु मिल सुरसंगशुं रे॥सु०॥ करे नाटक नव नवरंगशुं रे ॥रंग०॥ द्दारे बालजीला जिनसंगमें ॥३॥ रूपातिशयें शोजता रे ॥दे०॥ इंद्रादिक मन मोह्ता रे वाला मोरा ॥ मो० ॥ विद्याप्रज्जु विस्मयवती ॥ ४ ॥ परमप्रमोद प्रवीणता रे देवा, सुरक्रीडां अतिशयवता रे ॥ अ० ॥ वैक्रिय.शक्तिसमेलशुं रे ॥५॥ गावतगीत उमंगशुं रे देवा, वाजित्र नवनव रंगशुं रे ॥ रं० ॥ वजित अहोनिशि संगशुं रे ॥ ६ ॥

॥ दोहा ॥

॥ तीन ज्ञान अतिशय धरे, अतिशय कला सुधाम ॥
सुर सुसंग क्रीडातिशय, अतिशयगुण अन्निराम ॥ १ ॥

॥ पंच वरणी अंगी रची ॥ ए देशी ॥

॥ वरणी न जाती रे ॥ व० ॥ जिनजीकी शोजा व० ॥ चित्रजात नर सुरासुर निरखत,उरन एसो जग जाती ॥ जि० ॥ १ ॥ अनंत गुणें करि शोन्नित प्रज्जु जी, शुद्ध संवेग सोवन जाती ॥ शिव मारग शुध सेवत निशिदिन, पुण्यपुरुष पायाराती ॥ जि० ॥ २ ॥ पर उपगारी परम पुरुषोत्तम, अद्भुत अनुंनव रस पाती ॥ कामन्नोग वरविबुध प्रकारें, प्रात नये सुख सं

घाती ॥ जि० ॥ ३ ॥ जसु जस ख्यात प्रगट त्रिभुवनमें, कुल राजन्योत्तम जाती ॥ धन धन तीन भुवनके साहिब, श्याम हमारो वरगाती ॥ जि० ॥ ४ ॥ इंद अहोनिश नावन नावत, देख दरस अति भर खाती ॥ दुन्दुभि प्रमुख वाजित्र वजत नित, सुरवधु वनमंगल गाती ॥ जि० ॥ ५ ॥ ए नणी प्रभुने पुष्प वासक्षेप चढावे ॥

॥ दोहा ॥

॥ प्रवरभोग प्रभुपुण्यतें, प्रगटे प्रगट प्रधान ॥ गुण ग्राहक गृहवासमें, दर्शन ज्ञान निधान ॥ १ ॥

॥प्रभुविन दीनानाथ दया विन, कोन कहावत कोई रे ॥ प्र० ॥ गृहवासें शुधसंयमधारी, शुद्धभावें होइ रे ॥ प्र० ॥ १ ॥ सम्यग्दर्शनभवनिर्वेदें, स्वतनकी जर खोइ रे ॥ प्रभुता प्रभुकी को कहि वरने, सुर नर नारी मोही रे ॥ प्र० ॥ २ ॥ शुभलेश्या शुभध्यान रमे नित, आतम निरमल धोइ रे ॥ आत्मरूप निहारत निजघर, संगसुमति जह जोइ रे ॥ प्र० ॥३॥ प्रगट प्रकाश आत्मउजियारे, साम कहावत सोइ रे ॥ गृहवासें शुद्धसंयम रागी, लागी लगन सवाई रे ॥ प्र० ॥ ४ ॥ निजप्रभुता प्रभुजीनो लीनो, अंतर

शत्रु विगोइ रे ॥ विषयवासना खीण जइ लख, आत म शक्तिशुं गोइ रे ॥प्र०॥५॥ एम कही फूल चढावे ॥

॥ दोहा ॥

॥ दाता दीन दयाल प्रभु. देत संवत्सरिदान ॥ दूर करे दारिद्र जग, त्रिभुवनमांहि प्रधान ॥ १ ॥

॥ मरुदेवानंदकी क्या छबि लागत प्यारी ॥

॥जगपति जिनवरकी,क्या छबि मोहनगारी॥ ज०॥

मोहते प्रभुके मोहनरूपें, निरख निरख नरनारी ॥ क्या० ॥ १ ॥ भोगकर्म अंतरायकर्म कछु, क्षीण ज ए निरधारी ॥ दानसंवत्सरघनजिम वरसत, पृथ्वी प्रमुदितकारी ॥ क्या० ॥ २ ॥ नवलोकांतिक देव सबे मिल, हाजर होय सुचारी ॥ जय जय मंगल श ब्द उचारत, धर्म गहो सुखकारी ॥ क्या० ॥ ३ ॥ दान धर्म शिवमारग प्रभुजी, प्रगट कियो हितकारी ॥ दाता दीनदयाल जगतमें, जिन सम को सुविचारी ॥ क्या० ॥ ४ ॥ इंद्रादिक सुरसुरी नर नारी, दीक्षो त्सव अतिभारी ॥ गान दान सनमान तान करी, प्र भुगति सकल सुप्यारी ॥ क्या० ॥ ५ ॥ तजि संसार लियो शुभयोगें, संयम सतरप्रकारी ॥ मनपर्यव वर

ज्ञान लयो तब, विहरत पर उपगारी ॥ क्या० ॥ ६॥
ॐह्रीँ प० अ०ज०श्री०दी० अष्टद्रव्या० स्वाहा ॥३॥

॥ अथ चतुर्थ केवलज्ञानकल्याणक पूजा ॥

॥ दोहा ॥

॥ गजवर अश्व समूह रथ, पायक कोडाकोड ॥
जिनदीक्षा महोत्सवसमें, हाजर होय तिण ठोर ॥
॥१॥ इंद्रादिक सुर असुर नर, प्रभुकुं करे प्रणाम ॥ न
रँ नारी आशीष दे, जयजय त्रिभुवन साम ॥२॥
तजि आश्रव संवर गहे,संयमभाव निधान ॥ सब सं
सारँ तजी करी, लए अणगार प्रधान ॥ ३ ॥

॥ तेरी पूजा बणी तेरसमें ॥ ए देशी ॥

॥धारी धारी धारी,जिन लए संयमपद धारी ॥ च
रनकमल बलिहारी ॥ जि० ॥ पंचसुमतिधर तीन गु
पतिकर, सब जीवां सुखकारी ॥ जि० ॥ १ ॥ जीत
लिये उपसर्गपरीसह, शत्रुसेना गणभारी ॥ लयभैर
वतें निःप्रकंप लए,निर्मम निरहंकारी ॥ जि० ॥ २ ॥
क्रोध मान माया लोभ अकिंचन, आकिंचन ब्रह्मचा
री ॥ पुष्करसम निरलेप जगत गुरु, निरंजन अविका
री॥ जि० ॥ ३ ॥ चेतन परप्रभु अप्रतिघाती, खेसम

निराश्रयारी ॥ खड्गीशृंग परें एकाकी, अप्रतिबंध विहारी ॥ ४ ॥

॥ दोहा ॥

॥ रत्नत्रय परिग्रह करी, मुक्तिमार्ग अभिराम ॥ निशिदिन करत विहारक्रम, प्रासुकाम निजधाम ॥ १ ॥

॥ सद्गुरुजी सुनो मेरी अरजी ॥ ए देशी ॥

॥जिनवरजी जगहितकारी ॥ जि० ॥ जग वत्सल जगबंधु जगत गुरु, जग नायक जयकारी ॥ १ ॥ कूर्मतणीपर गुप्तइंद्री, अप्रमाद नारंभसुचारी ॥ अतिशय धाम धामनिजवीरज, वृषभपरें सुविहारी ॥ जि० ॥ २ ॥ शूर वीर प्रभु सिंहतणी पर, कुंजर करम बिदारी ॥ अतिगंभीर सायरसम शोभित, सौम्यलेश्या सुखकारी ॥ जि० ॥ ३ ॥ तेज पुंज दिनकर सम दीपत, हेम वरण मनुहारी ॥ सर्वसहन कारक धरणी पर, स्वछ हृदयकजधारी ॥ जि० ॥ ४ ॥

॥ दोहा ॥

॥ अनुत्तर धर संयमक्रिया, कल्पातीतजिणंद ॥ वीतराग विचरे प्रवर, रत्नत्रय जगचंद ॥ १ ॥

॥ कुनरीनें जादू मारा ॥ ए देशी ॥

॥जाके रागद्वेष भया न्यारा रे,सोई श्याम सकल

सुखकारा ॥ जा० ॥ बासी चंदन सम प्रनु जगमें, अ पकारें उपकारा रे ॥ सो० ॥१॥ कंचन काष्ठ समान हे जाके, सुख दुःख सम उपचारा ॥ कोउ निंदत कोउ पूजत, जिनजी हे अधिकारा रे ॥ सो० ॥ जा० ॥ २ ॥ शिवसुख अरु नवसुख दू न वांछे, वीतराग प्रनु प्यारा ॥ शूरवीर प्रनु दपकश्रेणि चढ, मोहनी मह्लपिछारा रे ॥ सो० ॥ जा० ॥ ३ ॥ दायिक संयम ने शुन योगें, अनुत्तर गुणगणधारा ॥ पाठ कप्रिजय विमल कहे प्रनुके, चरणकमल बलिहारा रे॥ सो० ॥ जा० ॥ ४ ॥

॥ दोहा ॥

॥ घनघातीचउ कर्मकों, दयकर दायिक ज्ञान ॥ द र्शनलोकालोकको, प्रगटप्रकाशी नान ॥ १ ॥

॥ राग ठुमरी ॥ वस मन खितरी कुंमके तीर ॥

॥ नजले श्रीमहावीर ॥ ए देशी ॥

॥ पायो प्रनु नवजलनिधिको तीर, अतुलीबल वडवीर ॥ पा० ॥ अनुत्तर जाके सुमति गुपति हे, अनुत्तरक्षमाधीर ॥ पा० ॥ १ ॥ मार्दवआर्यव अनु त्तर ज्ञाके, रोक्यो आश्रव नीर ॥ संवरजोग किया न वि विणठी, रही ईर्यासुख सीर ॥ पा० ॥ २ ॥ घ

नघाती सब शत्रुविनाशी, केवलज्ञान सुधीर ॥ पूरन दर्शन प्रगट जयो है, निज आतम गुणहीर ॥ पा० ॥ ३ ॥ प्रातिहार्य अतिशय जिनसंपद, नयो अनुकूल सुमीर ॥ दे उपदेश जविक प्रतिबोध , वचनातिशय गंजीर ॥ पा० ॥ ४ ॥ लोकालोक काश परम गुरु, कहि न शके मति सीर ॥ पाठक विजयविम र रमातम, प्रजुता परम सुधीर ॥ पा० ॥ ५ ॥ ॐ ह्रीं परम० अ० ज० श्रीम० केवलज्ञानकल्याणके अ० ष्टद्रव्याणि यजामहे स्वाहा ॥ इति ॥ ४ ॥

॥ अथ पंचम निर्वाण कल्याणक पूजा ॥

॥ दोहा ॥ इंद्रादिक सुर सब मिलि, तीन जुवन शिर दार ॥ सब दरसी सर्वज्ञनो, महिमा करे अपार ॥ १ ॥ ॥ अतुल विमल मिलो, अखंम गुणें जिलो ॥ ए देशी ॥

॥ अतुल विमल प्रजुता प्रजुकी लख, चोसठ इंद उत्सव धरे ए ॥ चार प्रकारके सुर सब मिल कर, समवसरण रचना करे ए ॥ अ० ॥ १ ॥ रजत कनक रत्नप्राकारें, कनक रत्नमणि कंगुरा ए ॥ वृक्ष अशोक सिंहासन शोजित, तीन छत्र चामर ढुरा ए ॥ अ० ॥ ॥ २ ॥ ढुंदुजि प्रमुख श्रवण सुखदायक, गहिर सुरे वाजित्र घूरे ए ॥ जानुप्रमाण पुष्पघन वरसत, जलं

ज थलज विकसित सुरे ए ॥ अ० ॥ ३ ॥ साधु सा॰
धवी श्रावक॰श्राविका, इंद्रादिक सुरी सुर नरे ए ॥ न
रनारी तिर्यग विद्याधर, द्वादशबिध परिषद नरे ए ॥
॥ अ० ॥ ४ ॥ नविजन धर्म तणे उपदेशें, जोजन.
गामि मधुर गिरे ए ॥ प्रतिबोधत चोमुख श्रीजिनव
र, निज निज नाषा अनुसरे ए ॥ अ० ॥ ५ ॥ एन
णीने वासक्षेप कीजें ॥

॥ दोहा ॥ प्रगटपणे प्रजुकी प्रजा, प्रगट प्रकाशक रूप ॥
प्रगटी प्रजुता परमसम, परमातम पदनूप ॥ १ ॥
॥ बिगरी कौन सुधारे नाथ बिना॥बि०॥ एदेशी॥

॥ नूमंमल नविकमल विबोधन, दिनकर सम जि
नराया रे ॥ नू० ॥ अणहुते इक कोडि अमरपद, पं
कज नमर जुनाया रे ॥ नू० ॥ १ ॥ ग्राम नगर पुर
पट्टण बिचरत, त्रिजुवननाथ कहाया रे ॥ चोसठ
इंद्र करे जाकी सेवा, तन मनसें लयलाया रे ॥ नू०
॥ २ ॥ इंद्राणी मिल मंगल गावत, मोतियन चोक
पुराया रे ॥ सर्व जीव हितकारक प्रजुजी, निःश्रेयस
सुखदाया रे ॥ नू० ॥ ३ ॥ नवजलनिधि निर्यामक
जगगुरु, तारक सकल कहाया रे ॥ शासननायक
संघसकलकुं, प्रवचन तत्त्व सुनाया रे ॥ नू० ॥ ४ ॥

अनंतगुणाकर प्रजुजीकी महिमा, वरने को कविरा या रे ॥ पर उपकारक प्रजुके पाठक, विजय विमल गुण गाया रे ॥ नूं०॥५ ॥ ए जणीने वासक्षेप करे ॥

॥ दोहा ॥

निज निज जाषा जविकजन, तृपत न सुनतहि श्रोत ॥
मीठी अमृत सम गिरा, समकत श्रम नहि होत ॥ १ ॥

॥ राग कहेरबो ॥

॥जिनंदवामिल गयो रे, दोय चरणुं परध्यान॥शुक्ल मन गहगह्यो रे ॥ जिं० ॥ ज्ञायकज्ञेय अनंतनो रे, सबदरसी जिनचंद ॥ सुरतरुसम जग वालहो रे, सेवत सुरनरइंद ॥ धर्ममें लह्यो रे ॥ दो० ॥ १ ॥ चौदम गुण थानक करे रे. आतम वीर्य अनंत ॥ योग निरोधनकी क्रिया रे, सूखम बादरकंत ॥ बंध सब टर गयो रे, सरव संवर जयो रे ॥ दो० ॥ २ ॥ घन कर आत्मप्रदेशनो रे, कर शैलेशी करण ॥ कर्म सकल दूरें किया रे, जीर्णवस्त्र जिम पर्ण, मुक्ति पद जिम लह्यो रे ॥ दो० ॥३॥ ज्ञान क्रिया कर कर्मकोरे, क्षय कर पर अनुबंध ॥ निजआतम रूपें लह्युं ए, शाश्वत सुख संबंध, सिद्ध शुद्ध बुध थयो रे ॥ दो० ॥४॥

॥ दोहा ॥

॥ अकल अगोचर अगमगम, सिद्ध नए सुविशुद्ध ॥
परमातम प्रभु परम पद, चिदानंद अविरुद्ध ॥ १ ॥
॥ राग धन्याश्री ॥ तेजतरणिमुखराजे ॥ ए देशी ॥

॥तेज तरणि सम राजे, प्रभुजीको ॥ ते० ॥ एकसम यप्रभु ऊरधगतिकर, मुक्तिमहल सुविराजे ॥ प्र० ॥ ते० ॥ १ ॥ सादि अनंत सदा शाश्वत वर, अनंत महा सुख छाजे ॥ अचल अगोचर प्रभु अविनाशी, सिद्ध सरूप विराजे ॥ प्र० ॥ते०॥२॥ निरुपाधिकनिरुपम सुख प्रभुके, कहि न शके कविराजे ॥ अजर अमर अक्षय अविकारी, सकलानंद सहाजे ॥ प्र० ॥ते०॥३॥ संवत उगणीसें तेरोत्तर, श्रावण शुदि पख राजे ॥ श्रीजिनराज तणा गुण गाया, पंचमि दिवस समाजें प्र०॥ ०तें॥४॥श्रीविक्रमपुर नगर मनोहर, श्रीसंघ सकल समाजे ॥ पंच कल्याणक पूजा प्रभुकी, कीनी हित सुखकाजे ॥प्र०॥ते०॥५॥ श्रीखरतरगच्छ नायक लायक, युगप्रधान पद छाजे ॥ जंगमगुरु भट्टारकवरश्री, जिनसौभाग्य सुराजे ॥ प्र० ॥ते०॥ ६ ॥ प्रीत विलास धर्म्मसुंदर गणि, अमृत समुद्र सुभ्राजे ॥ पाठक विजय विमल प्रभुके गुण, गावत घन जिम गाजे ॥ प्र०

॥ते०॥७॥ हंसविलास प्रवरगणिवरकी, प्रेरणिया सुख माजे ॥ श्रीजिनवरकी स्तवना कीधी, धर्म्मप्रज्ञावन काजें ॥ प्र० ॥ते०॥ ७ ॥ ॐ ह्रीं प० ॥ अनं० ॥ जन्म जन्ममृत्यु निवारकेभ्यः श्री मल्लिजिनेंद्रेभ्यो निर्वाणकल्याणके अष्टद्रव्याणि यजामहे स्वाहा ॥ इति ॥ पाठक विजयविमलविरचित पांच क० पू० स० ॥

॥ आरती ॥ राग मालवी गोडी ॥

॥शुभ आरती प्रभुकी उदारचित्तें, करो भविकं रसाल रे ॥ प्रथमधूप सुगंधजिनकुं, उखेवो जिननाल रे ॥ शु० ॥ १ ॥ भाल निजकरतिलक सुंदर, पहरपुंष्प सुमाल रे ॥ दक्षिणकर जिन राजजूके, कर आवर्त्त सुथाल रे ॥ शु० ॥ २ ॥ यथासंगतें शुद्धभगतें, करो दिल खुशियाल रे ॥ द्रव्यभावें द्विविधपूजा, भविकभाव विशाल रे ॥ शुं० ॥ ३ ॥ गुण अनंत महंत गावो, प्रभुपरम दयाल रे ॥ जन्म सफल करो भविजन, कहे पाठक बाल रे ॥ शु० ॥ ४ ॥ इति आरती ॥

॥ अथ पंचज्ञान पूजा ॥

तत्र प्रथम मतिज्ञान पूजा ॥ दोहा ॥

॥ स्वस्तिश्री केलीसदन, नतसुर अलिझंकार ॥ नाभि

नंदपदपद्मयुग, सुरुचिरमानसधार ॥ १ ॥ निखिलजं तुसुखकारिणी, जिनवाणी उर धार ॥ पंचज्ञानपूजन तणो, कहिशुं विधि विस्तार ॥ २ ॥

॥ ढाल ॥ सकल क्रियानुं मूल जे राजे; अर्हत्तिक जसुमहिमा गाजे ॥ जे सहु दुरित तिमिर अपहारे, लज्जित कोटि दिनंद अवतारे ॥ १ ॥

॥ उलालो ॥ अवतार जसु मति नाण श्रुत पुनरवधि नाण बखाणियें ॥ मनजाव परिणति, विशद वेदन, मनःपर्यय जाणियें ॥ वर अनंतानंत केवल, अपडिहय गइ जाण ए॥प्रतिपत्ति नेदें ज्ञान जाख्युं, जिनपती जगजाण ए ॥ १ ॥

॥ ढाल ॥ विंशति पदमांहे अष्टम पद ए, जावें वंदन करि जव तरियें ॥ नवपद सप्तमपद मन जायो, श्रीतीरथ पति श्री मुख गायो ॥ १ ॥

॥ दोहा ॥ योग्य देशथित वस्तु जे, विषय प्रगट प्रतिजास ॥ इंद्रिय मन कारण करी, नेद बत्तीस प्रकाश ॥ १ ॥ उपयोग क्रमते कह्यो, मति पूर्वक सुय नाण॥प्रथमपीठ जवि अरचियें,नमो नमो मइ नाण॥२॥

॥ ढाल ॥ समकित उतपति कालें मतिश्रुत, लब्धें होय समकालें ॥ सुयनिस्सिय पुनरुस्सुय निस्सि

य, जेदें सुयं अजुवाले रे ॥ जविका श्रीमइनाण ते वंदो. वंदीने चिर नंदो रे ॥ ज० ॥ समकित रसनो कंदो रे ॥ ज० ॥ शिवतरुबीजनो वृंदो रे ॥ ज० ॥ ॥ श्रीमइ० ॥ ए आंकणी ॥ १ ॥ अष्टाविंशतिधा सुय निस्सिय, अबुग्गह ईहावाय ॥ धारण ए च्छ पण इंड्रियमण, करि चउविंशति थाय रे ॥ ज० ॥ श्री० ॥ ॥ २ ॥ नयन मनोविन इंड्रिय सारू, वंजणुगह च्छ जेय ॥ उप्पइया वेणइया कम्मिय, पारिणामिय अ वसेय रे ॥ ज० ॥ श्री० ॥ ३ ॥ उग्गह इक्कसमय ईहावाय, अद्ध मुहुत्तमसंख ॥ संखकाल धारण उक्कि ठ, अरचो एह निकंख रे ॥ ज० ॥ श्री० ॥ ४ ॥

॥ शार्दूलविक्रीडितवृत्तद्वयम् ॥

॥ लोकेऽवग्रह ईहनं पुनरपायोऽधारणे वै चतु, र्नेदैः क्षिप्तमवग्रहोप्युजयथाद्यो व्यजनात्तोऽर्थतः ॥ त्वक्ञा सारसनाश्रवोन्निरथ सा वेदोन्मिता व्यंजना,षोढार्थोपि मनोक्ष्युक्तरसनात्वग्घ्राणकर्णैः स्फुटम् ॥ १ ॥ षोढेहापि तथेंड्रियैश्च मनसापायोऽपि षोढा तथा, षोढैवं खलु धारणापि च मतिज्ञानं किलेत्थं च यत् ॥ अष्टाविंशतिधा मतं नवपदे गंधादिन्निः पूजन, ड्रव्यैरष्टनिर्रचयामि तदहं जत्त्या शिवाप्यामलम् ॥ २ ॥

॥ ॐ ह्रीँ श्रीँ श्रीमतिज्ञानाय जलं चंदनं पुष्पं धूपं. दीपं अक्षतान् नैवेद्यं फलं यजामहे स्वाहा ॥इति॥१॥

॥ अथ द्वितीयश्रुतज्ञानपूजा ॥

॥ दोहा ॥ सर्वद्रव्यगुणपर्यय, प्रकटकरण दिंनकार॥ अगम अपार अनंत श्रुत, गुणगण रयणाधार ॥१॥ अभिलापे भावित अरथ, ग्रहणहेतु चिद्रूप ॥ स मकित मिथ्यातें करी, बोधाबोध सरूप ॥ २ ॥

॥ राग सामेरी ॥ पूजो रे भवि श्रीश्रुतज्ञान उदार ॥ पू० ॥ तीरथपतिपद लहि भविजनके, यातें क रत उधार ॥ पू० ॥ १ ॥ अरकर सन्नी सम्मं साई, सपर्यवसित गुणभावें ॥ गमियं अंगपविठ्ठ एथंभदह, भेद विपर्यय भावे ॥ पू० ॥ २ ॥ पर्यायादिक समास सहित यह, विंशतिधा पुन होवे ॥ सर्व चरण करण क्रियाधार, पातककलिमल खोवे ॥ पू० ॥ ३ ॥ इक इक श्रुत अक्षरना करतां, स्वपर विभाग विचार ॥ होवे पर्ययराशि अनंती, सा मेरी मति धार ॥पू०॥४॥

॥ पृथ्वीवृत्तम् ॥

॥ यदक्षरमथोभिधावहतमादियुक्तं ततः, सपर्यवसितं च वै गमिकमंगविष्टं तथा ॥ नभा सह समासतः पुनरिमानि चेबं श्रुतं, चतुर्दशविधं यजे नवपदे गुणैरष्टभिः ॥

ॐ ह्रीं श्रीं श्रीमते श्रुतज्ञा० ज० ॥ इति श्रु० पूजा॥

॥ अथ तृतीय अवधिज्ञान पूजा ॥

॥ दोहा ॥ द्रव्य क्षेत्र पुन काल अरु, नावें विषय प्र मम्भ ॥ वेदे रूपी द्रव्यकां, नमो नमोऽवधिनाण ॥१॥

॥ कुण खेले तोसुं होरी रे ॥ ए देशी ॥

॥ अवधिज्ञान नित नजिये रें, निज विमल न क्तिसें ॥ अ० ॥ अनुगामी ते देशांतरगत, ज्ञानीने अनुगमियें रे ॥ नि० ॥ १ ॥ जिम बहु बहुतर दारु प्रक्षेपें, ज्वाला जलन वधेयें रे ॥ नि० ॥ सुविमल विमलतराध्यवसायें, वर्द्धमान जग जयियें रे ॥ नि०॥ ॥ २ ॥ प्रतिपातीतें एक कालमें, दीप इवास्तंगमीयें रे ॥ नि० ॥ सइतरनेदें गुणकारण यह, बहा उही कहियें रे ॥ नि० ॥ ३ ॥ नव प्रत्ययि ते बहुतर नेदें, सुरनिरि नवमां गहियें रे ॥ नि० ॥ परमावधि अ निरामचंड्रोदयें, निहचें केवल लहियें रे ॥नि०॥४॥

॥ शार्दूलविक्रीडितवृत्तम् ॥

॥ यच्चैकं ह्यनुगामि चान्यदुदितं संवर्द्धमानं तथा, तार्तीयं प्रतिपात्यमूनि हि पुनर्नत्र्पूर्वकाणीदृशम् ॥ षो ढारूपि पदार्थमात्रविषयं श्रीसिद्धचक्रेऽनघे, द्रव्यैरष्ट

निरादरात्तदवधिज्ञानं शुनैरर्चये ॥ १ ॥ ॐ ह्रीँ श्रीँ श्री· मते अव० ॥ ज० य० ॥ इति अवधिज्ञानपूजा ॥

॥ अथ चतुर्थं मनःपर्ययज्ञानपूजा ॥

॥दोहा॥ जे सप्तम गुणठाण थित,रुद्धिमंत मुनि. राय ॥ उपजे तस रुजुविपुलमति,नेदें मनपर्याय ॥१॥ मूर्त्तवस्तु अवलंबि यह, द्रव्य क्षेत्र अरु काल ॥ नावें चउहा जाणियें, अरचि लहो सुखमाल ॥ २ ॥

॥ जिनराज नाम तेरा ॥ ए देशी ॥

॥ मनपर्यवानिधानं, गुणरत्नके निधानं, पूजो रे न विक शुननावें ॥ १ ॥ घटमात्र बोधकर्त्ता, सामान्य-नावधर्त्ता, संसारनीतिहर्त्ता ॥ पू० ॥ २ ॥ सार्द्ध द्व य दीवसागर, सन्नीपंचिंदिआगर, मन नावके दिवा कर ॥ पू० ॥ ३ ॥ मनद्रव्यके अशेष, गुणपर्ययादि शेष, स्फुटनासिते विशेष ॥पू०॥ ४ ॥

॥ शिखरिणीवृत्तम् ॥

॥ मनःपर्यायाख्यं विपुलमति चान्यदृजुमति, द्विधे बं यद् ज्ञानं हृदयगतनावप्रकटनम् ॥ सुसंज्ञावत्पंचे न्द्रियविषयिरम्यैर्नवपदे, यजे पूजाद्रव्यैस्तदहमधुना मंगलकरम् ॥ ॐ ह्रीँ श्रीँश्रीमनःपर्ययज्ञानाय जलं चं० यजामहे स्वाहा ॥ इति ॥ ४ ॥ इति मनःपर्यय० ॥

॥ अथ पंचमकेवलज्ञानपूजा ॥ दोहा ॥

॥ शुद्ध असाधारण सकल, निर्व्याघातनंत ॥ एक सकल,साकार फुनि, केवल नंतानंत ॥ १ ॥ पंचमग ते दातार, यह, पंचमज्ञान उदार ॥ जवि जावें अर्च न करी, लहो परम सुख सार ॥ २ ॥

॥ केवल नाण उदार, यातें आनंद अधिक अपार ॥आ०॥जवसिद्धस्थ दुजेद,तस अंतर बहुतरजेद,तेतो वरणें, किमुकविवार ॥ के० ॥ १ ॥ रवि जिम अमल प्रकाम, द्रव्यसकल परिणाम, तस सत्ता विन्नतिकार ॥ के० ॥ २ ॥ काल त्रय अनुसारें, निज निज ज्ञेय आकारें ॥ प्रतिबिंबित होय तिणवार ॥ के० ॥ ३ ॥ क्षेत्रथी लोकालोक, अजिरामचंद्रोदयालोक, यातें परमानंद अपार ॥ के० ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ शार्दूलविक्रीडितं वृत्तम् ॥

॥ सम्यक्त्वं समुपैति शुद्धमखिलं,यस्माज्जगद्भासते, साक्षाद्धस्तगतं त्रिकालजनितं वृत्तं स्फुरत्यंजसा ॥ जायंतेऽतुलसिद्धयो नवपदे ज्व्यैः शुनैः केवल, ज्ञानं तत् परिपूजयामि सततं जावैरनंतं महत्॥५॥ ॐह्रींश्रीं समस्तलोकालोकप्रकाशकाय श्रीकेवलज्ञानाय जलं चंदनं पुष्पं यजामहे स्वाहा ॥ इति पंचज्ञानपूजा ॥

॥ अथ आरति ॥

॥ जय जगसुखकारी ॥ वारी जय समपद चित धा
री ॥ आरति करूं सारी ॥ जय० ॥ अष्टाविंशति भेद
करीनें, मतिज्ञान राजे ॥ म० ॥ ध्यावत पूजत भवि
जन केरा, भवसंकट भाजे ॥ जय० ॥ १ ॥ भेद च
तुर्दश अथवा विंशति, प्रवचनपति दाखे ॥ प्र० ॥
श्रीश्रुतज्ञानकी महिमा जिनवर, स्वमुखथी भाखे ॥
जय० ॥ २ ॥ रूपिद्रव्य विषयि मर्यादा, करि अव
धी सोहे ॥ क० ॥ भेद षटक संख्याती तीवा, भवि
जन मन मोहे ॥ जय० ॥ ३ ॥ तुर्यज्ञान मनपर्यव
कहियें, भेदयुगम लहियें ॥ भे० ॥ रुजुमति विपुल
मति सरदहियें, न्यूनाधिक गहियें ॥ जय० ॥४॥ लो
कालोकांतर्गत वस्तु, गुण पर्यवभासी ॥ गु० ॥ केवल एक
सहायअनंते, भए निर्वृतिवासी ॥ ज० ॥ ५ ॥ पं
चज्ञानकी आरति करतां, भवआरति छीजे ॥ भ० ॥
जिम वरदत्तकुमर गुणमंजरी, तिम भक्ति कीजे ॥ ज
य० ॥ ६ ॥ बृहत् भट्टारक खरतरपति, जिनहंस
सूरिराया ॥ जि० ॥ तत्पदकजमधुकरकंचननिधि,
आनंद वरताया ॥ ज० ॥ ७ ॥ इति आरति ॥

॥ अथ आरति ॥

॥ जय जय आरति ज्ञानदिनंदा, अनुंनव पद पावन सुखकंदा ॥ तीन जगतके नाव प्रकाशक, पूरण अनुसा परम आनंदा ॥जय०॥१॥ मति श्रुत अवधि अने मनपर्यव, केवल काटे सब डुखदंदा ॥ जय० ॥ ॥ २ ॥ नवजल पार ननारण कारण, सेवो ध्यावो नविजनवृंदा ॥ जय० ॥ ३ ॥ शिवपुरपंथ प्रगट ए सीधा, चौमुख नाखे श्री जिनचंदा ॥ जय० ॥ ४ ॥ अविचल राजहीयामे पावे, चिदानंद निजतेज अमंदा ॥ जयजय आरति ज्ञानदिनंदा, अनुनव० ॥इति॥

॥ अथ अष्टप्रकारी पूजा ॥

॥ तत्र प्रथम स्नात्रपूजा ॥

॥ दोहा ॥ गंगामागध क्षीरनिधि, उषधिमिश्रित सार॥ कुसुमें वासित शुचिजलें, करो जिनस्नात्र उदार॥ ॥ढाल॥ मणि कनकादिक अडविध,करी नरी कलश सफार॥ शुनरुचि जे जिनवर न्हवे, तसु नहि डुरित प्रचार॥ २ ॥ मेरुशिखर जिम सुरवर, जिनवर न्हवण अमान ॥ करता वरता निजगुण, समकित वृद्धि निधान ॥ ३ ॥ काव्यम् ॥ हर्षनरि अप्सरावृंद आवे,स्नात्र करी एम आशीषनाने ॥ जिहां लगे सुरगिरी जं

बुदीवो ॥ अम्ह तणा नाथ जीवो तुं जीवो ॥ ४ ॥

श्लोक विमल०॥ ॐ ह्रीँ श्रीँ परमपरमात्मने अनंतानंतज्ञानशक्तये जन्मजरामृत्युनिवारणाय श्रीमज्जिनेंद्राय जलं यजामहे स्वाहा ॥ १ ॥

॥ अथ द्वितीयचंदनपूजा ॥ दोहा ॥

॥ बावन चंदन कुंकुमा, मृगमद ने घनसार ॥ जिनतनु लेपें तसु टले, मोह संतापविकार ॥ १ ॥ ॥ढाल॥ सकल संताप निवारण,तारण सहु नवि चित्त ॥ परमअनीहा अरिहा,तनु चरचो नवि नित्त ॥१॥ निज रूपें उपयोगी, धारी जिनगुणगेह ॥ नावचंदन सुह नावथी, टाले डुरित अछेह ॥२॥ काव्यम्॥ जिनतनु चरचतां सकलनाकी, कहे कुग्रहा उल्लसता आज थाकी ॥ सकल अनिमेषता आज मांकी, नव्यता अम तणी आज पाकी ॥३॥ सकलमोह० ॐ ह्रीँ श्रीँ.चं० यंजामहे स्वाहा ॥ २ ॥ इति द्वितीय चंदन पूजा ॥

॥ अथ तृतीय पुष्पपूजा ॥ दोहा ॥

॥शतपत्री वरमोगरा,चंपक जाइगुलाब॥ केतकि दमणो बोलसिरि,पूजो जिन नरि गब ॥ ढाल ॥ अमल अखंमित विकसित, शुचसुमनी घनजाति ॥ लावीणो टोमर ठवो, अंगी रचो बहु नांति ॥ १ ॥ गुणकुसु

में निज आतंम, मंभित करवा ज्ञव्य ॥ गुणरागी जडत्या गी, पुष्प चढावो ज्ञव्य ॥ २॥ काव्यम् ॥ जगंधणी पूजता विविधफूलें, सुरवरा तें गणे खिण अमूले॥ स्वांत धरि मा नवा जिनप पूजे, तसु तणां पाप संताप धूजे ॥ ३ ॥ विकचनिर्मल० ॐह्रींश्रींपरम० पुष्पं यजामहे स्वाहा॥

॥ अथ चतुर्थी धूपपूजा ॥ दोहा ॥

॥ कृष्णागरु मृदमद तगर, अंबरतुरुक्कलोबान ॥ मेलि सुगंध घनसार घन, करो जिनने धुपदान ॥ १ ॥

॥ढाल॥धूपघटी जिम महमहे, तिम दहे पातिकवृंद ॥ अरति अनादिनी जावे, पावे मन आणंद ॥ १ ॥ जे जिन पूजे धूपें, ज्ञवकूपें फिरि तेह ॥ नावे पावे ध्रुवघर, आवे सुख अछेह॥ २॥काव्यं॥जिनघर वासतां धूपपूरें, मिथ्यात्वदुर्गंधता जाय दूरे ॥ धूप जिम सहज ऊर्ध्वग स्वजावे, कारका उच्चगति जाव पावे ॥ ३ ॥ सकलक र्म० ॐह्रींश्रींपरम० धूपं यजामहे स्वाहा ॥इति॥४॥

॥ अथ पंचम दीपक पूजा ॥ दोहा ॥

॥ मणिमय रजत ताम्रप्रमुख, पात्र ज्ञरी घृतपूर ॥ वर्तीसूत्र कौसुंजनी, करो प्रदीप सनूर ॥ १ ॥

॥ढाल॥ मंगलदीप वधावो, गावो जिनगुण गीत ॥ दीपतणी जिम आलिका, मालिका मंगल नीत ॥ १ ॥

दीप तणी शुजज्योति, द्योतित जिनमुख चंद॥ निरखी हरषो नविजंना, जिम लहो पूर्णानंद ॥२॥ काव्यम् ॥ जिनगृहे दीपमाला प्रकाशे, तेहथी तिमिर अज्ञान नाशे ॥ निज घटें ज्ञान ज्योती विकाशे, जेहथी जण तणा जाव नाशे ॥३॥ नविक निर्मल० ॐह्रींश्रीपर०दीपं यजा०स्वाहा ॥ इति ॥ ५ ॥

॥ अथ षष्ठ अक्षत पूजा ॥

॥ दोहा ॥ अक्षत अक्षत पूरशुं, जे जिन आंगे सार ॥ स्वस्तिक रचतां विस्तरे, निज गुणजर विस्तार॥१॥

॥ढाल॥ उज्वल अमल अखंमित, मंमित अक्षत चंग॥ पुंजत्रय करो स्वस्तिक, आस्तिक जावे रंग ॥ १ ॥ निज सत्ताने सन्मुख, उन्मुख जावें जेह ॥ ज्ञानादिक गुण गावे, जावे स्वस्तिक जेह॥२॥काव्यम्॥स्वस्तिक पूरतां जिनपंआगें, स्वस्तिश्री जद्रकल्याण जागें ॥ जन्मजरामरणादि अशुज जागें, नियत शिवशर्म रहे तासु आगें ॥३॥सकल मंगल० ॐह्रींश्रीपरम०अक्षतं यजामहे०॥

॥ अथ सप्तम नैवेद्य पूजा ॥ दोहा ॥

॥ सरस शुची पकवान बहु, शालि दालि घृतपूर ॥ करे नैवेद्य जिन आगले, क्षुधादोष तस दूर ॥१॥

॥ढाल॥ जपनश्री वर घेवर, मधुतर मोतीचूर ॥ सिंहकेसरि सेवैया, दलिया मोदकपूर ॥ १ ॥ साकर द्राख सिंघोडा, भक्त व्यंजन घत सद्य ॥ करो नैवेद्य जिन आगले, जिम मिले सुख अनवद्य ॥ २ ॥ काव्यम्॥ ढौकतां भोज्य परभाव त्यागं भविजना निजगुण भोग मागे ॥ अम भणी अमतणुं सरुप भोज्य, आपजो तातजी जगतपूज्य॥३॥सकल पुगल० ॐह्रींश्री परम०॥ नैवेद्यं० यजामहे० ॥ इति ॥ ७ ॥

॥ अथ अष्टम फलपूजा ॥

॥ दोहा ॥ पक्क बिजोरुं जिन करे, ठवतां शिवफल द य ॥ सरस मधुरशुभ फल घणां यह जिन भेट करेय १

॥ ढाल ॥ श्रीफल कदली सुरंगा, नारंगी आंबा सार ॥ अंजीर बंजीर दाडिम, करणा षटबीज सफार ॥ १ ॥ मधुर सुस्वादिक उत्तम, लोक अनिंदित जेह ॥ वरण गंधादिकें रमणिक, बहुफल ढोके तेह ॥ २ ॥ काव्यम् ॥ फल भरें पूजतां जगतस्वामी, मनुजगतिवेलि होय सफल पामी॥सकलमुनि ध्येयगत भेदरंगें, ध्यावतां फल समापति प्रसंगें॥३॥कटुक कर्म० ॐह्रींश्री परम०फलं यजामहे स्वाहा ॥ इति फलपूजा ॥ ८ ॥

॥ अथार्घ पूजा ॥ दोहा ॥

॥ इम अडविध जिन पूजतां, विरचे जे थिरचित्त ॥ मानव नव सफलो करे, वाधे समकित वित्त ॥ १ ॥ ॥ढाल॥ अगणित गुणगण आगर, नागर वंदितपाय ॥ श्रुतधारी उपकारी, ज्ञानसागर उवझाय ॥ तास चरण कजसेवक, मधुकर परें लयलीन ॥ श्रीजिनपूजा गाई, जिनवाणी रसपीन ॥ २॥ काव्यम् ॥ संवतगुणयुगत्रचल इंदु, हर्ष भरि गाइयो श्रीजिनेंदु ॥ तासिफल सुकृतथी सकल प्राणी, लहों ज्ञान उद्योत, घनशिव निसाणी ॥ ३ ॥ इति जिनवर० ॐह्रींश्रीपरमप० अर्घं यजा० स्वाहा ॥ शक्रो यथा० ॐह्रींश्रीपरम० वस्त्रं यजामहे स्वाहा ॥ इति श्रीअष्टप्रकारी पूजा संपूर्णा ॥

॥ श्रीदादाजीनी पूजा लिख्यते ॥

॥ सकलगुणगरिष्ठान् सत्तपोभिर्वरिष्ठान्, शमदमयमनिष्ठांश्चारुचारित्रनिष्ठान् । निखिलजगतिपीठे दर्शितात्मप्रभावान् । मुनिपकुशलसूरीन् स्थापयाम्यत्र पीठे ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं श्रीजिनकुशल सूरिगुरो अत्रावतरावतर स्वाहा ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं श्रीजिनकुशलसूरे अत्र तिष्ठ ठः ठः स्वाहा ॥ इति प्रतिष्ठापनम्

॥ २ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं श्रीजिनकुशलसूरिगुरो अत्र मम सन्निहितो भव वषट् ॥ इति सन्निधीकरणं ॥ ३ ॥

॥ अथ अष्टप्रकारी पूजा ॥

॥ दोहा ॥ गंगाजल तिम नृवल वलि, तीर्थोदक भरपूर ॥ कलशभरी गुरु चरणपर, ढाले तस दुख दूर॥१

॥ढाल॥ देशी सूरती महीनानी ॥ गंगाजल अतिनिरमल, अमल सुकमलें पूर ॥ खीरोदधि वरदधि ज्यौं उज्ज्वल जलभरपूर ॥ तेह उदक वलि तीरथ निर भरि कलश सनूर, गुरुचरणे जे ढाले टाले दुष्कृत दूर ॥१॥ ॐ ह्रीं श्रीं श्रीजिनकुशलसूरिगुरुचरणकमलेभ्यः जलं निर्वपामि ते स्वाहा ॥ इति जलपूजा ॥

॥ अथ चंदनपूजा ॥

॥ दोहा ॥ बावन्ना चंदन अगर, घसि केसर घनसार ॥ चरचे जे गुरु चरणने, पामे जयजयकार ॥१॥

॥ ढाल ॥ मलयागर तिम अगर चंदन वलि केसर सार, कस्तूरी अतिगंधें पूरी घसि घनसार ॥ कुशलसूरि गुरुचरणे चरचे चढते भाव, सकल रोग तन सोग हरें वलि जडता भाव ॥ २ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं श्रीजिनकुसलसूरिगुरुचरणकमलेभ्यः चंदनं निर्वपामि ते स्वाहा ॥ २ ॥ इति चंदनपूजा ॥

॥ अथ पुष्पपूजा ॥ दोहा ॥

॥ केतकि चंपक फूलथी, पूजे जे गुरुपाय ॥ तसु जस सूर उदय हुवे, अपजस तिमिरं नसाय ॥ १ ॥

॥ ढाल ॥ चंपक केतक मरुवो दमन सेवंती फूल, जाई जूई मोगरो मालती तेम उफूल ॥ कमल गुलाब चंबेली बेली परिमल पूर, गुरुचरणे जे ढोवे होवे जस ज्यूं सूर ॥ २ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं श्रीजिनकुशलसूरि गुरुचरणकमलेभ्यः पुष्पं निर्वपामि ते स्वाहा ॥ इति॥

॥ अथ अक्षत पूजा ॥ दोहा ॥

॥ उज्जल ज्यों शशि अंकविण, खंडित नहीं विशाल ॥ अक्षत गुरुचरणे ठवे, तसु घर मंगलमाल ॥ १ ॥

॥ ढाल ॥ सरल सुगंधित तंडुल उज्जल जल उत्पन्न, ज्यूंवर मोती आजा हुंती उज्जलवन्न ॥ जल धोई ससमोई सोई अक्षत नव्य, स्वस्तिक कुशल व धावे पावे मंगल नव्य ॥ २ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं श्रीजिनकुशलसूरिगुरुचरणकमलेभ्यः, अक्षतं निर्वपामि तेस्वाहा॥

॥ अथ दीपपूजा ॥ दोहा ॥

॥ कंचन मणिमय रतनी, दीवी कर घृतपूर ॥ वाती मोली सूत धर ॥ करो प्रदीप सुनूर ॥ १ ॥

॥ ढाल ॥ कंचनघटित जटित गति नानाविध नव

रत्न, दीवी अतिकारीगर कीवी अधिकें यत्न ॥ घृत पूरी ससनूरी मौली वाती जोय. दीप करे गुरु आगें ज्योत उद्योती होय ॥ २ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं श्रीजिनकुशल सूरिगुरुचरणकमलेभ्यः दीपं निर्वपामि ते स्वाहा॥

॥ अथ धूप पूजा ॥ दोहा ॥

॥ बावन्ना चंदन अगर, सेलारस घनसार ॥ धूपे जे गुरु धूपथी, तस घर रिधविसतार ॥ १ ॥ ढाल ॥ अगर चंदन सेलारस गाड वडीलो मेल, कपूरकां. चरी वलि घनसारे मृगमद तेल ॥ धूप अभंग करी गुरु धूपे चढते चित्त, ते नरवित्त सुमारग पामें नव नव नित्त ॥ २ ॥ ॐह्रीं श्रीं श्रीजिनकुशलसूरिगुरुच रणकमलेभ्यः धूपं निर्वपामि ते स्वाहा॥इति धूपपूजा॥

॥ अथ नैवेद्यपूजा ॥ दोहा ॥

॥ शाल दाल पकवान घन, व्यंजन नव नव भांत॥ नेवज गुरु आगल ठवे, क्षुधा दोष उपशांत ॥ १॥ ॥ढाल॥ पेडा मगद सेवईया लाडु मोतीचूर, खाजा ताजा लापसी दोगा ने घृतपूर ॥ पिस्ता दाख बदाम छुहारा पिंडखजूर, गुरुचरणे जे ढोवे भोग लहे भरपू र ॥ २ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं श्रीजिनकुशलसूरि गुरु चरण कमलेभ्यः नैवेद्यं निर्वपामि ते स्वाहा ॥ इति ॥

॥ अथ फलपूजा ॥ दोहा ॥

॥ श्रीफल शीताफल सदा, फल पूगीफल लेय ॥ ढोवे जे गुरुचरणपर, तसु उत्तम फल देय. ॥ १ ॥ ढाल ॥ श्रीफल शीताफल नारंगी दाडम द्राख, ख रबूजा तरबूज जंजेरी पाकी साख ॥ करुणा कवला केला नीब फनस सफार, गुरुचरणे फल ढोई फल पामे श्रीकार ॥ २ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं श्रीजिन कुशल सूरि गुरुं चरणकमलेभ्यः, फलं निर्वपामि ते स्वाहा ॥

॥ अथ अर्घ पूजा ॥ दोहा ॥

॥ अथ कलश दोहा ॥ इमजिनकुशलसूरिंदने, पूजे अष्ट प्रकार ॥ तसु घर नवनिधि संपजे । पुत्रादिक परिवार ॥ १ ॥ भट्टारक खरतर गछे, श्रीजिन लाभसुरिंद ॥ रत्नराजमुनी भमरपर, सेवे पद अरविंद ॥२॥ तासु चरण रजकणसमो, ग्यान सार बुद्धिमंद॥ श्रीसदगुरु पूजा रची, सोधो कविजनवृंद ॥३॥इति॥

॥ अथ सद्गुरूणां आरती लिख्यते ॥

॥ पेहली आरती दादाजीकी कीजे, दुख दोहग सब दूर हूरीजे । जयजय सदगुरु आरती कीजे ॥ श्री जिन.कुशल सूरि समरिजे ॥ जय० ॥ १ ॥ बीजी बीज पडंति धारा, भयवारण तूंही सुखकारी ॥ जय०

॥ २ ॥ तीजी परचा पूरक तेरी, दूर हरो सब दुर्मति मेरी ॥ जय० ॥ ३ ॥ चौथी मुगलपुत्र जियदायक, सुरवर हुकम धरे ज्युं पायक ॥ जय० ॥४॥ पांचमी पांच नदी जिणें तारी, संघ सकलनी संकट वारी ॥ जय०॥ ५ ॥ छठी थांभो वज्र विदारी, विद्या पोथी परगटकारी ॥ जय० ॥ ६ ॥ सातमी चौसठ जोगण साधी, सूरिमंत्र सुरने आराधी ॥ जय० ॥७॥ इणविध सात आरती कीजे, मनवंछित संपति फल लीजे ॥ जय० ॥ ८ ॥ जैन लाभ खरतर गणधारी, सदगुरु चरणकमलबलिहारी ॥ जय० ॥ ९ ॥ इति ॥

॥ अथ दादाजीनी अष्टप्रकारी पूजा ॥

॥ तत्र प्रथमं जलपूजा ॥

॥ सुरनदीजलनिर्मलधारया, प्रबलदुष्कृतदाघनिवारया ॥ सकलमंगलवांछितदायकं कुशलसूरिगुरोश्चरणं यजे ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं श्रीजिनकुशलसूरिचरणकमलेभ्यो जलं निर्वपामि ते स्वाहा ॥ इति॥

॥ अथ द्वितीया चंदन पूजा ॥

॥ मलयचंदनकेसरवारिणा निखिलजाड्यरुजातपहारिणा ॥ सकल मं० ॥ २ ॥ ॐह्रींश्रीं श्रीजिनकुशलसूरिगुरुचरणकमलेभ्यः चंदनं निर्वपामि० ॥ इति ॥

॥ अथ तृतीया पुष्पपूजा ॥

॥ कमलकेतकिचंपकपुष्पकैः, परिमलाहृतषट्पदवृंदकैः ॥ सकल०॥ ३ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं श्रीजिनकुशलसूरिगुरुचरणकमलेभ्यः पुष्पं निर्वपामि ते स्वाहा ॥३॥

॥ अथ चतुर्थी अक्षतपूजा ॥

॥ सकलतंडुलकैरतिनिर्मलैः, प्रकरमौक्तिकपुंजबहूज्ज्वलैः ॥ सकल मं० ॥ ४ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं जिनकुशलसूरिचरणकमलेभ्यः अक्षतान् निर्वपामि ते स्वाहा ॥ ४ ॥

॥ अथ पंचमी नैवेद्यपूजा ॥

बहुविधैश्चरुनिर्वटकादिकैः, प्रचुरमोदकपुंजसुखप्रदैः ॥ सकल मं०॥५॥ ॐ ह्रीं श्रीं श्रीजिनकुशल० नै० नि०॥५॥

॥ अथ षष्ठी दीपपूजा ॥

॥ अतिसुदीप्तमयैः खलु दीपकै, र्विमलकांचनभाजनसंस्थितैः ॥ सकल मं०॥ ६॥ ॐ ह्रीं श्रीं श्रीजिनकुशल० दीपं निर्वपामि ते स्वाहा ॥ इति ॥ ६ ॥

॥ अथ सप्तमी धूपपूजा ॥

॥ अगरुचंदनधूपदशांगजैः, प्रविततारिवलदिक्कु सुधूमकैः ॥ सकल मं० ॥ ७ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं श्रीजिनकुशल० धूपं निर्वपामि ते स्वाहा.॥ ७ ॥

.॥ अथाष्टमी फलपूजा ॥

•॥ पनसमोचसदाफलकर्कटैः, सुसुखदैः किल श्री फलचिर्भटैः ॥ सकल०॥८॥ ॐ ह्रीं श्रीं श्रीजिन० ॥

॥ अथार्घपूजा ॥

॥ जलसुगंधप्रसूनसुतंदुलैः, चरुप्रदीपकधूपफलादिभिः ॥ सकल मं०॥९॥ ॐ ह्रीं श्रीं श्रीजिनकुशल० अर्घं नि० ॥ ९ ॥ इति जिनकुशलसूरिपूजाष्टकम् ॥

॥ अथ चक्केसरीकी आरती ॥

॥ जय जय जिनपदसेवनकारक, जय जय जग दंबे ॥ ए. आंकणी ॥ अहनिशि तुझ पद समरन का रन, दिल बिच ध्यान धरे । जय० ॥ १ ॥ नविज नवंछितपूरन सुरतरु, चक्केसरि अंबे ॥ जय० ॥ २ ॥ वसुभुजशोभित कनक छबी तनु, सेवित सुरवृंदे ॥ ज य० ॥ ३ ॥ पंचानन तिम खगपति वाहन, आयुध हस्त धरे ॥ ज० ॥ ४ ॥ ऋद्धि वृद्धि नित प्रति सेव क आपे, आनंद संघ घरे ॥ जय० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ अथ यक्षराजाकी आरती ॥

॥ जय जय ऋषभपदांबुजसेवक, जय जय जख राया, नविजनसुखदाया ॥ ज० ॥ कामगवी जिम वं छितदायक, कंचनवरणसुहाया ॥ जय० ॥ १ ॥ संक

ट विकट निवारण कारण, वरकुंज चढि आया ॥ जय० ॥ २ ॥ उदधिभुजें करि शोभित तनु छवि, गुणनिधि गोमुखसुरराया ॥ जय० ॥ ३ ॥ आरत हर वा करत आरती, श्रीसंघ चित्त हुलसाया ॥ ज०॥४॥

॥ अथ आरती संध्याकी ॥

॥ ऋषभ अजित संभव अभिनंदन सुमति पदम श्रीसुपासकी, जय महाराजकी दीन दयालकी आरति कीजें ॥ चंद सुविधि शीतल श्रेयांसा, वासुपूज्य जिनराजकी ॥ जय० ॥ १ ॥ विमल अनंत धर्म हितकारी, शांतिनाथ सुखकारकी ॥ जय० ॥ २ ॥ कुंथुनाथ अर मल्लि मुनिसुव्रत, नमि नमुं सोवन कायकी ॥ जय० ॥ ३ ॥ नेमिनाथ प्रभु पार्श्व चिंतामणि, वर्धमान भव पारकी ॥ जय० ॥ कंचन आरति बहु विध सज कर, लीजें अंग उछाहकी ॥ जय० ॥ ५ ॥ सकल संघ मिल आरति करत है, आवागमन निवारकी ॥ जय० ॥ ६ ॥ इति ॥

॥ अथ श्रीजिनपूजापद्धतिः ॥

॥ प्रथम श्रीमज्जिनपूजा करनेंवाला अछे स्थानमें स्नान कर चोटीके केश बांधकें शुद्ध वस्त्र पहिरकें उत्तरासंग कर मुखकोश बांधे, पीछें इन मंत्रोंसें वास

क्षेप तीन तीन वार मंत्रि के अष्टद्रव्यकों शुद्ध करे. सो ही आचारदिनकरसें लिखते हैं ॥

॥ ॐ त्रसरूपोहं संसारि जीवः सुवासन समेध एक चित्तो निरवद्यार्हत्पूजने निर्वृतो निष्पापो भूयासं निरुपद्रवो भूयासं. मत्संश्रिता अन्येऽपि जीवा निर वद्यार्हत्पूजने निर्व्यथा निष्पापा भूयासुः स्वाहा ॥

॥ यह मंत्र पढ के अपने ललाटमें तिलक करे ॥

॥ अथ जलमंत्रः ॥

॥ ॐ आपो अप्काया एकेंद्रिया जीवा निरवद्या र्हत्पूजायां निर्व्यथा निष्पापाः शुभगतयः संतु नमेऽस्तु संघट्टनहिंसापापमर्हदर्चने स्वाहा ॥

॥ चंदनपुष्पधूपफलाक्षतशुद्धिमंत्रः ॥

॥ ॐ वनस्पतयो वनस्पतिकाया जीवा एकेंद्रिया निरवद्यार्हत्पूजायां निर्व्यथा निरपायाः शुभगतयः संतु न मेऽस्तु संघट्टनहिंसापापमर्हदर्चने स्वाहा ॥

॥ अग्नि और दीपक शुद्धिका मंत्र ॥

॥ ॐ अग्नयो अग्निकाया जीवा एकेंद्रिया निरव द्यार्हत्पूजयां निर्व्यथाः संतु निरपायाः संतु शुभगत यः संतु न मेऽस्तु संघट्टनहिंसापापमर्हदर्चने स्वाहा ॥